RNI नं. : 7387/63
वर्ष : 62 अंक : 22
मुद्रण तिथि : 27-28 फरवरी 2025
मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 80
डाक प्रेषण तिथि : 27 फरवरी 2025-01 मार्च 2025
डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2024-26
ISSN : 2456-611X
Office Posted at R.M.S., Bikaner

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

समाचार

पाक्षिक

नोखा बना अनोखा

7, 8, 9 फरवरी

संघ शिखर सदस्य

श्री शांतिलाल जी सांड
बेंगलुरु
MID No. : 189067

श्री विमल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127238

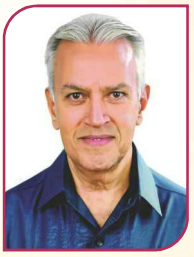

श्री रिद्धकरण जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 111161

श्री जयचंदलाल जी डागा
बीकानेर
MID No. : 108244

श्री सोमप्रकाश जी नाहटा
सूरत
MID No. : 126222

श्रीमती मंजू जी शाह (बोहरा)
पिपलिया कलां
MID No. : 128972

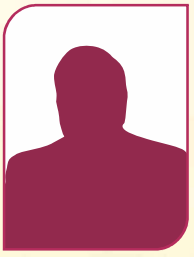

स्व. श्री मूलचंद जी डागा
बीकानेर
MID No. : 187427

समता मनीषी
स्व. श्री उमरावमल जी बम्ब, टोंक
MID No. : 121469

स्व. श्री विजयचंद जी डागा
बीकानेर
MID No. : 120472

श्री माणकचंद जी नाहर
उदयपुर
MID No. : 107109

श्रीमती कुमुद विमल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127237

श्री दिनेश जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 111134

श्री पंकजराज जी शाह (बोहरा)
पिपलिया कलां
MID No. : 128966

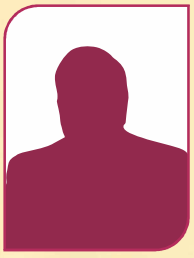

गुप्त
छत्तीसगढ़
MID No. : 197441

श्री सुरेश जी दक
मैसूर
MID No. : 129730

संघ महाप्रभावक सदस्य

श्री उत्तमचंद जी रांका
जयपुर
MID No. : 111353

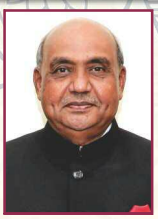

श्री सोहनलाल जी पोखरना
चित्तौड़गढ़
MID No. : 135732

श्री अनिल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127002

श्री जयचंदलाल जी मरोटी
देशनोक/कोलकाता
MID No. : 114715

स्व. श्री शांतिलाल जी बच्छावत
सूरत
MID No. : 194606

श्री राजमल जी पंवार
कानवन
MID No. : 113094

श्रीमती संतोष देवी मोदी
भिलाई
MID No. : 135692

श्री कमल जी बैद
मुंबई
MID No. : 141022

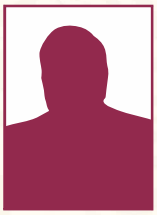

श्री विजय जी (कमला देवी)
गोलछा, बीकानेर
MID No. : 127729

श्रीमती कमला उत्तम जी
कोठारी, बेंगलुरु
MID No. : 112429

श्रीमती मनोरमा देवी बैद
रायपुर
MID No. : 138223

श्रीमती कुसुम जी टंच
बदनावर
MID No. : 160383

श्री बसंतलाल जी कटारिया
रायपुर
MID No. : 137280

श्री बसंती देवी पींचा
नोखा/गुवाहाटी
MID No. : 151607

चतुर्थ चरण

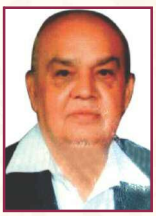

श्री प्रकाश जी कांकरिया
इंदौर
MID No. : 194512

स्व. श्रीमती सरोज देवी
सुराणा, बेरला
MID No. : 195647

श्रीमती गुलाब देवी भंसाली
कोलकाता
MID No. : 129491

श्री सोहनलाल जी रांका
ब्यावर
MID No. : 138078

श्रीमती मधुलता जी लोढ़ा
डोंगरगाँव
MID No. : 143002

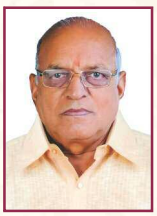

स्व. श्री बापूलाल जी कोठारी
उदयपुर
MID No. : 112429

कार्यसमिति (10 जनवरी 2016) के अनुसार

तृतीय चरण * श्री अनिल कुमार जी गोलछा-सिलचर * श्री प्रकाशचंद जी कोठारी-अमरावती * श्रीमती कमला देवी संचेती-देशनोक/दिल्ली * श्री सुंदरलाल जी बोथरा-मुंबई * श्री गोपालचंद जी खिंवसरा-बेंगलुरु * श्री दिलीप जी पगारिया-जावरा * श्री प्रेमचंद जी व्होरा-बदनावर * श्री दिलीप जी ओस्तवाल-कलंगपुर * श्रीमती ज्ञान कँवर जी ओस्तवाल-ब्यावर * श्री प्रकाशचंद जी श्रीश्रीमाल-हैदराबाद * श्री निर्मल जी खिंवसरा-ब्यावर * श्री भीखमचंद जी ओस्तवाल-कलंगपुर * श्री कँवरलाल जी देशलहरा-गुंडरदेही * श्री अखराज जी ओस्तवाल-भिलाई * श्रीमती सुंदर बाई कोटड़िया-कोंडागाँव * श्री महेंद्र जी सोनावत-भीनासर * श्री झंवरलाल जी कुम्मट-सिलचर * गुप्तदान- भीलवाड़ा

द्वितीय चरण * श्री तेज कुमार जी तातेड़ - इंदौर * श्री बसंतीलाल जी चंडालिया-चित्तौड़गढ़ * श्रीमती इंद्रा बाई धाड़ीवाल-रायपुर * श्रीमती सुनीता जी मेहता-बेलगाँव * श्री राजकुमार जी बाफना-हरदा * श्री विजय कुमार जी मुणोत-हैदराबाद * श्री चेतन कुमार जी हिंगड़-ब्यावर * श्री अभय कुमार जी भंडारी-जावरा * श्री निहालचंद जी कोठारी-ब्यावर * श्री प्रकाशचंद्र जी चपलोत-निम्बाहेड़ा * श्रीमती कमला कँवर जी कोठारी-चेन्नई * श्रीमती इंद्रा बाई गुणधर-संबलपुर * श्री उदयराज जी पारख - रायपुर * श्री प्रेमचंद जी कोठारी - चेन्नई * श्री पीयूष जी बैद-कोलकाता * श्री विमलचंद जी सुराणा-गीदम * श्री अरुण जी मालू-कोलकाता * श्री विनोद जी मिन्नी-कोलकाता

प्रथम चरण * स्व. श्रीमती सूरजा देवी बरड़िया-सिलचर * श्री मनोज कुमार जी संचेती-बेलगाँव * श्री मुन्नालाल जी पँवार-कानवन * श्री भागचंद जी सिंघी-जोधपुर * श्री सुधीर जी जैन-पिपलिया मंडी * श्रीमती सुधा जी भंसाली-कोलकाता * गुप्त-बंगईगाँव * श्री अमरचंद जी बैद-नोखा * श्री जीवनलाल जी गोखरू-कानवन * श्री सुगनचंद जी धोका-चेन्नई * श्रीमती राजरानी जी रजत जी मूथा-जयपुर * श्री किरणचंद जी गुलगुलिया-चिकमगलूर * श्रीमती गुलाब देवी बोथरा-पंचकुला * श्री लीला देवी बंब-चेन्नई * श्री पूनमचंद जी सुराणा-सूरतगढ़ * श्रीमती जमना देवी लुणावत-नोखागाँव * श्री पदम जी बाँठिया-चेन्नई * श्री संजय जी मालू-कोलकाता * श्री कांतिलाल जी छाजेड़-रतलाम * श्री जयंतीलाल जी गाँधी-अंकलेश्वर * श्री प्रकाश जी गाँधी-अंकलेश्वर * श्री गौतम जी गाँधी-अंकलेश्वर * श्री भागीचंद जी डागा-कोलकाता * श्री अजीत जी कांकरिया-सूरत * श्री राजेश जी बच्छावत-बीरगंज (नेपाल) * श्री अमरचंद जी बागरेचा-साजा * श्रीमती मंजू देवी कटारिया-रतलाम

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

राष्ट्रीय अध्यक्ष (सत्र 2025-2027) मनोनयन हेतु सूचना

हमारे गौरवशाली संघ के वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नरेन्द्र जी गांधी का कार्यकाल आसोज सुदी 2, दिनांक 23 सितंबर, 2025 को पूर्ण होने जा रहा है। अतः आगामी सत्र 2025-2027 हेतु इस पद के लिए संघ समर्पित, सेवा भावना से ओत-प्रोत सुश्रावक, जो श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के व्यसनमुक्त सदस्य हों, उनके नामांकन आमंत्रित किए जा रहे हैं। इस पद के लिए आप अपना अथवा अन्य किसी सुज्ञ संघ सदस्य का नाम प्रस्तावित कर सकते हैं। कृपया अपना प्रस्ताव दिनांक 31 मार्च, 2025 से पूर्व निम्न पते पर भिजवाने का कष्ट करें –

राजकुमार नाहर

प्रमुख – नियामक परिषद्

103-104, जनकपुरी प्रथम, इमलीवाला फाटक, जयपुर-302005 (राज.)

Mo.: 9928074897 (WhatsApp), Email : rknahar27@gmail.com

-राष्ट्रीय महामंत्री, श्री अ.भा.सा. जैन संघ

अहो मेरे भगवन् स्वर्णिम हो गया मन

परमागम रहस्यज्ञाता, परम श्रद्धेय **आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.** के 50वें दीक्षा दिवस को समर्पित **'महत्तम महोत्सव'** के अंतर्गत विभिन्न आयोजनों का क्रम लगभग 31 माह से चल रहा है। महत्तम शिखर महोत्सव समिति की बैठक में दिनांक 7-8-9 फरवरी 2025 को नोखा में भव्य आयोजन निश्चित होने के साथ-साथ एक टैगलाइन रखी गई - **'चलो नोखा'**।

ऐसा शायद ही कोई संघ सदस्य होगा, जो इस टैगलाइन रूपी आह्वान से भली-भाँति परिचित नहीं हो। महत्तम शिखर के इस महोत्सव के आह्वान को गुरुभक्तों द्वारा अपनी श्रद्धा और समर्पणा के आदेश रूप में लिया गया, जहाँ अन्य कोई विकल्प नहीं था।

7-8-9 फरवरी को नोखा की भट्टड़ स्कूल, जैन जवाहर भवन, मालू चौक का अद्भुत दृश्य तो देखते ही बनता था। इस महोत्सव का वैभव, गुरुभक्तों का उल्लास व समर्पण, कार्यकर्ताओं का जोश यह स्पष्ट करने को काफी था -

'ऐसा अवसर मिला है, मिलेगा कहाँ'

मन की तृप्ति और आँखों के सुकून का सर्वश्रेष्ठ जीवंत उदाहरण रहा यह महोत्सव, जिसके साक्षी हजारों गुरुभक्त, जैन-जैनेतर महानुभाव बने। सैकड़ों की संख्या में गुरुभक्त आचार्यश्री जी को उनके 50वें दीक्षा दिवस की शुभकामनाएँ देने हेतु देश-विदेश से गुरुचरणों में उपस्थित हुए। एकता, श्रद्धा और समर्पणा का ऐसा अनोखा संगम था, जिसमें हर कोई अध्यात्म भाव की डुबकी लगा रहा था। एक तरफ कार्यकर्ताओं का हुजूम था, जो आने वाले हर व्यक्ति को पर्याप्त सुविधाएँ प्रदान करवा रहे रहे थे, तो दूसरी ओर देश-विदेश से आगत सैकड़ों गुरुभक्तों का कारवाँ था, जिनके कदम दीक्षा महोत्सव, प्रवचन श्रवण, गुणगान आदि हेतु भट्टड़ स्कूल की ओर विशेष स्फूर्ति के साथ गतिमान थे। छोटे-छोटे बालक-बालिकाएँ भी इस स्वर्णिम अवसर में अपना नाम लिखवाने में कहाँ पीछे थे! हाथ में **'अभिरामम् रत्नम्'** की पुस्तक और कंधे पर बैग लिए हुए हर किसी कोने में ये बालक-बालिकाएँ परीक्षा की तैयारी में जुटे नजर आ रहे थे। इनका भोला-भाला व्यक्तित्व मानो कह रहा हो कि परिणाम तो एक औपचारिकता मात्र है, हम तो पहले से ही **'अभिरामम् रत्नम्'** हैं। इन नन्हें-मुन्नों पर आचार्य भगवन् की विशेष कृपादृष्टि एवं आशीर्वाद दोनों हैं। भूख-प्यास को भूलकर प्रत्येक बच्चे ने दिनभर परीक्षा का हर राउंड उत्साह से पार किया।

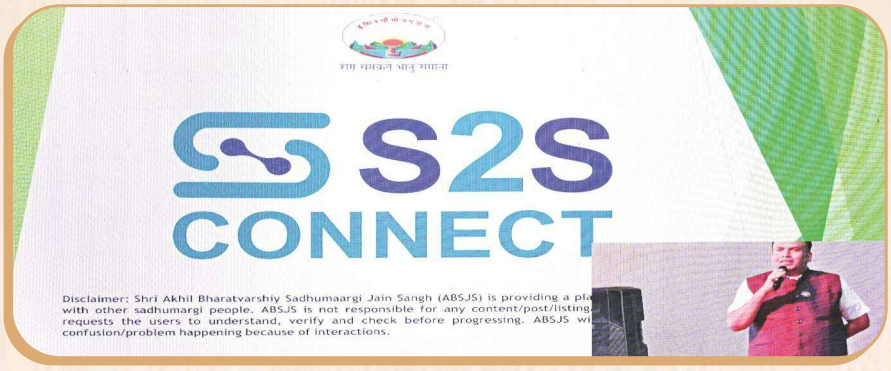

महत्तम महोत्सव टीम, जो पिछले लगभग 31 महीनों से इस महोत्सव को अद्भुत, अविस्मरणीय बनाने के लिए सतत कार्यशील थी। इस टीम ने इस शिखर महोत्सव में चार चाँद लगाने हेतु पंक्तिबद्ध अनेक कार्यक्रम आयोजित किए, जिनके प्रमुख आकर्षण थे - **S2S Connect (साधुमार्गी टू साधुमार्गी) ऐप की लॉन्चिंग**, **'अभिरामम्'** पुस्तक पर आधारित **प्रतियोगिताओं के पुरस्कारों की घोषणा**, **पाठशाला** के बच्चों द्वारा प्रस्तुति, **नयनाभिराम इमर्सिव गैलेरी**, मॉडल्स द्वारा विभिन्न प्रवृत्तियों की विकास यात्रा, महत्तम महोत्सव के नौ प्रकल्पों की विकास यात्रा, इत्यादि।

माहौल ऐसा कि हर कोई चाहता था कि ये तीन दिन का समय थम जाए। 7 फरवरी के अलौकिक पंडाल का वो अद्भुत दृश्य, जहाँ 7 के स्थान पर 9 मुमुक्षुओं ने जैन भागवती दीक्षा ग्रहण कर आत्मरमण हेतु अपनी संयम यात्रा का शुभारंभ किया। धन्य है ऐसा संघ और धन्य हैं हमारे महापुरुष, जिनके अद्भुत अतिशय से हजारों गुरुभक्तों की जनमेदिनी को ऐसा नयनाभिराम, आत्मतृप्त कर देने वाला, भक्ति से सराबोर दृश्य देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सभी 9 मुमुक्षु भाई-बहन जब धवल वस्त्र धारण कर तेज कदमों से भट्टड़ स्कूल की ओर बढ़ रहे थे तो ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो मरुधरा भी अपने सौभाग्य पर नाज कर रही हो। सभा में उपस्थित जनमानस से स्वीकृति पश्चात् गुरु भगवंतों ने जैसे ही जैन भागवती दीक्षा विधि प्रारंभ की, तो सभा में उपस्थित हर एक मन दीक्षार्थियों एवं उनके परिजनों के त्याग व समर्पण को नतमस्तक हो गया और सभा **'जयवंता-जयवंता, आज हमारो मन जयवंता'** से गूँज उठी।

ऐसे माहौल में गुरुभक्ति, श्रद्धा रूपी सागर में हिलोरे न खाए, यह तो असंभव है। जन-जन को भक्ति से

आप्लावित करने हेतु **'थव-थुई-मंगलं'** कार्यक्रम में भक्ति संगीत की सुप्रसिद्ध गायिका **अल्का जी डागा** ने अपनी

कंठ कोकिला से वातावरण को राममय बना दिया। इस कार्यक्रम में बिना किसी साज-संगीत के गुरुभक्तों को बाँधे रखना अपने आप में किसी चैलेंज से कम नहीं था, लेकिन अल्का जी की आवाज एवं उनके द्वारा तैयार की गई 21 सदस्यीय कोरस टीम की तारतम्यता ने यह साबित कर दिया कि भक्ति किसी साज या संगीत की मोहताज नहीं है। इसके लिए तो सिर्फ और सिर्फ मन में गुरुवर का आह्लाद भरा होना चाहिए। इस कार्यक्रम में उपस्थित प्रत्येक जन के हाथ में **'थव-थुई-मंगलं'** की पुस्तक थी, जिससे सभी जन श्रोता के साथ-साथ गायक भी बने रहे। पूरी सभा ने जिस प्रकार अल्का जी की मधुर आवाज का साथ दिया वह नजारा अकल्पनीय था।

आचार्य श्री रामेश के सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव जैसा अन्य कोई सुयोग हमें अपने जीवन में पुन: शायद ही देखने का मौका मिले। वे तीन दिवस, उनका एक-एक क्षण, कार्यक्रम हेतु सेवा देने को स्थान-स्थान पर उपस्थित कार्यकर्ता, हजारों की जनमेदिनी भीतर ही भीतर एक उत्साह लिए प्रत्येक कार्यक्रम में अपनी भूमिका सुनिश्चित करना चाह रही थी। सभी गुरुभक्तों ने गुरुचरणों में आयोजित इन कार्यक्रमों से अनंत ऊर्जा का संचय स्वयं में किया।

इन्हीं कार्यक्रमों की शृंखला में एक अतिविशिष्ट कार्यक्रम हुआ, जिसने भक्तों में गुरुभक्ति से भरपूर ऊर्जा का प्रेषण किया। इस कार्यक्रम को नाम दिया गया था **'महत्तम अहोभाव'**। कार्यक्रम में ऊर्जावान, युवा, सुप्रसिद्ध मोटिवेशनल स्पीकर **राहुल जी कपूर (जैन)**, बेंगलुरु ने अपनी भूमिका का पूर्ण निर्वहन करते हुए सभी को गुरुभक्तों में आकंठ समाहित कर दिया। राहुल जी जैन द्वारा इस कार्यक्रम में उपस्थित लगभग 7 हजार गुरुभक्त भाई-बहनों को **'अहोभाव रूप गुरु की महत्ता'** का जो विश्लेषण किया गया, वह अपने आप में उत्कृष्ट उद्बोधन था।

7-8 फरवरी के विभिन्न आयोजन में क्रमबद्ध भाग लेने के पश्चात् भी लोगों का उत्साह एक सरीखा बना रहा। बल्कि मैं तो यह कहूँगी कि वह उत्साह दिन-ब-दिन अभिवृद्धित हो रहा था। 9 फरवरी की भोर कुछ अलग ही प्रतीत हो रही थी, क्योंकि आज ही वो दिवस था, जिसके लिए 31 माह तक लोग विभिन्न आयोजनों की दीर्घ यात्रा कर रहे

थे। नोखा में काफी कुछ अनोखा हो चुका था, परंतु इस दिवस का भाव अंतर्मन में कुछ विशेष था। आचार्य प्रवर द्वारा दिया गया **'समता शाखा'** आयाम प्रात: 8:30 बजे भट्टड़ स्कूल मैदान में प्रारंभ हुआ। इससे पूर्व प्रात: 8 बजे से ही जैसे आगे बैठने की होड़ लग गई। एक के बाद एक हजारों कदम तेजगति से भट्टड़ स्कूल की ओर बढ़ रहे थे। अपार जनमेदिनी केसरिया एवं सामायिक वेशभूषा में यथास्थान पंक्तिबद्ध बैठते नजर आ रहे थे।

समता शाखा के पश्चात् प्रवचन का क्रम प्रारंभ हुआ। चूँकि आज गुरुवर का स्वर्णिम दीक्षा दिवस था तो चारित्रात्माओं द्वारा अपने अनुशास्ता का गुणगान करना स्वाभाविक के साथ-साथ अवश्यंभावी था और यह उनका अधिकार भी था। ऐसे असाधारण गुरुवर जो प्रशंसा एवं गुणगान की मोहलिप्सा से कोसों दूर अपनी संयम यात्रा में अनवरत गतिमान हैं। उनके प्रति अहोभाव व्यक्त करना, वो भी उन्हीं के समक्ष; यह लिखते-लिखते ही मैं भावातिरेक हो रही हूँ तो जरा चिंतन करें कि उन चारित्रात्माओं के कितने उच्च आत्मभाव होंगे, जिनके रोम-रोम से केवल और केवल **'राम राम जय गुरुवर राम'** ही उच्चारित होता है, जो उनको रोमांच से भर देता है।

अत्यंत सरलता का परिचय देते हुए सर्वप्रथम आचार्यश्री की संसारपक्षीय बहन श्रीमती कमला बाई भूरा को अपने भाव रखने का अवसर प्रदान किया गया। सभा में बैठा प्रत्येक व्यक्ति आँखों में अश्रुधारा लिए एक बहन का अहोभाव श्रवण कर रहा था। तत्पश्चात् सभी साध्वीवर्याओं द्वारा गुणगान का क्रम प्रारंभ हुआ और उसके पश्चात् संतवृंद ने इस क्रम को आगे बढ़ाया। सभी ने अपनी संक्षिप्त भावाभिव्यक्ति में गागर में सागर भरने का कार्य किया।

उपाध्याय प्रवर एवं आचार्यश्री जी की अमृतवाणी से सभा औपचारिक रूप से समाप्ति की ओर थी और अंत में कई आज्ञा-पत्रों व प्रत्याख्यानों के साथ सभा संपन्न हुई।

संपूर्ण सभा लगभग 3:30 घंटे चली, जिसमें हमारे आराध्यदेव पूर्ण धैर्य के साथ बिना हिले-डुले समभाव से विराजमान थे। उनका शांत आभामंडल एवं दिव्य चमकता भाल सभी के मन में एक ही उद्घोष भर रहा था -

'बच्चा-बच्चा जहान का, भक्त है गुरु राम का।'

'जय-जयकार, जय-जयकार, राम गुरु की जय-जयकार।'

मन भावों से भरा है और लेखनी को विराम देना असंभव-सा प्रतीत हो रहा है। बार-बार रामध्वनि का नाद करते-करते स्वयं को धन्य-धन्य कह रहा है। हम सभी इस अपूर्व अवसर के साक्षी बने, जो तप-त्याग, भक्ति, ज्ञान-ध्यान, श्रद्धा-समर्पणा से ओत-प्रोत था। यह हमारा सौभाग्य था। इस अपूर्व अवसर से प्रेरणा लेकर स्वयं को आत्मकल्याण हेतु अग्रसर करें तो निश्चित ही गुरुवर को एक छोटी-सी ही सही अनुपम भेंट दे पाएँगे।

- मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

मुमुक्षु श्री राजेंद्र जी मुणत

संक्षिप्त परिचय

मूल निवासी	:	रतलाम (म.प्र.)
जन्म तिथि	:	28 सितंबर 1961
वैराग्यकाल	:	लगभग 8 वर्ष
व्यावहारिक शिक्षा	:	बी.कॉम.
धार्मिक अध्ययन	:	प्रतिक्रमण, पुच्छिंसु णं, सुखविपाक, श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र के 4 अध्ययन, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र के लगभग 15 अध्ययन, उववाई सूत्र, भक्तामर स्तोत्रम्, कल्याणमंदिर स्तोत्रम्, जैन सिद्धांत बत्तीसी, 61 बोल, जीवधड़ा, महादंडक, लघुदंडक, गति-आगति, गुणस्थान, श्रीमत् प्रज्ञापना सूत्र एवं श्रीमद् भगवती सूत्र तथा अन्य कुछ थोकड़े
धार्मिक शिक्षा	:	मोक्षार्थी शिविर
स्वाध्यायी सेवा	:	15 वर्ष
तपाराधना	:	3 वर्षीतप, 3 मासखमण, अठाई, केशलोच (लगभग 8 वर्षों से), कई तेले एवं अन्य तपस्याएँ
पदयात्रा	:	50 किमी.
दीक्षा प्रसंग	:	7 फरवरी 2025, नोखा मंडी (राज.)

पारिवारिक परिचय

दादाजी-दादीजी	:	स्व. श्री धनराज जी-स्व. श्रीमती झमकू बाई मुणत
पिताजी-माताजी	:	स्व. श्री अमृतलाल जी-स्व. श्रीमती संपत बाई मुणत
ससुरजी-सासुजी	:	स्व. श्री ठाकुरलाल जी-तारा बाई चौधरी
धर्मसहायिका	:	चंदा जी मुणत
पुत्र-पुत्रवधू	:	नमन जी-अनुशा जी मुणत
पुत्री-दामाद	:	विजेता जी-सनिश जी जैन (धार)
भाई-भाभी	:	अभय कुमार जी-किरण देवी मुणत
बहन-बहनोई	:	प्रेमलता जी-पारस जी वया, इंद्रा जी-स्व. प्रेम कुमार जी मारू, स्व. श्रीमती कल्पना जी-स्व. श्री राकेश जी जैन
भतीजा-वधू	:	निखिल जी-अंजलि जी मुणत
भतीजी-दामाद	:	नेहा जी-अविनाश जी सखलेचा (सूरत)
पौत्रियाँ	:	हनाया, ईरा, अव्या
दोहिता, दोहितियाँ	:	समीक्षा, सानवी, हियांश
मामाजी	:	सुजानमल जी मेहता (दिवेल वाला परिवार)

संक्षिप्त परिचय

मुमुक्षु श्री विनीत जी चोरड़िया

मूल निवासी	:	चांगोंटोला (बालाघाट, म.प्र.)
जन्म तिथि	:	4 अगस्त 2002
वैराग्यकाल	:	लगभग 6 माह
व्यावहारिक शिक्षा	:	बी.कॉम.
धार्मिक अध्ययन	:	श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र के 4 अध्ययन, पुच्छिंसु णं, उववाई सूत्र, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र के 1, 10 एवं 11वाँ अध्ययन, जैन सिद्धांत बत्तीसी, लघुदंडक, गति-आगति, जीवधड़ा, 102 बोल का बासठिया, श्रीमत् प्रज्ञापना सूत्र के कुछ थोकड़े
धार्मिक शिक्षा	:	अभिमोक्षम्, मोक्षार्थी शिविर, उन्नयन शिविर-2, तत्व अवगाहन शिविर
पदयात्रा	:	लगभग 300 किमी.
दीक्षा प्रसंग	:	7 फरवरी 2025, नोखा मंडी (राज.)

पारिवारिक परिचय

दादाजी-दादीजी	:	स्व. श्री मांगीलाल जी-श्रीमती कमला बाई चोरड़िया
पिताजी-माताजी	:	दिलीप कुमार जी-कविता जी चोरड़िया
बड़े पिताजी-माताजी	:	प्रकाशचंद जी-चंदनबाला जी, रमेशचंद जी-सुंदरबाला जी, राजेंद्र कुमार जी-मंजूबाला जी, सुरेश कुमार जी-चंचल जी, सतीश कुमार जी-प्रतिभा जी चोरड़िया
भाई	:	रोहित जी चोरड़िया
भुआजी-फूफाजी	:	सरिता जी-दिलीप जी पींचा (दुर्ग), प्रमिला जी-सुनील जी भंसाली (रायपुर)
नानाजी-नानीजी	:	स्व. श्री किशनलाल जी-किरण देवी नाहटा (रायपुर)
मामाजी-मामीजी	:	महावीर जी-गीता जी, प्रवीण जी-रीमा जी नाहटा
मौसी जी-मौसा जी	:	रेखा जी-कमलेश जी देशलहरा (भिलाई)
परिवार से दीक्षित	:	स्मृतिशेष श्री इंदरचंद जी म.सा., श्री पद्म मुनि जी म.सा.

:: अनुक्रमणिका ::

रुक्मिणी विवाह..... 12
ज्ञान सार : श्रीमद् भगवतीसूत्र..... 15
श्रमणोपासक हेडलाइंस..... 17
गुरुचरण विहार समाचार..... 18
विविध समाचार..... 42
विविध भेंट मार्फत..... 53
विनम्र श्रद्धांजलि..... 60
श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति..... 64
श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ..... 67

सुविचार
संलेखना-संथारा (1)

शरीर कषाय कृश, करना संलेखना ये।
जीवन मरण शुद्धि, पद्धति बताई है।।
संथारा साधक वही, मौत को जो मीत माने।
जीने मरने की वांछा, सर्वथा मिटाई है।।
मृत्यु है अवश्यंभावी, आतमा कभी न मरे।
आतमा अमर इस बात में सच्चाई है।।
वीर कहे गौतम से, मृत्यु से न भय खाता।
वही नर निर्वाण की, राह अपनाई है।।

साभार – वीर कहे गौतम से

चिंतन

इशारों इशारों में

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

केवलज्ञान-सर्वज्ञता प्राप्ति का होश भरने वाला निर्मल मति एवं श्रुत ज्ञान की आराधना हेतु तत्पर न हो, मति-श्रुतज्ञान को भी शुद्ध, विशुद्ध रखने को तैयार न हो तो क्या वह केवलज्ञान का अधिकारी बन सकता है? मति-श्रुतज्ञान को मलिन बनाते हैं- राग-द्वेष एवं कषाय। यदि राग-द्वेष, कषाय का त्याग करने की तैयारी न हो तो केवलज्ञान की प्राप्ति कैसे हो पाएगी? केवलज्ञान पाने के लिए राग-द्वेष, अज्ञान, कषाय सबको छोड़ना पड़ता है। इनके रहते केवलज्ञान प्रकट हो ही नहीं सकता। यद्यपि केवलज्ञान आत्म-अधिगत ही है। तदपि वह प्रकट नहीं है क्योंकि उस पर आवरण बना हुआ है। उस आवरण को हटाने का कार्य व्यक्ति को ही करना होता है। प्रबल पुरुषार्थ जगने पर ही वह आवरण हट पाता है। सूर्य के सामने आया हुआ सघन आवरण जैसे तेज हवा से बिखर जाता है, वैसे ही आत्मा के केवलज्ञान पर आए सघन आवरण को सदाचार की तेज हवा से हटाया जा सकता है।

केवलज्ञान को प्राप्त कराने में गुरु का सान्निध्य अत्यंत महत्त्व रखता है। गुरु की पर्युपासना साधक को केवलज्ञान के निकट ले जाती है। गुरु की सेवा का अर्थ उनके समीप बैठ जाना ही नहीं है। अपितु उनकी पर्युपासना का अर्थ है कि गुरु के इंगित-आकारों को समझने लगे। गुरु मुँह से प्रेरणा दे, कोई जरूरी नहीं है। वे इशारे-इशारे में ही गहन तत्त्वबोध दे देते हैं। उन इशारों को समझने की क्षमता उनकी पर्युपासना से ही संभव हो पाती है। इसलिए गुरु की सेवा-पर्युपासना का महत्त्व बताया गया है। सर्जन जब सर्जरी कर रहा होता है, उस समय जो नर्सेज उसके कार्य में सहयोगी के रूप में रहती हैं, वे डॉक्टर के हाथ आदि एक्शन से ही जान लेती हैं कि डॉक्टर को कब, कौनसा औजार चाहिए। वैसे ही गुरु की उपासना से उनके इशारों को समझने में प्रवीण प्रज्ञ साधक सर्वज्ञता की दिशा में अग्रसर हो सकता है। आवृत्त अज्ञान कर्मों को धुनकर वह लोकालोक प्रकाशक केवलज्ञान को उपलब्ध हो जाता है।

फाल्गुन शुक्ल 13, सोमवार, 21.03.2016 **साभार- आरोह**

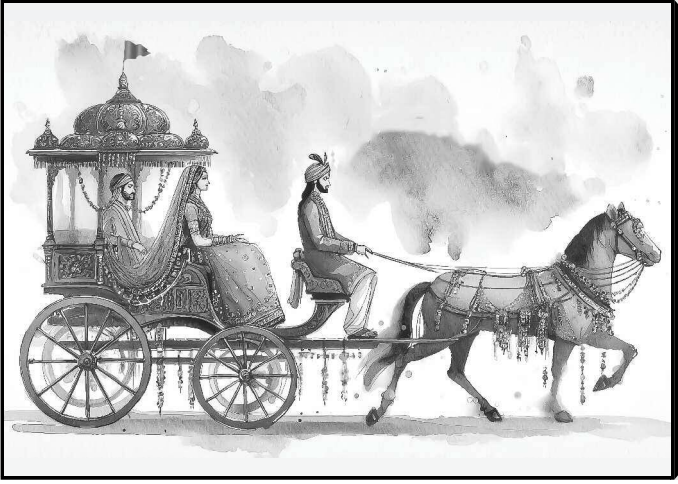

धर्मदेशना

रुक्मिणी विवाह पाणिग्रहण

29-30 जनवरी 2025 अंक से आगे...

–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

रुक्मिणी की बातें सुनकर श्रीकृष्ण विचारने लगे कि मैंने नारद द्वारा रुक्मिणी का चित्र देखा था। उसी से ही मैंने अनुमान लगा लिया था कि रुक्मिणी शरीर से जितनी सुंदरी है, उतनी ही हृदय से भी सुंदरी होगी। मेरा यह अनुमान बिलकुल सही निकला। इस प्रकार विचारते हुए श्रीकृष्ण रुक्मिणी से कहने लगे—''राजकुमारी! धैर्य धरो। मैं तुम्हारे हृदय का प्रेम देखने के लिए ही अंतर्ध्यान हुआ था। मैं जानना चाहता था कि रुक्मिणी का जैसा सौंदर्य है वैसा ही हृदय भी है या नहीं? एक स्त्रीरत्न में जो विशेषता होनी चाहिए वह रुक्मिणी में भी है या नहीं? तुम मेरी इस परीक्षा में उत्तीर्ण हुई। मेरे नहीं मिलने पर यदि तुम चाहती तो मेरे लिए कटु शब्दों का प्रयोग कर सकती थीं और कह सकती थीं कि मैंने तो इतने कष्ट सहे और वे यहाँ भी मुझे न मिले। हृदयहीन हैं, निष्ठुर हैं आदि। परंतु तुमने ऐसा न करके सच्चे प्रेम का परिचय दिया है। सच्चा प्रेमी अपने प्रेमास्पद के दोष तो देखता ही नहीं। उसकी दृष्टि तो प्रेमास्पद के गुणों पर ही रहती है। पतिव्रता स्त्री और ईश्वर भक्त में तो यह बात विशेष रूप से होती है। मैं तुम्हें पाकर प्रसन्न हुआ हूँ। तुमने मेरे लिए अनेक कष्ट सहे हैं। मैं तुम्हारे प्रेम और सहिष्णुता की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता।''

रुक्मिणी और कृष्ण परस्पर इसी प्रकार की बातें कर रहे थे। इतने में ही बलदेव जी आ गए। बलदेव जी को देखकर कृष्ण संकोच करके रुक्मिणी के पास से यह कहते हुए दूर हो गए कि बड़े भ्राता आ गए। बलदेव को देखकर रुक्मिणी भी लज्जापूर्वक एक ओर खड़ी हो गई। वह टेढ़ी दृष्टि से हलधर की ओर देखने लगी और ऐसे जेठ की अनुज वधू बनने का सौभाग्य प्राप्त करने के कारण अपने को धन्य मानने लगी। वह अपने मन में कहने लगी कि इन्हें धन्य है जो मेरी रक्षा के लिए अपने छोटे भाई के सहायक बनकर आए हैं।

बलदेव ने आते ही श्रीकृष्ण से कहा—''भैया! अब शीघ्र चलो, विलंब मत करो।'' बलदेव की बात सुनते ही श्रीकृष्ण ने रुक्मिणी का पाणिग्रहण करके उन्हें रथ में बिठाया और आप भी रथ में बैठ गए। रुक्मिणी और श्रीकृष्ण के बैठ जाने पर बलदेव ने रथ को उसी ओर चलाया जिस ओर से रुक्मिणी अपने साथ की स्त्रियों को छोड़कर बाग में आई थी।

कृष्ण के साथ रथ में बैठी हुई रुक्मिणी उसी प्रकार शोभा पाने लगी जिस प्रकार चंद्र के साथ रोहिणी और इंद्र के साथ इंद्राणी शोभा पाती है। उसका हृदय आनंद के मारे उछल रहा था। वह अपने को बड़ी सद्भागिनी मान रही थी।

रथ वहाँ आया, जहाँ रुक्मिणी के साथ की स्त्रियाँ खड़ी हुई थीं। रुक्मिणी को एक अपरिचित पुरुष के साथ रथ में बैठी देखकर बुआ के सिवाय सब स्त्रियाँ आश्चर्य करने लगीं। रुक्मिणी की सखियाँ रुक्मिणी से कहने लगीं—''सखी रुक्मिणी! तुम किस अपरिचित पुरुष के साथ बैठी हो और कहाँ जा रही हो? तुम्हारे लिए हम यहाँ खड़ी हैं। महल में माता तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही होंगी, विवाह की सब तैयारियाँ हो चुकी हैं और तुम हम सबको छोड़कर कहाँ जा रही हो?'' सखियों की बात सुनकर रुक्मिणी कहने लगी—''सखियो! मैं रथ में किसी दूसरे पुरुष के साथ नहीं बैठी हूँ, किंतु अपने प्रियतम के साथ ही बैठी हूँ और वहीं जा रही हूँ,

जहाँ ये ले जा रहे हैं। मेरे पति मुझे मिल गए हैं, इसलिए अब विवाह की तैयारी व्यर्थ है। तुम सब घर जाओ। यदि संभव हुआ तो फिर कभी अपना मिलन होगा। तुम माता से मेरा प्रणाम कहना और कहना कि रुक्मिणी की चिंता मत करो। वह तो जिन्हें चाहती थी और स्वयं को जिनको अर्पण कर चुकी थी, उनसे मिल गई। पिता से भी मेरा प्रणाम कहना और निवेदन करना कि रुक्मिणी को वही वर प्राप्त हुआ है, जिसके साथ आप रुक्मिणी का विवाह करना चाहते थे। भाई से भी मेरा प्रणाम कहने के साथ ही कह देना कि अपने मित्र शिशुपाल को समझाकर घर लौटा दो, जिससे उसकी अधिक हानि नहीं हो। सखियो! मैं तुम लोगों से विलग होती हूँ, इसके लिए मुझे क्षमा करना।''

रुक्मिणी को श्रीकृष्ण के रथ में बैठी देखकर रुक्मिणी की बुआ बहुत प्रसन्न हुई। उसने संकेत द्वारा रुक्मिणी से कुछ कहा और जब रथ आगे बढ़ गया, तब सब स्त्रियों के साथ वह भी नगर की ओर चली।

श्रीकृष्ण का रथ वहाँ पहुँचा जहाँ शिशुपाल के सैनिक खड़े हुए थे। रुक्मिणी को श्रीकृष्ण के साथ रथ में बैठी देखकर सैनिक आश्चर्य में पड़ गए। वे विचारने लगे कि यह पुरुष कहाँ से आ गया और राजकुमारी को कहाँ लिए जा रहा है? वे कर्तव्यविमूढ़ हो गए। वे इस बात का निश्चय नहीं कर सके कि हमें क्या करना चाहिए। अंत में कुछ सैनिक शिशुपाल को सूचित करने के लिए दौड़े।

रथ आगे चला। इतने में ही महर्षि नारद श्रीकृष्ण के रथ के सामने आ खड़े हुए। श्रीकृष्ण, रुक्मिणी और बलराम ने नारद को प्रणाम किया। नारद श्रीकृष्ण से कहने लगे—''वाह महाराज! आप तो बड़े ही चोर हैं। जान पड़ता है कि बचपन में खाने-पीने की चीजें चुराने की जो आदत थी, वही बढ़ गई है और अब आप राजकन्या की भी चोरी करने लगे हैं।'' नारद जी की बात सुनकर श्रीकृष्ण, रुक्मिणी और बलराम हँस पड़े। श्रीकृष्ण कहने लगे—''नारद जी! आप तो आग लगाकर पानी के लिए दौड़ने-सी बात कहते हैं। यह सब आपकी ही करतूत है और अब आप हमें ही चोर बना रहे हैं।''

नारद—''यह तो ठीक है, परंतु मैंने आपसे चोरी करने के लिए कब कहा था? हाँ, रुक्मिणी की रक्षा करने के लिए अवश्य कहा था। परंतु रक्षा तो वही कर सकता है, जो वीर और सामर्थ्यवान हो। यदि इसी का नाम रक्षा है तो इस प्रकार की रक्षा तो कायर और चोर भी कर सकते हैं।''

नारद जी की बात सुनकर श्रीकृष्ण ने विचार किया कि वास्तव में यदि मैं रुक्मिणी को लेकर चुपचाप चला गया तो मेरी गणना चोरों में होगी। इसलिए चुपचाप नहीं चलकर शिशुपाल और रुक्म को सूचित कर देना चाहिए, जिससे उनके मन की बात मन में ही न रह जाए और वे जो कुछ कर सकते हैं सो कर लें। इस प्रकार विचार कर श्रीकृष्ण ने नारद जी से कहा—''अच्छा, लो चोरों की भाँति नहीं ले जाएँगे।''

नारद जी से इस प्रकार कहकर श्रीकृष्ण ने अपना पाँचजन्य शंख उठाया और उसे जोर से बजाने लगे, जैसे कह रहे हों कि ''हे शिशुपाल और रुक्म! हम कृष्ण और बलदेव रुक्मिणी को लेकर जा रहे हैं। हम तुम्हें सूचित करते हैं, जिससे तुम यह न कह सको कि श्रीकृष्ण रुक्मिणी को चोरी से ले गए। यदि तुम दर्प रखते हो तो अपने सुभटों सहित शीघ्र आओ, हम यहाँ खड़े हैं।''

शिशुपाल की जो सेना वहाँ खड़ी थी, वह भी शंख की घोर ध्वनि से भयभीत होकर भाग गई। कुण्डिनपुर नगर भी शंख ध्वनि से काँप उठा। सब लोग भय और आश्चर्य के साथ विचार करने लगे और यह शंखनाद किसका है और क्यों किया गया है?

उधर बुआ और सब स्त्रियाँ महल को आईं। रुक्मिणी की सखियाँ हृदय से तो रुक्मिणी की आशा पूर्ण होने और उसे इच्छित वर मिलने से प्रसन्न थी, परंतु ऊपर से उदास होकर रुक्मिणी की माता के सामने गईं। रुक्मिणी की सखियों को उदास देखकर रुक्मिणी की माता ने उनसे पूछा कि तुम उदास क्यों हो? रुक्मिणी कहाँ है?

सखियाँ—''महारानी जी, राजकुमारी तो रथ में बैठकर चली गईं।''

शिखावती—''किसके रथ में?''

सखियाँ—''जिन्हें वे चाहती थीं और जिन्हें अपना पति बताती थी, उन्हीं श्रीकृष्ण के रथ में। राजकुमारी ने आपको प्रणाम कहकर आपसे निवेदन करने के लिए कहा है कि आप मेरी चिंता न करें। मुझे मेरे पति मिल गए और मैं

उन्हीं के साथ जा रही हूँ। मैं यहाँ यक्ष की पूजा करने नहीं आई थी, किंतु अपने पति की पूजा करने आई थी।''

शिखावती — ''तो क्या वह उस ग्वाले के साथ गई?''

सखियाँ — ''हाँ महारानी, द्वारिकाधीश श्रीकृष्ण के रथ में बैठकर गईं। राजकुमारी जिस पुरुष के साथ गई है, वैसा पुरुष आज तक हमारे देखने में भी नहीं आया था। राजकुमारी की अभिलाषा उच्च ही थी। हम तो उस पुरुष का रूप, उसके मुँह पर झलकने वाली गंभीरता और उसकी मधुर मुस्कान देखकर ठगी-सी रह गईं। उस पुरुष के मुख पर भय या अभिमान का तो चिह्न भी नहीं था।''

शिखावती — ''रुक्मिणी की रक्षा के लिए तो सेना भी गई थी, फिर कृष्ण वहाँ कैसे आ गया?''

सखियाँ — ''हाँ, सेना तो गई थी, फिर भी कृष्ण कहाँ से और कैसे आ गए यह हम नहीं जानतीं। हम सब बाग के बाहर खड़ी थीं और राजकुमारी अकेली ही यक्षराज की पूजा करने गई, परंतु जब वे लौटी तब श्रीकृष्ण के रथ में बैठी हुई थी। हमने उनसे कहा भी कि माता प्रतीक्षा करती होंगी, घर चलो, परंतु उन्होंने वही उत्तर दिया जो हम पहले ही आपसे निवेदन कर चुकी हैं। हाँ, वे यह और कह गई हैं कि बेचारे शिशुपाल को जैसे-तैसे समझाकर विदा कर देना, जिससे उसकी दुर्दशा नहीं हो।''

शिखावती — ''रुक्मिणी की बुआ कहाँ है?''

सखियाँ — ''वे अपने महल में गईं।''

शिखावती — ''जान पड़ता है कि यह उन्हीं के षड्यंत्र का परिणाम है। चलो, मैं उसके पास चलती हूँ।''

रुक्मिणी की सखियों के साथ शिखावती अपनी ननद के महल में आई। वह रुक्मिणी की बुआ से कहने लगी — ''आप यह क्या कर आईं?''

बुआ — ''जो उचित और न्याय है।''

शिखावती — ''मौर बाँधे चंदेरीराज तो यहाँ बैठे हैं और रुक्मिणी दूसरे पुरुष के साथ विशेषतः एक ग्वाले के साथ जाए, क्या यह उचित है?''

बुआ — ''अपने पति के साथ जाना सर्वथा उचित है, फिर चाहे कितने ही अन्य पुरुष मौर बाँधे क्यों न बैठे रहें?''

शिखावती — ''तब तो जान पड़ता है कि रुक्मिणी के जाने में आपकी सहायता थी।''

बुआ — ''निःसंदेह मेरी सहायता थी। जब सब लोग एक ओर हो गए, रुक्मिणी की सहायता करने वाला कोई नहीं रहा तब क्या मैं भी रुक्मिणी की सहायता नहीं करती? वास्तव में मैंने रुक्मिणी की सहायता नहीं की है, किंतु सत्य और न्याय की सहायता की है। रुक्मिणी जब शिशुपाल को नहीं चाहती और श्रीकृष्ण को अपना पति मान चुकी थी, तब उसका शिशुपाल के साथ बलात् विवाह कर देने को तैयार होना और श्रीकृष्ण से वंचित रखना क्या न्याय होता? क्या आपने इस पर विचार किया था? यदि नहीं तो फिर मैं रुक्मिणी का साथ देकर अन्यायपूर्ण कार्य को असफल बनाने का उपाय क्यों न करती?''

शिखावती — ''आप तो घर की ही थीं। आपका हम सबसे विरुद्ध जाना क्या ठीक था?

बुआ — ''यदि मेरा आपके विरुद्ध जाना ठीक नहीं था, तो क्या आपका अपने पति के विरुद्ध जाना ठीक था? आपके विरुद्ध होकर रुक्मिणी का साथ देना यदि मेरे लिए अपराध है तो आपका अपराध मेरे अपराध से हजार गुना बढ़कर है। रुक्मिणी का साथ देने का मेरा कार्य मैं तो अच्छा ही समझती हूँ। आप चाहे अच्छा न समझें। मैं तो आपसे भी यही कहती हूँ कि जो कुछ होना था वह तो हो गया और उचित ही हुआ। अब भलाई इसी में है कि रुक्म को समझा दो, जिससे वह श्रीकृष्ण से युद्ध छेड़कर स्वयं को उस आग में भस्म न कर ले। यदि रुक्म ने युद्ध किया तो पहले तो श्रीकृष्ण से विजय पाना ही कठिन है। कदाचित् श्रीकृष्ण को जीत भी लिया तब भी आपकी कन्या का अनिष्ट होगा। रुक्मिणी जब श्रीकृष्ण को चाहती है तब आपका बाधक होना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है।''

ननद की बातें सुनकर शिखावती को चुप होना पड़ा। अब उसे यह भय हो रहा था कि कहीं रुक्म श्रीकृष्ण से युद्ध करके अपने प्राण न खो बैठे। साथ ही उसे पति के कथन के विरोध में सहायता करने का भी पश्चात्ताप हो रहा था।

साभार– श्री जवाहर किरणावली-5 (रुक्मिणी-विवाह)

– क्रमशः

ज्ञान सार

श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

संकलनकर्ता -
कंचन कांकरिया, कोलकाता

29-30 जनवरी 2025 अंक से आगे...

जीव प्रदेशों पर शस्त्रादि का स्पर्श शतक 8 उद्देशक 3

पूर्वापर संबंध – जीव के अधिकार में उसकी अच्छेदतादि का वर्णन किया जा रहा है।

प्र.2607 गाय, गाय की श्रेणी (पंक्ति), मनुष्य, मनुष्य की श्रेणी आदि के दो, तीन या संख्यात खंड किए जाएँ तो क्या बीच का भाग आत्मप्रदेशों से स्पृष्ट रह सकता है?

उत्तर हाँ, स्पृष्ट रह सकता है।

प्र.2608 अग्नि‌ताप, शस्त्र प्रहार आदि से बीच के भाग के आत्मप्रदेशों को बाधा-पीड़ा क्यों नहीं होती और उनका छेदन क्यों नहीं होता?

उत्तर अरूपी आत्मप्रदेशों पर रूपी शस्त्रादि का प्रभाव नहीं होता और तैजस-कार्मण शरीर सूक्ष्म होते हैं, इसलिए उन पर शस्त्रादि का प्रहार नहीं लगता एवं छेदन भी नहीं होता। जैसे- छिपकली की कटी हुई पूँछ जब तक हिलती रहती है, तब तक बीच के भाग के आत्मप्रदेशों पर हाथ या शस्त्रादि से प्रहार किया जाए तो भी उन आत्मप्रदेशों पर कोई असर नहीं होता।

पाँच क्रिया शतक 8 उद्देशक 4

प्र.2609 भंते! पृथ्वियाँ कितनी हैं?

उत्तर गौतम! पृथ्वियाँ आठ हैं। यथा- रत्नप्रभा- पृथ्वी यावत् अधःसप्तमा (तमस्तमा) पृथ्वी और ईषत्प्राग्भारा (सिद्धशिला)।

प्र.2610 भंते! क्या यह रत्नप्रभापृथ्वी चरम (प्रांतवर्ती-अंतिम) है अथवा अचरम (मध्यवर्ती) है?

उत्तर रत्नप्रभापृथ्वी चरम और अचरम दोनों है। यहाँ श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र का समग्र चरमपद (10वाँ) कहना चाहिए। (चरम और अचरम सापेक्ष हैं।)

प्र.2611 क्रिया किसे कहते हैं?

उत्तर कर्मबंध की कारणभूत चेष्टा को जैनागमों में 'क्रिया' कहते हैं।

प्र.2612 क्रियाएँ कितनी कही गई हैं?

उत्तर क्रियाएँ 5 कही गई हैं। यथा-

1. **कायिकी** – शरीर से
2. **अधिकरणिकी** – शस्त्र से
3. **प्राद्वेषिकी** – ईर्ष्या और द्वेष से अशुभ चिंतन करना
4. **पारितापनिकी** – कष्ट देना अथवा वचनों से दुःख पहुँचाना
5. **प्राणातिपातिकी** – स्व या पर को जीवन रहित करना।

आजीविक का थोकड़ा शतक 8 उद्देशक 5

पूर्वापर संबंध – विनाश का मूल किंतु बहुजन हृदय वल्लभ परिग्रह (ममत्व) के कारण क्रिया लगती है। अतः क्रिया का वर्णन किया जा रहा है।

प्र.2613 आजीविक अर्थात् गोशालक के शिष्यों ने स्थविर भगवंतों से पूछा कि कोई श्रावक सामायिक करके उपाश्रय में बैठा है, उसके वस्त्रादि कोई चुरा ले जाए और सामायिक पूर्ण होने पर वह उन वस्त्रादि की खोज करे तो वह स्व वस्तु को खोजता है या पर वस्तु को?

उत्तर स्व वस्तु को खोजता है, क्योंकि श्रावक का उस पर ममत्व है। इसलिए सामायिक में भी श्रावक की आत्मा अधिकरण (कषाय रूपी शस्त्र) से युक्त होती है।

प्र.2614 भंते! क्या शीलव्रत, गुणव्रत यावत् पौषधोपवास अंगीकार किए हुए श्रावक के वे अपहृत (चुराए हुए) वस्त्र आदि उसके लिए अवस्त्र आदि हैं?

उत्तर हाँ, गौतम! वे उसके लिए अवस्त्र आदि हो जाते हैं।

प्र.2615 भंते! यदि सामायिक, पौषध आदि में वे वस्त्रादि श्रावक के लिए अवस्त्रादि हो जाते हैं तो आप ऐसा क्यों कहते हैं कि वह श्रावक सामायिक पूर्ण हो जाने पर अपने वस्त्रादि की खोज करता है, दूसरे की वस्तुओं की खोज नहीं करता?

उत्तर गौतम! सामायिक करने वाले श्रावक के मन में यह परिणाम रहते हैं कि चाँदी, सोना, वस्त्रादि मेरे नहीं हैं, मणि, रत्न, कांसी के बर्तन मेरे नहीं हैं। परंतु उसने ममत्व का प्रत्याख्यान नहीं किया। इस कारण गौतम! मैं ऐसा कहता हूँ कि सामायिक आदि पूर्ण हो जाने पर श्रावक अपनी वस्तु की खोज करता है, दूसरे की नहीं।

प्र.2616 भंते! कोई एक श्रावक सामायिक करके उपाश्रय में बैठा है। उस समय यदि कोई लंपट पुरुष उस श्रावक की पत्नी को भोगता है तो क्या वह श्रावक की पत्नी को भोगता है या अपत्नी को भोगता है?

उत्तर गौतम! वह श्रावक की पत्नी को भोगता है, दूसरे की पत्नी को नहीं भोगता।

प्र.2617 भंते! सामायिक पौषधोपवास कर लेने से उस श्रावक की पत्नी क्या अपत्नी हो जाती है?

उत्तर हाँ, गौतम! अपत्नी हो जाती है।

प्र.2618 भंते! जब वह जाया उस श्रावक की अजाया हो जाती है तो आप ऐसा क्यों कहते हैं कि वह लंपट उसकी जाया (पत्नी) को भोगता है, अजाया को नहीं भोगता?

उत्तर गौतम! सामायिक, पौषध में उस श्रावक के मन में ऐसे परिणाम होते हैं कि माता, पिता, भाई, बहन, पुत्र, पुत्री, पुत्रवधू, स्त्री आदि मेरे नहीं हैं। ऐसा होते हुए भी उनके साथ उसका प्रेमबंधन टूटा नहीं। गौतम! इस कारण ऐसा कहता हूँ कि वह पुरुष उस श्रावक की जाया को भोगता है, अजाया को नहीं भोगता।

विचारणीय बिंदु – क्या हम ऐसे एकत्व, अन्यत्व आदि उत्तम भावों से सामायिक, पौषध आदि करते हैं?

साभार– श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

–क्रमशः

श्रमणोपासक हेडलाइंस

- परमागम रहस्यज्ञाता, परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के स्वर्णिम दीक्षा दिवस पर चतुर्विध संघ की उपस्थिति में आयोजित महत्तम शिखर महोत्सव दिनांक 7-8-9 फरवरी 2025 को धर्मनगरी नोखा की पावन धरा पर अविस्मरणीय उपलब्धियों के साथ संपन्न।
- नोखा में हुआ सब कुछ अनोखा। दीक्षार्थियों में शामिल एक **मुमुक्षु भाई विनीत जी चोरड़िया** तो अपने परिवार के साथ दीक्षा साक्षी बनने हेतु पधारे थे और उनका वापसी का रेल टिकट भी बना हुआ था। लेकिन आचार्य भगवन् के पूछते ही परिजनों ने कहा कि हमारी ओर से कोई अंतराय नहीं। फिर हाथों-हाथ हुआ आज्ञा-पत्र।
- आगामी चातुर्मासों की घोषणा **होली चातुर्मासिक पर्व** से पूर्व ही उद्घोषित। आचार्य भगवन् आदि ठाणा का **आगामी चातुर्मास** सभी आगारों सहित सौभाग्यशाली **देशनोक संघ** के लिए घोषित।
- **1008 दया** का हुआ आह्वान। उत्कृष्ट आँकड़ों से दया का कार्यक्रम हुआ संपन्न।
- परिजनों द्वारा गुरुचरणों में अनुज्ञा-पत्र समर्पित करने की होड़। दीक्षाओं की क्रमशः घोषणा से सर्वत्र संयम साधना की लहर।
- संघ द्वारा संघ सदस्यों के हितार्थ संपूर्ण केंद्रीय कार्यालय का नोखा में तीन दिनों तक सभी प्रवृत्तियों के अलग-अलग विभाग के साथ संचालन। संघ के इस अनूठे प्रयास की सभी ने मुक्तकंठों से की सराहना।
- आचार्यदेव के जीवन पर आधारित **'Viewing Art Gallery'** का दिग्दर्शन कर हर कोई अभिभूत।
- अल्का जी डागा द्वारा '**थव थुई मंगलम्**' एवं राहुल जी कपूर (जैन) द्वारा '**महत्तम अहोभाव**' की प्रस्तुति से भक्ति एवं आराधना भावाभिवृद्धि।
- मुमुक्षु भाई-बहनों के लगभग 1 किलोमीटर लंबे वरघोड़े में हुए जयनाद से नोखा का कण-कण गुंजित।
- महत्तम शिखर महोत्सव के मुख्य समारोह में देश के गौरवशाली **प्रधानमंत्री** का शुभ संदेश पढ़कर सुनाया गया, तो **लोकसभा स्पीकर ओम जी बिरला** के शुभ संदेश का वीडियो प्रसारित किया गया। इस अपूर्व अवसर के साक्षी बनने हेतु **राज्यसभा सांसद लहर सिंह जी सिरोहिया** एवं **केंद्रीय कानून मंत्री अर्जुनराम जी मेघवाल** सहित सैकड़ों गणमान्यजनों की उपस्थिति।
- **संथारा साधिका साध्वी श्री सांत्वना श्री जी म.सा.** का चौविहार संथारे सहित 19वें दिन बीकानेर में पंडितमरण। देशभर में श्रद्धांजलियों का दौर जारी। **संथारा साधिका साध्वी श्री रामप्रेम श्री जी म.सा.** के तिविहार संथारे का 24 फरवरी को 50वाँ दिवस। संथारा पूर्ण सजगता के साथ गतिमान।
- बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु '**अभिमोक्षम् 2.0**' कैंप **बीकानेर** में होना संभावित। रजिस्ट्रेशन हुए शुरु।
- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. का 33वाँ युवाचार्य दिवस एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर का छठाँ उपाध्याय पदारोहण दिवस 2 मार्च 2025 को '**श्रुतभक्ति दिवस**' के रूप में मनाने का आह्वान।
- किसी भी क्षेत्र में चारित्रात्माएँ विराजित नहीं होने की स्थिति में स्वाध्यायी फाल्गुनी पर्व आराधना हेतु प्रदान करेंगे अपनी सेवाएँ।
- '**अभिरामम्**' पुस्तक की सभी गतिविधियों के टॉप 10 परिणाम घोषित।

देशाणे के लाल की,
जय बोलो गुरु राम की।
भक्तों के भगवान की,
जय बोलो गुरु राम की।।

"संयम ऊहापोह को शांत करने वाला है" - आचार्य भगवन्

"आत्मा का सुख सच्चा सुख है" - उपाध्याय प्रवर

गुरुवर विहार समाचार

युगनिर्माता आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के स्वर्णिम दीक्षा दिवस पर नोखा बना अनोखा

7-8-9 फरवरी को समवसरण-सा अद्भुत नजारा देखने को मिला

1008 से अधिक दया, लगभग 200 तेले संपन्न

अनोखी नगरी नोखा में विराट दीक्षा महोत्सव एवं महत्तम शिखर महोत्सव का शानदार आयोजन

देशनोक का भाग्य खुला - गुरु राम का चातुर्मास मिला

अनेक चातुर्मासों की घोषणा से सर्वत्र खुशी की लहर

7 फरवरी को पूर्व में घोषित 7 दीक्षाओं के साथ 2 तत्काल दीक्षाओं सहित कुल 9 दीक्षाएँ संपन्न

मुमुक्षु अंशिका जी सुराणा, स्नेहा जी सुराणा की जैन भागवती दीक्षा 20 अप्रैल, मुमुक्षु मुस्कान जी सेठिया, प्रियंका जी सेठिया की दीक्षा 30 अप्रैल, मुमुक्षु वंदना जी भूरा की दीक्षा 6 अक्टूबर के लिए घोषित

नोखामंडी, जि. बीकानेर (राज.)

गुरु राम चरणों में श्रद्धा उपहार है।
जिनके दर्शन से ही होता उद्धार है।।
है सहज, शांति की मूरत, मुख पर मधुर मुस्कान है।
नयनों में सदा झलकती करुणा रसदार है।।

अपने संयम तेज के साथ सदैव स्व-पर कल्याण की साधना में सदा रत रहने वाले युगनिर्माता, युगपुरुष, साधना के शिखर पुरुष, रत्नत्रय के महान आराधक, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील संप्रेरक, ज्ञान एवं क्रिया के बेजोड़

संगम, नानेश पट्टधर, परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में अनोखी नगरी नोखा में श्रद्धा-भक्ति, समर्पणा के साथ अपूर्व धर्माराधना का ठाट लग गया। चातुर्मास जैसा अनुपम दृश्य देखने को मिला। नौ उपवास की लड़ी एवं प्रतिदिन विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान से श्रद्धालुओं का जीवन धन्य हो गया। पूर्व घोषित 7 दीक्षाओं के साथ आचार्य भगवन् के अतिशय से दो गुप्त दीक्षाओं सहित कुल 9 दीक्षाएँ संपन्न हुईं। महत्तम शिखर महोत्सव के अंतर्गत 7-8-9 फरवरी को अद्भुत कार्यक्रम धर्मोल्लासपूर्वक संपन्न हुए। 9 फरवरी को 1008 से अधिक दया एवं लगभग 200 तेले भी संपन्न हुए। आचार्य भगवन् की एक झलक पाकर आत्मतृप्त होने के लिए देश-विदेश से श्रद्धालुओं का जनसैलाब उमड़ पड़ा। **मुमुक्षु सुश्री अंशिका जी सुराणा व स्नेहा जी सुराणा** (दिल्ली) की जैन भागवती दीक्षा **20 अप्रैल को गंगाशहर-भीनासर** के लिए, **मुमुक्षु सुश्री मुस्कान जी सेठिया व प्रियंका जी सेठिया** की जैन भागवती दीक्षा **30 अप्रैल को गंगाशहर-भीनासर** के लिए एवं **मुमुक्षु सुश्री वंदना जी भूरा** की जैन भागवती दीक्षा **6 अक्टूबर को देशनोक** के लिए जैसे ही उद्घोषित हुई संपूर्ण सभा जयनादों से गूँज उठी। नोखा, मारवाड़ सहित संपूर्ण देश राममय हो गया। महापुरुषों का आगे जोरावरपुरा, **होली चातुर्मासिक** पर्व पर **नोखा गाँव** होते हुए **30 अप्रैल (अक्षय तृतीया)** को दीक्षा प्रसंग पर **गंगाशहर-भीनासर** एवं **अभिमोक्षम् शिविर** हेतु **बीकानेर** पधारना संभावित है।

नोखा में आचार्य भगवन् का ऐतिहासिक मंगल प्रवेश

1 फरवरी 2025, श्री जैन जवाहर भवन, नोखा। युगनिर्माता आचार्य श्री रामेश एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का श्री जगन्नाथ दादाबाड़ी, चरकड़ा से विहार कर अनोखी धर्मनगरी नोखा में अपूर्व जयनादों के साथ भव्य ऐतिहासिक मंगल प्रवेश हुआ। जैन समाज के सभी संप्रदायों के साथ-साथ हर जाति, वर्ग, कौम के लोग महापुरुषों की अगवानी हेतु उमड़ पड़े। प्रवेश के साथ ही **मुमुक्षु श्री लक्सीमल जी कांकरिया** सुपुत्र श्री मिश्रीमल जी-भंवरी देवी कांकरिया (नोखामंडी) की दीक्षा हेतु परिजनों मोहनलाल जी, बाबूलाल जी, तेजकरण जी, बसंती देवी, गुलाब देवी, मंजू देवी, प्रेमलता जी आदि ने जैसे ही गुरुचरणों में आज्ञा-पत्र समर्पित किया, संपूर्ण माहौल '**राम गुरु विराट हैं, दीक्षाओं का ठाट है**' के नारे से गूँजने लगा। जयवंता-जयवंता एवं जय-जयकारों से संपूर्ण सभा में धर्म का माहौल हो गया।

आचार्य भगवन् ने फरमाया कि ''**लक्सीमल जी कांकरिया की बहुत दिनों से भावना थी, जो आज साकार हुई है। 7 फरवरी को दीक्षा संभावित है।**''

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि ''**आचार्य भगवन् द्वारा नोखामंडी में चरणन्यास करने के पश्चात् दीक्षा का प्रसंग सम्मुख है। हम सभी का कर्तव्य है कि आचार्य भगवन् की आज्ञा को शिरोधार्य करें। देवों का सारा सुख अनंत गुणा किया जाए तो भी वह सुख हमारी आत्मा के सुख के बराबर नहीं है। आचार्यश्री जी का सुसान्निध्य सुख को प्रकट करने वाला है। हमने मन, वचन, काया की भिन्न-भिन्न प्रवृत्तियों द्वारा आत्मा के सुख को दबा रखा है। अब अवसर मिला है, आचार्य भगवन् के सान्निध्य का लाभ उठाएँ। सभी नोखा वासी एवं मारवाड़ क्षेत्र के मरुधरा निवासी संयम की साधना को आगे बढ़ाएँ। हम भीतर के अध्यात्म सुख को प्रकट करें और सच्चे सुख के स्वामी बनें।**''

संघ मंत्री ने कहा कि अनंत पुण्यवानी के उदय से नोखा में तिरण-तारण के जहाज पधारे हैं। अधिकाधिक लाभ उठाएँ। इस अवसर पर विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

नर से नारायण बनना है

2 फरवरी 2025। परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् का पावन सान्निध्य, रविवार का अवकाश एवं भगवन् द्वारा प्रदान किए गए विशेष आयाम '**समता शाखा आराधना**' की त्रिपुटी से आप्लावित होने हेतु गुरुभक्त आतुर नजर आए। प्रात:काल से ही जैन जवाहर भवन का विशाल चौक श्रावक-श्राविकाओं की विशाल उपस्थिति से छोटा नजर आने लगा। श्री मनीष मुनि जी म.सा. ने समता आराधना करवाई।

समता आराधना पश्चात् प्रवचन स्थल पर आयोजित धर्मसभा में गुरुभक्तों को संबोधित करते हुए शास्त्रज्ञ आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**अनुत्तर धर्म-श्रद्धा को प्राप्त करना है। भगवान का मार्ग क्या है, इस पर विचार करें। संवेग का अर्थ वेग, वेग का अर्थ आवेग। वेग प्रवाह का होता है। सही दिशा में तीव्रता होना संवेग है। संसार की तीव्रता कर्मबंधन कराने वाली होती है। केवलज्ञान संवेग से प्राप्त होता है। श्रद्धा जितनी घनीभूत हो जाती है, संवेग प्राप्त होता है, उतना ही धर्म के प्रति संवेग तीव्र होता जाता है। जब हमारी आंतरिक धर्म-श्रद्धा तीव्र होती है, तब अज्ञान छूटने लगता है। संवेग महत्त्वपूर्ण सोपान है। ज्ञाता-द्रष्टा भाव से संवेग तीव्र होता जाता है, तब परिवार मेरा नहीं, कोई मेरा नहीं आदि भाव प्रकट होते हैं। धन की तरफ रुचि से धर्म गौण हो जाता है और धर्म की तरफ रुचि से धन गौण हो जाता है। निर्ग्रंथ प्रवचन ही सार है, अर्थ है। बाकी सब अनर्थ हैं। अनुत्तर धर्म-श्रद्धा होने पर मोह-ममत्व का बंध नहीं होगा। इस दुर्लभ मानव तन से ऐसी करनी कर लें कि नर से नारायण बन जाएँ। जब तक जीवनरूपी दीये में तेल व बाती है, तब तक त्याग-प्रत्याख्यान से आत्मा को भावित करें। तन जाए तो जाए, पर सत्य धर्म नहीं जाए।**''

साध्वी मंडल ने गुरुभक्ति गीत एवं समता महिला मंडल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। संघ मंत्री ने तप-त्याग की प्रेरणा दी। दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहा। दोपहर में महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि हुए।

समकित स्पर्श से भवभ्रमण होते हैं दूर

3 फरवरी 2025। प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना के पश्चात् आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ फरमाया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि समकित की प्राप्ति कैसे हो? किस प्रकार सम्यक् दर्शन को प्राप्त किया जाए? अनादिकाल से इस संसार में भटकते हुए दु:खी होकर इस जीव आत्मा ने सम्यक्त्व को प्राप्त नहीं किया। ऐसी समकित जिसका स्पर्श करने मात्र से दु:ख दूर हो जाते हैं, भवभ्रमण मिट जाते हैं। समकित का स्पर्श किए बिना तीर्थंकर नहीं बन सकते और न ही केवलज्ञान की प्राप्ति हो सकती है। इसके बिना आचार्य, उपाध्याय व साधु नाम के रहते हैं। क्या आपने सामायिक, तपस्या व दान करते समय अपने आप से पूछा है कि क्या मैं सम्यक् दृष्टि हूँ? क्या मैंने समकित की प्राप्ति कर ली है? कितनी भी क्रियाएँ कर ली जाएँ, उससे पहले सम्यक् दृष्टि होना जरूरी है। जिनवचनों पर कभी भी शंका नहीं करनी चाहिए। कभी पर-दर्शन की आकांक्षा

नहीं करनी चाहिए। देव-गुरु-धर्म पर हमारी अटूट आस्था होनी चाहिए। सम्यक् दर्शन के साथ, धर्म से जुड़ें।

श्री संजय मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि संयम ही जीवन है। क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष के कारण हमारा जन्म-मरण का चक्र चल रहा है। नाना गुरु के बाद राम गुरु ने इस संघ को ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप में खूब अभिवृद्धित किया है।

साध्वी श्री लक्ष्यप्रभा जी म.सा. ने फरमाया कि महान पुण्यवानी से ऐसे गुरु प्राप्त हुए हैं। आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर ने अपना खून-पसीना सींचकर जिनशासन की भव्य प्रभावना की है। सभा में उपस्थित गुरुभक्तों ने **'जिनशासन के वीरों को वंदन है, अभिनंदन है'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ प्रदान किया। दोपहर में महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी एवं जिज्ञासा-समाधान आदि कार्यक्रम हुए।

धर्म की जननी है यतना

4 फरवरी 2025। मंगलमय प्रार्थना में **'उठ भोर भई टुक जाग सही'** एवं **'गुरु रामलाल जी महाराज परम तपस्वी हैं'** की मधुर ध्वनि में प्रभु एवं गुरुभक्ति की गई। तत्पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी पीयूषवर्षिणी वाणी में फरमाया कि **''संवेग से अनुत्तर धर्म-श्रद्धा प्राप्त होती है। ऐसी श्रद्धा जो किसी के चलाए चल नहीं सकती। संवेग किन विचारों से पैदा होता है? यतना की आँख से संवेग पैदा होगा। धर्म की जननी यतना है। हमारा पुरुषार्थ यतनापूर्वक होना चाहिए। गौतम स्वामी द्वारा पूछा गया कि संवेग से जीव को क्या लाभ होता है? भगवान महावीर ने फरमाया कि संवेग से अनुत्तर धर्म-श्रद्धा प्राप्त होती है।''**

श्री छत्रांक मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जो गुरु आज्ञा नहीं मानता, वह अविनीत शिष्य कहलाता है। शिष्य हर कार्य विनयपूर्वक करें। विनयवान इस भव व परभव, दोनों में सुखी रहेगा। आज्ञा व अनुज्ञा में अंतर है। आज्ञा या आदेश, जो बड़ों द्वारा छोटों को दिया जाता है तथा अनुज्ञा या अनुमति, जो छोटे, बड़ों को दे सकते हैं तथा बड़े, छोटों को दे सकते हैं।

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने महापुरुषों के सान्निध्य में अधिकाधिक धर्माराधना करने एवं संयम भाव जगाने की अद्भुत प्रेरणा दी। शासन दीपिका साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने **'मेरे गुरु के बराबर कोई नहीं'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। अनेक तपस्याओं के प्रत्याख्यान हुए। दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहा।

सब कुछ संभव है

5 फरवरी 2025। भोर की पावन वेला में **'इण कलयुग रा भाग्यविधाता'** गुरुभक्ति गीत के साथ प्रार्थना के स्वर प्रस्फुटित हुए। तत्पश्चात् प्रवचन स्थल भट्टड़ स्कूल प्रांगण में आयोजित विशाल धर्मसभा में उपस्थित अपार जनमेदिनी को अध्यात्म जगत् में प्रभु महावीर की वाणी से संयोग करवाते हुए जगत् उद्धारक आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि **''हम कई बार कह देते हैं कि ये कार्य मेरे से नहीं हो सकता। मेरे लिए ये संभव नहीं है। जबकि होना ये चाहिए कि मेरे लिए सब कुछ संभव है। बच्चों को उत्कंठा होती है नया ज्ञान सीखने व जानने की। इसलिए वो जल्दी ग्रहण कर लेते हैं। जब बुद्धि एक दिशा में जाती है**

तो सफलता मिलती है। लक्ष्य बनाएँ तो सफलता मिलती है। दो घोड़ों पर सवारी मुश्किल है और एक घोड़े की सवारी मंजिल तक पहुँचाने वाली है। कभी-कभी एक घोड़े की सवारी भी मुश्किल होती है, जब घोड़ा नियंत्रण में नहीं हो। जब घोड़ा नियंत्रण में हो तो सवारी मुश्किल नहीं होती। जिनदास श्रावक ने एक घोड़े को ऐसा ट्रेंड किया कि वो घोड़ा मखमल के चद्दर पर दौड़ लेता और उस मखमल में एक भी सल नहीं आता। ये कार्य असंभव-सा है, फिर भी संभव हो गया। इस प्रकार कोई भी कार्य असंभव नहीं है। पुरुषार्थ करने वाले के लिए असंभव जैसा कोई शब्द नहीं होता।''

सही निर्णय करने का सामर्थ्य पैदा करें

6 फरवरी 2025। प्रात: की मधुर वेला में प्रार्थना हेतु उपस्थित सैकड़ों गुरुभक्तों को **'उठ भोर भई टुक जाग सही'** एवं **'हुक्मगणी का पाट हुआ है निहाल जी'** गीतों से भक्ति करवाई गई। प्रार्थना से पावन हुए मन में प्रभु की वाणी का आरोपण करते हुए धर्मसभा में परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''मन का भय व्यक्ति को आगे बढ़ने से रोकता है। ऐसा हो जाएगा, वैसा हो जाएगा, ये काल्पनिक भय बाधित करता है और व्यक्ति अनिर्णय में झूलता रहता है। अनिर्णय खतरनाक होता है, लेकिन गलत निर्णय एक बार सही भी हो सकता है और खतरे से निकालने वाला भी हो सकता है। अनिर्णय की स्थिति मन को कमजोर व आत्मविश्वास को मंद से मंदतर करती है। निर्णय करने से मन-मस्तिष्क तरोताजा हो सकता है, फिर कोई उलझन नहीं रहती। अनिर्णय में उलझनें उलझती चली जाती हैं। व्यक्ति सोच नहीं पाता, किंतु हमारे भीतर निर्णय करने का सामर्थ्य है। उसे प्रकट करें। निर्णय कब होगा? जब हमारे भीतर अभय भावना होगी, चिंता नहीं होगी। एक दिन मरना ही है, उससे बढ़कर और क्या होगा! जीवन में कुछ ही क्षण ऐसे आते हैं। अच्छी भावना बनाने के लिए उन्हें साध लिया जाए तो बाजी हाथ में होगी। कषायों को, अपने मन को नमाओ, राग-द्वेष को हटाओ, तभी आत्मकल्याण की दिशा में आगे बढ़ पाएँगे। संसार से निर्लिप्त होकर रहें।''**

श्री मधुर मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि सबसे बड़े दानवीर वे हैं, जो अपनी संतानों को जिनशासन में समर्पित करते हैं। गुरुचरणों में तप-त्याग का प्रसाद लेकर ही घर जाएँ। श्री श्रुतप्रभ मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य भगवन् की वाणी को सुनकर हम भी संयम की भावना को जगाएँ। उनके बताए रास्ते से ही कल्याण होगा। गुरुकृपा से असंभव भी संभव हो जाता है।

श्री आदित्य मुनि जी म.सा. एवं श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने तेले तप की आराधना करने की प्रेरणा दी। लगभग 200 भाई-बहनों ने तेले तप का संकल्प लिया। शासन दीपिका साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री मनोरमा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने **'तूं सांचो, थारो सांचो है दरबार रे'** गुरुभक्ति गीत का गान किया। संघ मंत्री ने अवसर का लाभ उठाने की अपील की। 26 माह में 111 तेला करने का प्रत्याख्यान सुमन जी छाजेड़ ने ग्रहण किया। '**लोच में क्या सोच**' एवं अन्य कई त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

मुमुक्षु भाई-बहनों का भव्य वरघोड़ा एवं शानदार अभिनंदन

स्वागत के लिए जन-जन उमड़ पड़े,
ये ही मंजिल तेरी ये ही है रास्ता,
राम शासन का गौरव बढ़ाया सदा।

भोग से योग की ओर, राग से वीतराग की ओर कदम बढ़ाने वाले **मुमुक्षु श्री लक्सीमल जी कांकरिया** (नोखा), **मुमुक्षु सुश्री राखी जी सांखला** (डौंडीलोहारा), **मुमुक्षु सुश्री युक्ता जी चोरड़िया** (राजनांदगाँव), **मुमुक्षु सुश्री करिश्मा जी लूणिया** (नोखा) का भव्य वरघोड़ा भूरा चौक से प्रारंभ होकर महावीर चौक, मरोठी चौक, गांधी चौक, लखारा चौक, मस्जिद चौक, कांकरिया चौक, सत्यनारायण मंदिर, भूतड़ा कोल्हू, सदर बाजार, हनुमान मंदिर, जैन चौक, लाहोटी कुआँ आदि मुख्य मार्गों से होते हुए भट्टड़ स्कूल पहुँचा। सुसज्जित रथ में सवार मुमुक्षु भाई-बहनें एवं वीर परिजन सभी का हाथ जोड़कर अभिवादन स्वीकार कर रहे थे। हर जाति, धर्म व सकल जैन समाज के लोगों ने वरघोड़ा मार्ग के दोनों ओर खड़े होकर अनेक स्थानों पर भावाभिनंदन किया। वैरागी भाई-बहनों के आदर्श त्याग को देखकर सभी नतमस्तक हो रहे थे। '**त्रिशला नंदन वीर की जय बोलो महावीर की**', '**जय-जयकार जय-जयकार, राम गुरु की जय-जयकार**', '**दीक्षार्थियों ने क्या किया, मोह-माया का त्याग किया**' आदि जयघोषों से संपूर्ण वातावरण गुंजायमान हो रहा था। त्रय शाखाओं के पदाधिकारी, देश-विदेश से पधारे हजारों श्रद्धालु वरघोड़ा में उपस्थित होकर अनुपम त्याग की सराहना कर रहे थे।

वीतरागता की ओर बढ़ रहे ये चरण।
धन्य, धन्य, धन्य, कह रहा है सबका मन।।

सांसारिक सुखों, सुख-सुविधाओं को ठोकर मारकर त्याग, संयम मार्ग की ओर कदम बढ़ाने वाले मुमुक्षु श्री लक्सीमल जी कांकरिया, मुमुक्षु सुश्री राखी जी सांखला, मुमुक्षु सुश्री युक्ता जी चोरड़िया, मुमुक्षु सुश्री करिश्मा जी लूणिया का भव्य स्वागत एवं अभिनंदन श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति, श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ, नोखा के श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मंडल, समता युवा संघ तथा सकल जैन समाज सहित देश-विदेश से पधारे हजारों श्रद्धालु भाई-बहनों की उपस्थिति में अपूर्व उल्लास एवं उत्साह के साथ किया गया।

प्रारंभ में समता महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण एवं समता बालिका मंडल द्वारा स्वागत गीत पश्चात् स्थानीय संघ अध्यक्ष ने मुमुक्षु भाई-बहनों एवं परिजनों व अतिथियों के सहकार के लिए अहोभाव व्यक्त किया। मुमुक्षु भाई-बहनों का परिचय महेश नाहटा ने दिया। अभिनंदन-पत्र का वाचन सहमंत्री द्वारा किया गया।

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि राम गुरु की विराटता है। बहुत से श्रद्धालुओं की भावना है कि हमारा भी नाम **संयम शतम** में आ जाए। अनंतानंत पुण्यवानी से हमें ऐसे आचार्य भगवन् का सान्निध्य मिला है। स्वर्णिम दीक्षा के 50वें वर्ष का पावन दिन इस जीवन में एक बार ही आना है। ये सभी मुमुक्षु भाई-बहन भाग्यशाली हैं, जो अपने नाम के आगे राम लगवाकर गुरुचरणों में समर्पित होने जा रहे हैं। नोखा संघ भाग्यशाली है, जिसे यह स्वर्णिम अवसर, स्वर्णिम प्रसंग प्राप्त हुआ है। हम भी आचार्य भगवन् के चरणों में त्याग-नियम, प्रत्याख्यान की भेंट चढ़ाएँ। स्थानीय समता युवा संघ अध्यक्ष ने मुमुक्षुओं के उज्ज्वल संयमी जीवन की मंगलकामना की।

मुमुक्षु बहन राखी जी सांखला ने अपने भावोद्गार में कहा कि बहुत ही मुश्किल से यह दुर्लभ मानव भव,

जिनशासन, महान सद्ज्ञानी राम गुरु का संयोग मिला है। इस जीवन को व्यर्थ नहीं गँवाना है। संयम साधना से जीवन को सार्थक करना है। देव, गुरु, धर्म के प्रति हमारी श्रद्धा मजबूत होनी चाहिए। अपनी संतानों को एक बार आरुग्गबोहिलाभं में अवश्य भेजें।

मुमुक्षु बहन युक्ता जी चोरड़िया एवं करिश्मा जी लूणिया ने मानव जीवन का सार संयम को निरूपित करते हुए सभी को इस दिशा में आगे आने की प्रेरणा दी एवं आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर तथा परिजनों के उपकारों के प्रति कृतज्ञता के भाव व्यक्त किए।

वीर माता-पिता, परिजनों एवं मुमुक्षु भाई-बहनों का शानदार बहुमान केंद्रीय संघ व सहयोगी शाखाओं, स्थानीय संघ व शाखाओं एवं आरुग्गबोहिलाभं, सकल जैन समाज व अनेक संस्थाओं व संघों के पदाधिकारियों द्वारा तिलक, माला, शॉल, अभिनंदन-पत्र भेंट एवं खोल भरकर किया गया। आभार ज्ञापन संघ मंत्री ने किया। समता महिला मंडल मंत्री ने सभा का संयोजन करते हुए दीक्षा के महत्त्व पर प्रकाश डाला। वीर परिवार की ओर से सुंदर भावाभिव्यक्ति दी गई। सभा में बार-बार **'संयम के भाव हैं आज जगे, मेरे नाम के आगे राम लगे'** गीत के स्वर मुखरित हो रहे थे।

दीक्षार्थी भाई-बहनों के ओघा बँधाई का कार्यक्रम प्रभु एवं गुरुभक्ति गीतों व जय-जयकारों के साथ भट्टड़ स्कूल में देश-विदेश से आगत गुरुभक्तों की उपस्थिति में संपन्न हुआ।

जिनके रोम-रोम से टपकता है संयम तप,
ऐसे राम गुरु के चरणों में नतमस्तक हैं सब।
वीर की राह पर बढ़ रहे वीर बन,
वीर पुरुषों को प्यारी ये संयम डगर।।

विराट दीक्षा महोत्सव में परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में पूर्व घोषित सात एवं दो तत्काल दीक्षाओं सहित कुल नौ दीक्षाएँ संपन्न

हमारा जीवन आदर्श रूप बने - आचार्य भगवन्
गुरु के सान्निध्य से शांति व सुकून मिलता है - उपाध्याय प्रवर

7 फरवरी 2025, भट्टड़ स्कूल प्रांगण, नोखा। इस पंचम आरे में चौथे आरे की झलक दिखलाने वाले, ज्ञान एवं क्रिया के बेजोड़ संगम, युगनिर्माता, परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर की उत्कृष्ट संयम साधना से प्रभावित होकर अनेक भव्यात्माएँ गुरुचरणों में समर्पित होकर स्व-पर कल्याण की साधना में निरंतर गतिशील हो रही हैं। इसी कड़ी में 72 वर्षीय **मुमुक्षु श्री लक्सीमल जी कांकरिया** सुपुत्र स्व. श्री मिश्रीमल जी-स्व. श्रीमती भंवरी देवी कांकरिया (नोखा), 64 वर्षीय वरिष्ठ स्वाध्यायी **मुमुक्षु श्री राजेंद्र जी मुणत** सुपुत्र अमृतलाल जी-संपत बाई मुणत (रतलाम), 22 वर्षीय **मुमुक्षु श्री विनीत जी चोरड़िया** सुपुत्र दिलीप जी-कविता जी चोरड़िया (बालाघाट), 18 वर्षीय **मुमुक्षु श्री चाहत जी कोठारी** सुपुत्र नवरतन जी-राजमती जी कोठारी (बेंगलुरु), 26 वर्षीय **मुमुक्षु सुश्री ज्योति जी काँठेड़** सुपुत्री राजमलजी-टीना जी काँठेड़ (बाड़ी-निम्बाहेड़ा),

26 वर्षीय **मुमुक्षु सुश्री राखी जी सांखला** सुपुत्री मुकेश जी-ललिता जी सांखला (डौंडीलोहारा), 24 वर्षीय **मुमुक्षु सुश्री युक्ता जी चोरड़िया** सुपुत्री राजेश जी-अनिता जी चोरड़िया (राजनांदगाँव), 23 वर्षीय **मुमुक्षु सुश्री करिश्मा जी लूणिया** सुपुत्री गौतमचंद जी-ममता जी लूणिया (नोखा), 21 वर्षीय **मुमुक्षु सुश्री श्रद्धा जी आँचलिया** सुपुत्री धर्मेंद्र जी-मीना जी आँचलिया (बेगूँ) की जैन भागवती दीक्षाएँ देश-विदेश से आगत हजारों गुरुभक्तों की अपार जनमेदिनी के मध्य अत्यंत ही धर्मोल्लास के वातावरण में संपन्न हुईं। समवसरण जैसे अद्भुत दृश्य की अनुभूति कर हर कोई आचार्यदेव एवं उपाध्याय प्रवर के अतिशय से आह्लादित हो रहा था। नवकार मंत्र का सामूहिक जाप किया गया।

शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**तीर्थंकर भगवंतों का जीवन दर्पण की भाँति निर्विकार है। उनके चरणकमल का अर्थ है दो चरण, श्रुत धर्म एवं चारित्र धर्म से बँधे हुए। उस आदर्श को सम्मुख रखकर अनंतानंत आत्माएँ भूतकाल में भी आत्मकल्याण की दिशा में अग्रसर हुई हैं, वर्तमान में भी हो रही हैं और भविष्य में भी होती रहेंगी। जैसे दर्पण स्वच्छ होता है, वैसे ही अपने भीतर विकार पैदा नहीं होने दें। हमारा जीवन आदर्श रूप होना चाहिए। नोखामंडी पूज्य आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म.सा. के द्वारा 'अनोखा मंडी' नामकरण करवा चुकी है। नाना गुरु के समय से लेकर आज तक यहाँ नोखा की दीक्षा कितनी हो गईं और नोखा में कितनी हो गईं?** (इसका आज तक का आँकड़ा जब आचार्य भगवन् ने प्रस्तुत किया तो सभी आश्चर्यचकित हो गए।) **सात दीक्षाएँ पूर्व में स्वीकृत हुई थीं। भाई राजेंद्र जी मुणत (रतलाम) का काफी समय से दीक्षा का भाव चल रहा है। इनकी इच्छा हुई तो यह प्रसंग उपस्थित हो गया। मुमुक्षु विनीत जी चोरड़िया (बालाघाट) के माता-पिता ने कहा कि हमारी ओर से कोई अंतराय नहीं है। आज ही आए और आज ही दीक्षा के लिए तैयार हो गए। धर्मनिष्ठ परिवार है। चाहत जी कोठारी के परिवार ने 7 फरवरी के लिए स्वीकृति देकर अपूर्व समर्पणा दिखाई है। यह श्री सांत्वना श्री जी म.सा. की हिम्मत का हेतु है। संथारा साधिका साध्वी श्री सांत्वना श्री जी म.सा. चाहत जी कोठारी के संसारपक्षीय दादीजी म.सा. हैं। दीक्षा का यह मेला है बड़ा अलबेला है। आज यह समझना है कि जीव तू अकेला है।**''

दोपहर लगभग 1 बजे उपाध्याय प्रवर के मुखारविंद से दीक्षा विधि प्रारंभ हुई। आपश्री जी ने मुमुक्षु भाई-बहनों को संयम जीवन की सत्यता बताते हुए अपने दिव्यवचनों में फरमाया कि ''**संयम जीवन दीर्घकालिक जीवन है। इसमें 'कभी घी घणा, कभी मुट्ठी चणा' की उक्ति चरितार्थ होती रहती है। संयम जीवन बहुत ही आनंदित जीवन है। इस संयमित जीवन के लिए आप तैयार हैं?**''

सभी मुमुक्षु भाई-बहनों ने स्वीकृति देते हुए तुरंत ही दीक्षा प्रदान करने का निवेदन किया। सभा में उपस्थित संघ पदाधिकारियों, वीर परिजनों एवं अपार जनसमूह से दीक्षा की आज्ञा हेतु पूछने पर सभी ने अपने दोनों हाथ उठाकर पूर्ण अहोभाव के साथ दीक्षा की अनुमोदना के सुअवसर का लाभ उठाकर कर्मनिर्जरा की।

आचार्य भगवन् ने धवल वेश में उपस्थित मुमुक्षु भाई-बहनों पर अनंत वात्सल्य एवं कृपा बरसाते हुए तीन

बार करेमि भंते के पाठ से संपूर्ण सावद्य योगों व पापकारी क्रियाओं का त्याग करवाकर नवकार महामंत्र के पंचम पद '**नमो लोए सव्वसाहूणं**' पर आरूढ़ किया। लोग दत्तचित्त हो इसी क्षण की प्रतीक्षा कर रहे थे। दीक्षा विधि संपन्न होने के साथ ही '**राम गुरु विराट हैं, दीक्षाओं का ठाट है**' का उद्घोष सभी ने एक स्वर में गूँजा दिया। नवीन नामकरण की घोषणा आचार्य भगवन् के श्रीमुख से इस प्रकार हुई –

मुमुक्षु श्री लक्सीमल जी कांकरिया (नोखा)	**नवदीक्षित संत श्री रामलोचन मुनि जी म.सा.**
मुमुक्षु श्री राजेंद्र जी मुणत (रतलाम)	**नवदीक्षित संत श्री रामरवि मुनि जी म.सा.**
मुमुक्षु श्री विनीत जी चोरड़िया (बालाघाट)	**नवदीक्षित संत श्री रामविनीत मुनि जी म.सा.**
मुमुक्षु श्री चाहत जी कोठारी (बेंगलुरु)	**नवदीक्षित संत श्री रामचरण मुनि जी म.सा.**
मुमुक्षु सुश्री ज्योति जी काँठेड़ (बाड़ी)	**नवदीक्षिता साध्वी श्री रामजीवन श्री जी म.सा.**
मुमुक्षु सुश्री राखी जी सांखला (डाँडीलोहारा)	**नवदीक्षिता साध्वी श्री रामरक्षा श्री जी म.सा.**
मुमुक्षु सुश्री युक्ता जी चोरड़िया (राजनांदगाँव)	**नवदीक्षिता साध्वी श्री रामयुक्ता श्री जी म.सा.**
मुमुक्षु सुश्री करिश्मा जी लूणिया (नोखा)	**नवदीक्षिता साध्वी श्री रामकृपा श्री जी म.सा.**
मुमुक्षु सुश्री श्रद्धा जी आँचलिया (बेगूँ)	**नवदीक्षिता साध्वी श्री रामश्रद्धा श्री जी म.सा.**

केशलुंचन का कार्य नवदीक्षित संतवृंदों का आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर तथा नवदीक्षिता साध्वीवर्याओं का शासन दीपिका साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा. के करकमलों से संपन्न हुआ।

नामकरण एवं केशलुंचन से पूर्व आचार्य भगवन् ने अनोखी नगरी नोखा में अनोखा कार्य करते हुए पूरी सभा को आश्चर्यचकित कर वर्ष 2025 का चातुर्मास की स्वीकृति देशनोक श्रीसंघ को दी। इसी के साथ द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के आगारों के साथ कई चातुर्मासों की व्यवस्था उपाध्याय प्रवर ने जमाई एवं आचार्य भगवन् ने घोषणा की।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि ''**गुरुदेव का सान्निध्य हमारे भीतर शांति एवं सुकून भरता है। मुनि गुरुचरणों में वास करते हुए अपने भीतर सदैव यह चिंतन करें कि मुझे अपने आपको कैसे तैयार करना है, कैसे पवित्र बनाना है। जीवन में ऐसी शांति प्राप्त हो कि हम दुनिया में कहीं भी रहें, आचार्य भगवन् के जीवन दर्शन और वचनों से हमारा जीवन सराबोर हो जाए। माहौल का प्रभाव मन पर पड़ता है। ऐसे लोगों का जीवन ऊँचाई प्राप्त कर सकता है, जिनका निर्माण वातावरण से नहीं होता, बल्कि वे खुद वातावरण का निर्माण करते हैं।**''

श्री विनय मुनि जी म.सा. ने '**समवसरण-सा ठाट लगाया राम गुरुवर म्हारा ओ, दीक्षाओं का ठाट लगाया राम गुरुवर म्हारा ओ**' गुरुभक्ति गीत के साथ फरमाया कि विचारों एवं सोच को शुद्ध बनाने के लिए सद्गुरु की आवश्यकता होती है। यदि जीवन की शैली और सोच को शुभ बना दिया तो जीवन में आनंद आएगा। संयम जीवन में प्रवेश से पहले मान, बड़ाई और ईर्ष्या को छोड़ देना चाहिए।

श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि कर्मों के बंधन में सबसे बड़ा रोल मन का है। मन ही मनुष्य के बंधन और मोक्ष का कारण है। यह मन बड़ा ही चंचल है। बार-बार अशुभता की ओर चला जाता है। इसको समय रहते सँभाल लें। बच्चा-बच्चा जहान का, भक्त है गुरु राम का। जिसके तौर-तरीके सही हैं, वह कभी दु:खी होने वाला

नहीं है। गुरुदेव जीव को सिद्ध बनाने के लिए तैयार हैं।

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि संयम की शुद्ध आराधना पाँच समिति तीन गुप्ति की निर्मल पालना से करें। उस व्यक्ति का स्वप्न सत्य होता है जो अपने गुरु के स्वप्न को पूरा करने में तत्पर रहता है। संयम अभ्यास से नहीं, साहस से पाला जाता है। गुरु की शरण में कुछ चढ़ाना है तो अपने कलेजे के टुकड़े को, अपने रत्न को चढ़ाएँ।

श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि गुरुदेव हमारे बहुत उपकारी हैं। उनके चरणों में कुछ न कुछ भेंट चढ़ाएँ। लूणिया परिवार व कई परिवार आज अपनी संतानों को भेंट कर रहे हैं। अपना सर्वस्व समर्पण कर रहे हैं। चार कषाय व तीन योग कर्मबंधन के कारण हैं।

शासन दीपिका साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री मनोरमा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने **'तेरी साधना को झुकती मेरी आत्मा, कैसी होती है देखो साधना'** एवं **'राम गुरु को बधाई हो'** गीतिकाएँ प्रस्तुत कर संपूर्ण माहौल को आत्मविभोर कर दिया। संघ मंत्री एवं महेश नाहटा ने दीक्षा के विराट महोत्सव को अलौकिक, अविस्मरणीय निरूपित किया।

मुमुक्षु सुश्री कृतिका जी सुपुत्री नंदकिशोर जी देशवाल (बंगईगाँव/देशनोक), **मुमुक्षु सुश्री मुस्कान जी** सुपुत्री विजयराज जी सेठिया (हावड़ा/गंगाशहर), **मुमुक्षु श्री अंशिका जी** सुपुत्री नरेंद्र जी सुराणा (देशनोक/दिल्ली), **मुमुक्षु श्री स्नेहा जी** सुपुत्री नरेंद्र जी सुराणा (देशनोक/दिल्ली) आदि के परिजनों ने गुरुचरणों में अनुज्ञा-पत्र प्रस्तुत किया। सभी मुमुक्षु बहनों ने अपने प्रतिज्ञा-पत्र का पठन किया। संपूर्ण सभा **'संयम के भाव आज जगे, मेरे नाम के आगे राम लगे'** गीत एवं जय-जयकारों से गुंजायमान हो उठी। आरुग्गबोहिलाभं की बहनों ने गुरुभक्ति से ओत-प्रोत गीत का संगान किया। घर से किसी की भी दीक्षा हो तो अंतराय नहीं देने का संकल्प हजारों भाई-बहनों ने लिया।

इसी बीच आचार्य भगवन् ने साधुमर्यादा में रखे जाने वाले सभी आगारों सहित **मुमुक्षु सुश्री कृतिका जी देशवाल** की दीक्षा **16 फरवरी** को **नोखामंडी** एवं **मुमुक्षु सुश्री मुस्कान जी सेठिया** की दीक्षा **30 अप्रैल** को **गंगाशहर-भीनासर** के लिए स्वीकृत की। जय-जयकारों से सभा गूँज उठी।

श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने आचार्य भगवन् के 50वें दीक्षा दिवस के पावन अवसर पर 9 फरवरी 2025 को 1008 दया करने का आह्वान किया। पूर्व घोषित सात दीक्षाओं के साथ दो गुप्त दीक्षाएँ संपन्न होना महापुरुषों के अतिशय का प्रत्यक्ष प्रमाण है। समता संस्कार पाठशाला, नोखा मंडी के बच्चों ने गुरुचरणों में शानदार प्रस्तुति दी। इस प्रकार आचार्य भगवन् के स्वर्णिम दीक्षा महोत्सव के अंतर्गत संपन्न यह दीक्षा समारोह न केवल नोखा निवासियों अपितु यहाँ आगत समस्त गुरुभक्तों के मानस में सदैव स्वर्णिम आभा बिखेरता रहेगा। एक बार पुन: नोखा अनोखा सिद्ध हुआ। नोखा के इतिहास में ये पल स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गए।

सन्मति सही दिशा में ले जाती है

8 फरवरी 2025, भट्टड़ स्कूल प्रांगण, नोखा। 'उठ भोर भई टुक जाग सही' एवं **'हुक्मगणी का पाट हुआ है निहाल जी'** की मधुर ध्वनि में प्रभु एवं गुरुभक्ति प्रार्थना के साथ भक्तों का मन पावन बन गया।

प्रार्थना पश्चात् प्रवचन स्थल भट्टड़ स्कूल प्रांगण में आयोजित विशाल धर्मसभा में तो जैसे भक्तों का रेला उमड़ पड़ा। हजारों गुरुभक्त अपने आराध्यदेव की एक झलक पाने को आतुर नजर आ रहे थे। भगवन् के श्रीमुख से

आगमवाणी को अपने हृदय में उतारकर धर्म के मार्ग पर दृढ़ होने को संकल्पित भक्तजनों ने आचार्य भगवन् के आगमन के साथ ही संपूर्ण पंडाल को '**पधारजे घणी खम्मा**' के नाद से उल्लासमय बना दिया। इस विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए प्रशांतमना आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**सन्मति सही दिशा में ले जाने वाली होती है। सुमतिनाथ भगवान के चरणों में अर्पण क्यों करना? क्योंकि वे अविकारी हैं, मन को संतुष्टि देने वाले हैं। लोगों की भावना रहती है कि और मिल जाए, और मिल जाए। ऐसा किसी ने नहीं कहा कि अब आवश्यकता नहीं है। जैसे-जैसे लाभ बढ़ता है वैसे-वैसे लोभ बढ़ता है। लोभ तृष्णा पैदा करने वाला है। सुमतिनाथ भगवान के चरणों में यदि ध्यान है तो भीतर का कालुष्य दूर हो जाएगा। लोभ से बचाव के लिए धर्माराधना बताई गई है। एक दया और पौषध करेंगे तो मन में संतुष्टि आएगी, संतोष आएगा। इससे लोभ पर विराम लगेगा। यदि स्थानक में दया, पौषध करने में डर लगता है तो घर पर कर लो। घर पर एक पौषधशाला खोल लो, फिर ऐसा होगा कि सारे घर वालों को लाभ मिलेगा। माह में कम से कम एक दिन विश्राम लेते हैं? दया, पौषध होगा तभी विश्राम होगा। श्रावक के चार विश्राम स्थल बताए गए हैं - सामायिक, पौषध दया, साधु जीवन और संथारा-संलेखना। इससे मन की पवित्रता बढ़ेगी। दिमाग को भोग से विश्राम मिलेगा तो हमारी गति सही होगी। गति को सन्मति बनाने का लक्ष्य रखें।**''

श्री संजय मुनि जी म.सा. ने **'अहो अहो मेरे भगवन् सुहाने दर्शन हो'** संयम गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि राम गुरु के पावन चरणों में संयम भाव जगाकर अपने जीवन को सफल बनाएँ। साध्वी श्री सुमेधा श्री जी म.सा. ने **'गुरु राम रो दरबार म्हाने प्यारो लागै'** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि राम गुरु के अतिशय से छोटे-छोटे बच्चे घर-बार छोड़कर संयम मार्ग पर आगे बढ़ रहे हैं। आचार्य भगवन् के प्रति अटूट श्रद्धा होनी चाहिए। दीक्षाएँ प्रदान कर आचार्यश्री जी नए इतिहास का सृजन कर रहे हैं। साध्वी श्री निशांत श्री जी म.सा. ने **'अभिशमम्'** गीत के साथ फरमाया कि संसार 18 पापों का प्रोडक्शन हाउस है। संयम अपनाकर छहकाय जीवों को अभयदान दें।

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जैसा गुरु को पसंद है वैसा हम करें। इस साधना में अधिक से अधिक दया, संवर, पौषध करने का लक्ष्य रखें। गुरु आज्ञा का पालन ही सच्ची भक्ति है।

श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने **'जय राम गुरु री बोलो सा'** भजन प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि राम गुरु के चरणों में अधिक से अधिक धर्माराधना करने का भाव रखें। आचार्य भगवन् के 50वें दीक्षा दिवस के अवसर पर अधिकाधिक दया करें। कम से कम 1008 दया करने का लक्ष्य रखें, तुरंत ही सैकड़ों भाई-बहनों ने खड़े होकर दया करने का प्रत्याख्यान ग्रहण किया। प्रतिमाह एक दया करने का संकल्प भी कई भाई-बहनों ने लिया।

आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के पावन दर्शन-सेवा एवं विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन का लाभ कानून मंत्री अर्जुनराम जी मेघवाल, राज्यसभा सांसद लहरसिंह जी सिरोहिया एवं मोटिवेशनल स्पीकर राहुल जी कपूर (जैन) (बेंगलुरु) सहित हजारों गुरुभक्तों ने लिया।

महत्तम शिखर महोत्सव में 1008 से अधिक दया, 200 तेले एवं प्रचुर संख्या में सामायिक की आराधना

संयम भावों से भरे 50 वर्ष, समभाव, अहिंसा, दया धर्म से भरे 50 वर्ष, आत्मकल्याण, जनकल्याण, संघ उत्थान एवं जन-जन के कल्याण हेतु समर्पित किए 50 वर्ष

जिनके आभामंडल में जवाहर की किरणें प्रकाशमान हैं,
जिनकी आँखों में गणेश की शांति प्रवाहमान है।
जिनकी वाणी में नाना का हर्ष विराजमान है,
महावीर के सपनों का समाज ही जिनका अनुष्ठान है।
ऐसे राम गुरु के स्वर्णिम संयमी जीवन की आभा से,
जन-जन प्रकाशमान हैं, जन-जन प्रकाशमान हैं।।

9 फरवरी 2025, भट्टड़ स्कूल प्रांगण, नोखा। जन-जन की आस्था के केंद्र, परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के संयमी जीवन के यशस्वी 50 वर्ष पूर्णता दिवस पर गुरु सान्निध्य प्राप्त करने एवं एक झलक पाने के लिए देश-विदेश से श्रद्धालु उमड़ पड़े। समवसरण-सा अद्भुत दृश्य देखकर हर कोई स्वयं को धन्य-धन्य मान रहा था। गुरुभक्तों ने भावों से गुणगान कर कर्मनिर्जरा का अद्भुत लाभ लिया।

आज नोखा का दृश्य वास्तव में अनोखा ही प्रतीत हो रहा था। देशभर से पधारे गुरुभक्त भाई-बहनों का हुजूम पैदल ही विविध मार्गों से होते हुए प्रवचन स्थल पर पहुँच रहा था। नोखा संघ ने आगत अतिथियों के लिए वाहन आदि की विशेष व्यवस्था कर रखी थी। फिर भी अनेक जन इस सुविधा हेतु नोखा संघ मन ही मन धन्यवाद ज्ञापित कर स्वयं ही सहयोग कर रहे थे।

इस विशिष्ट पावन अवसर पर आयोजित आज की धर्मसभा में भट्टड़ स्कूल का विशाल पंडाल भी छोटा प्रतीत हो रहा था। देशभर से आगत गुरुभक्तों की विशाल उपस्थिति सभी को गौरवान्वित करने वाली थी। पंडाल से बाहर तक लोग खड़े होकर अमृतवाणी श्रवण का लाभ ले रहे थे। सैकड़ों लोग सामायिक वेशभूषा में प्रवचन श्रवण के साथ-साथ **सामायिक पारने का दोहरा लाभ** संकलित कर अपने जीवन को धन्यता से परिपूरित करने हेतु उत्साहित थे। विशेष दृश्य तो तब उपस्थित हुआ जब सामायिक वेशधारी गुरुभक्तगण लगातार पाँच घंटे तक बिना विशेष हिले-डुले एकदम स्थिर रहकर प्रवचन श्रवण कर भगवान की वाणी का सार संग्रहित कर रहे थे।

साधना के शिखर पुरुष आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''मनुष्य उत्सवप्रिय होता है। उत्सव से प्रेरणा लेता है। उत्सव उसके मन की चाह है।** 'सुमति चरण-रज आतम अर्पणा'। **यह उत्सव हमारे भीतर प्रकट होना चाहिए। बाहर का उत्सव छाया का रूप है। भीतर में जितना गहरा उत्सव होगा उसकी झलक बाहर निकल सकती है। भँवरे नकली फूलों पर नहीं आते, केवल असली फूलों से ही उनको पराग मिलता है। वैसे ही हमारे भीतर अपने आप उत्सव पैदा होना चाहिए। संयम वस्तुतः उत्सव है। उससे अपने जीवन की पहचान स्वयं ही हो जाती**

है। अपने जीवन का निर्माण उससे हो पाता है। संयम का पुष्प खिलना चाहिए। वह हमारे भीतर जितना खिलेगा हमारा मन उतना ही संतुष्ट होगा। भगवन् के दर्शन कर लेने के पश्चात् यह मन, ये आँखें अन्यत्र कहीं भी तृप्त नहीं होंगी। वस्तुतः वह छवि हमारी आत्मा की है। अन्यत्र देखने से अतृप्ति ही रहती है और भीतर कौतूहल पैदा होता है। यह अनुभव होना चाहिए कि अब कुछ भी अलग से प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं है। बात कहने में जितनी सरल व सहज है, अनुभव होना उतना सहज, सरल नहीं है। हमारी निगाहें बाह्य दृश्यों पर टिकी हुई हैं, किंतु हमें एक दिन आना वहीं है, यह हमारा लक्ष्य होना चाहिए। देखो मत, अभ्यास करते रहो। संयम ऊहापोह को शांत करने वाला है। अपने मन की लगाम अपने हाथ में आना ही संयम है। अब तक हमारा मन पाँच इंद्रियों के विषयों में फँसा हुआ है। हम जिधर चलाना चाहते हैं उधर चला जाता है। किंतु संयम आते ही मन फिर इंद्रियों के विषय की तरफ दौड़ नहीं लगाता। अनादिकाल से पाँच इंद्रियों के विषय हम ग्रहण करते रहे हैं, किंतु कभी भी तृप्ति नहीं मिली। धन बहुत कमाया, किंतु मन तृप्त नहीं हुआ। महत्तम महोत्सव के पीछे मूल भाव यह था कि हमारे भीतर अलौकिक ज्ञान प्रकट हो और हमारा मन संयम की ओर मुखर होकर बाह्य विषयों से दूर रहे। मोह, ममत्व से अपने आपको किनारे करें।

पूज्य गुरुदेव, जिनका महान उपकार रहा है। जिन्होंने सद्बोध दिया। अपनी छाया तले संयमी आत्मा का पोषण किया। लालन-पालन किया और अनुभव कराया कि संयम क्या होता है। वह दिन आज का था, इसलिए शायद यह प्रसंग बना। इसी मकरंद को प्राप्त करने के लिए अनेक आत्माएँ उपस्थित हुई हैं और होने को तत्पर हैं। इन दिनों में कई मुमुक्षु भाई-बहनों के अनुज्ञा-पत्र हुए हैं। वंदना भूरा (नोखा), कुमकुम तातेड़ (सरदारशहर)। कल जिनका आज्ञा-पत्र हुआ अंशिका एवं स्नेहा सुराणा (देशनोक), उनकी दीक्षा 20 अप्रैल 2025 के लिए स्वीकृत की जा रही है। मुस्कान सेठिया, प्रियंका सेठिया एवं गौरव नाहटा की दीक्षा के लिए पूर्व में ही 30 अप्रैल 2025 हेतु स्वीकृति दी जा चुकी है।'' गुरुमुख द्वारा हुई घोषणा से चारों ओर हर्ष का माहौल छा गया। गुरुभक्तों ने जय-जयकारों से संपूर्ण पंडाल को राममय बना दिया।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि ''**गुरु गुणों के महासागर हैं। उसमें से एक बूँद भी अगर जीवन में आचरित कर ली तो जीवन धन्य हो जाएगा।**''

श्री विनय मुनि जी म.सा. ने **'जब भी हो गुरुदेव के दर्शन समझो तीर्थ हो गया'** गीत के पश्चात् फरमाया कि बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी आचार्य श्री रामेश के 50वें दीक्षा दिवस का पावन अवसर हमारे समक्ष है। जहाँ सात पीढ़ी निष्कलंक होती है वहाँ आचार्य, उपाध्याय का जन्म होता है। आचार्य श्री रामेश ने आचार्य श्री नानेश के चरणों में अपने आपको सर्वतोभावेन समर्पित किया था। आप गंधहस्ती की तरह विचरण करें, यही हमारी शुभकामना है।

श्री संजय मुनि जी म.सा. ने **'अहो अहो मेरे भगवन्, सुहाने दर्शन हो'** गीत प्रस्तुत कर सबको भावविभोर कर दिया। श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने **'ऐसा अवसर मिला है मिलेगा कहाँ, जिनशासन मिला है मिलेगा कहाँ'** गीत के साथ फरमाया कि गुरु महाराज बहुत अच्छे हैं, पर आप लोग कैसे हैं? व्यसन से ग्रस्त तो नहीं हैं? खान-पान खराब तो नहीं है? शादियों में दिखावा, प्रदर्शन, आडंबर तो नहीं करते? श्रावक-श्राविका गुरु महाराज के हाथ व पैर हैं, अध्यक्ष-मंत्री मुँह हैं एवं चतुर्विध संघ गुरु महाराज की आँखें हैं। हमें तो बधाई का 'ब' एवं शुभकामनाओं का 'श' भी गुरुवर ने बोलना सिखाया है। सभा में उपस्थित हजारों भाई-बहनों ने फैशन के नाम पर कटी-फटी डिजाइन की ड्रेस या कपड़े पहनने का त्याग आचार्य भगवन् के मुखारविंद से ग्रहण किया।

श्री हर्षित मुनि जी ने **'यह संघ बगीचा महक रहा, गुरु राम का सिंचन अद्भुत है'** गीत प्रस्तुत किया। श्री मधुर मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि गुरु को लिखना और कहना संभव नहीं है। गुरु राम जैसे भीतर में हैं वैसे ही बाहर हैं। यूँ तो कहते हैं कि तेरे सिर पर ताज नहीं, लेकिन ऐसा कौन-सा दिल है जिस पर तेरा राज नहीं है। हमने सोचा केवल हम ही चाहते होंगे आपको, लेकिन आपको चाहने वालों का तो काफिला बहुत बड़ा है। दिल ने कहा शिकायत कर खुदा से, पर खुदा भी तेरा चाहने वाला निकला।

श्री इभ्य मुनि जी म.सा. ने **'स्वर्णिम शुभ वर्ष में शुभकामना, शुभकामना, बोलो राम, राम जय बोलो राम राम'** गीतिका प्रस्तुत की। श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जीवन में सबसे बड़ा महत्त्व मर्यादा का है। दुनिया में मर्यादा का पालन करने वाले दो ही राम हुए हैं। एक अयोध्या के श्रीराम और दूसरे मेरे गुरु राम। अंत में **'राम गुरु हैं जयकारी, दीक्षा जयंत सुखकारी'** गीत प्रस्तुत किया। श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. ने **'तूं सांचो, थारो सांचो है दरबार रे'** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि प्रशंसा सुनकर भी आचार्य भगवन् शांत रहते हैं। हम निंदा, प्रशंसा में समभाव रखें। श्री श्रुतप्रभ मुनि जी म.सा. ने आचार्य भगवन् के एकाग्रता, निर्लिप्तता आदि गुणों का प्रभावी विवेचन करते हुए फरमाया कि आचार्य भगवन् एक आसन में 5-7 घंटे लगातार बैठ सकते हैं। यह किसी आश्चर्य से कम नहीं है। घर में दो घंटा मुँहपत्ती लगाने का संकल्प कई भाई-बहनों ने लिया।

श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने **'आया कहाँ से कहाँ है जाना, ढूँढ़ ले ठिकाना'** गीतिका के पश्चात् फरमाया कि हम सभी राम गुरु का शासन पाकर निहाल हो गए। आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर की साधना बेजोड़ है। श्री अटल मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि महापुरुषों के सान्निध्य में अपने सुंदर भावों को आगे बढ़ाएँ।

श्री गगन मुनि जी म.सा. ने गुरुभक्ति भजन -

कृपा गुरुवर की हुई है मुझ पर, तब ही मैं चढ़ पाया चढ़ाई।
गुरुवर! आपके वचनों में है सच्चाई, तब ही मैं चढ़ पाया चढ़ाई।।

गान के साथ फरमाया कि जो कुछ भी हुआ है गुरुकृपा से हुआ है। गुरुकृपा के बिना कुछ भी संभव नहीं है।

श्री प्रणत मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हम धन्य-धन्य हैं, जो ऐसा माली पाया है। आचार्य भगवन् अपने तप-त्याग और संयम साधना से हम सभी को ऊँचाइयों पर ले जा रहे हैं। श्री चिन्मय मुनि जी म.सा. ने **'मेरे इस जीवन की बस एक तमन्ना है, तुम सामने हो और मेरे प्राण निकल जाएँ'** गीत प्रस्तुत किया।

साध्वी श्री मणामगंधा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि गुरुचरणों में पुण्य का सृजन होता है। आचार्य भगवन् नकारात्मक एवं सकारात्मक दोनों परिस्थितियों में समभाव में रहते हैं। साध्वी श्री सुविराज श्री जी म.सा. ने फरमाया कि गुरु की शिक्षा, गुरु के वचन अनमोल हैं। गुरु के हर वचन में रहस्य होता है। बस समझने वाला होना चाहिए। साध्वी श्री गुणसुंदरी जी म.सा. ने फरमाया कि भक्ति मन से होती है। भक्ति में दिखावा ना करें। हमारी भक्ति निष्काम होनी चाहिए। अन्य अनेक चारित्रात्माओं ने गद्य-पद्य में गुरुभक्ति से ओत-प्रोत सुंदर भाव व्यक्त किए।

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने कहा कि गुरुदेव! आप हमारे माता-पिता हैं। आपकी कृपा, आशीर्वाद हम सब पर हमेशा बना रहे। आप दीर्घायु हों यही मंगलकामना करते हैं। चतुर्विध संघ आपकी छत्रछाया में निरंतर प्रगति करे यही शुभेच्छा है।

महत्तम महोत्सव के राष्ट्रीय संयोजक ने कहा कि आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के आशीर्वाद से देश-विदेश में महत्तम महोत्सव के अंतर्गत अनेक कार्यक्रम श्रद्धा, भक्ति के साथ संपन्न हुए हैं। सभी के सहयोग के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। संघ मंत्री एवं महेश नाहटा ने आचार्य भगवन् के दिव्य गुणों से प्रेरणा लेने का निवेदन किया। इस पावन दिवस पर 1008 से अधिक दया, 200 तेले एवं दिनभर सामायिक, स्वाध्याय का क्रम जारी रहा। चार घंटा चली इस अलौकिक सभा में भक्तों की गुरु के प्रति अटूट श्रद्धा, भक्ति व समर्पणा की अद्भुत झलक देखने को मिली। ऐसा लग रहा था कि बस ऐसे ही यह कार्यक्रम चलता रहे। कभी संपन्न हो ही नहीं। सभी गुरुभक्त यही गुनगुना रहे थे कि **'गुरु के मिले चरण कि मेरे रोम खिल गए'**। तप-त्याग के अनेक प्रत्याख्यान हुए।

दोपहर में श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने संघ के संविधान पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। आचार्य भगवन् ने महत्तम जिज्ञासा कार्यक्रम में श्रद्धालुओं की जिज्ञासाओं के अत्यंत सुंदर व सारगर्भित समाधान दिए। समवसरण-सा अद्भुत दृश्य परिलक्षित हो रहा है।

7-8-9 फरवरी 2025 को श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा विभिन्न आयोजन भी संपन्न हुए। आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर सहित चारित्रात्माओं का प्रेरक मार्गदर्शन सभी को प्राप्त हुआ। आचार्य भगवन् की जीवनी पर आधारित महत्तम दिव्य प्रदर्शनी 'A Viewing Art Gallery' का हजारों श्रद्धालुओं ने दिग्दर्शन कर आचार्य भगवन् के जीवन को नजदीक से जाना। यहाँ आचार्यदेव के जीवन के कई अनछुए पहलुओं को नजदीक से जानकर लोग आश्चर्यचकित हुए बिना नहीं रह सके। इससे एक नई प्रेरणा, एक नई ऊर्जा सभी को प्राप्त हुई। रात्रि में महापुरुषों के सान्निध्य में ज्ञानचर्चा का आयोजन हुआ।

गुरु का हाथ पकड़ लें

माह में एक दया अवश्य करें

10 फरवरी 2025, जैन जवाहर भवन, नोखा। प्रात:कालीन प्रार्थना में प्रभु एवं गुरुभक्ति की गई। तत्पश्चात् आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि मन सबके पास है। मैं हूँ, मेरा अस्तित्व है, ये सबको पता है। हम कब लुप्त हो जाएँगे, नहीं पता। आप आज हैं, कल का पता नहीं। कब क्या हो जाए, कुछ कहा नहीं जा सकता। फिर भी दीक्षा के भाव क्यों नहीं आ रहे? धन, परिवार कभी साथ जाने वाले नहीं हैं। मोह सबसे ज्यादा बाधक है। पद-प्रतिष्ठा पकड़कर बैठे हैं। जब तक बुढ़ापा न आ जाए, रोग शरीर को घेर न लें, इंद्रियाँ शिथिल न हो जाए, उससे पूर्व धर्माराधना कर लेनी चाहिए। गुरु का हाथ पकड़ लें। माह में एक दया अवश्य

करें और अपने बारे में आत्मचिंतन करें। बिना सामायिक किए मुँह को जूठा न करें। गाँव में रहते हुए संत-सतियाँ जी के दर्शन अवश्य करें। रामध्वनि पुस्तक का पठन करें। अपनी एक प्यास कच्चे पानी से न बुझाएँ। गुरुचरणों में त्याग, नियम, पच्चक्खाण की भेंट अवश्य चढ़ाएँ।

श्री अटल मुनि जी म.सा. ने टीवी, मोबाइल से दूर रहने व आगमों का स्वाध्याय करने की अद्भुत प्रेरणा दी। साध्वी श्री लक्ष्यप्रभा जी म.सा. ने रामराज में अधिकाधिक धर्म-ध्यान, तप-त्याग करने की प्रेरणा दी।

आचार्य भगवन् ने असीम कृपा कर मंगलपाठ प्रदान किया। श्री गगन मुनि जी म.सा. ने अपना 11वाँ मासखमण पूर्ण कर पारणा सानंद संपन्न किया। आपने पूर्व में 1 से 21 तक की लड़ी, 100 तेला, 6 अठाई, 7 उपवास 3 बार, 9 उपवास 2 बार, दो वर्ष एकांतर आदि कई तप किए हैं। कई भाई-बहनों ने प्रतिदिन एक घंटा मौन रहने के संकल्प लिए। अन्य विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। देशनोक संघ की ओर से जयपाल जी मारू ने चातुर्मास प्रदान करने हेतु छत्तीस कौम की ओर से आचार्य भगवन् के प्रति अहोभाव व्यक्त किए। '**लोच में क्या सोच**' कार्यक्रम के अंतर्गत कुछ भाइयों ने कायाक्लेश तप किया। कई भाई-बहनों ने दो साल से चल रहे महत्तम एकांतर तप को अक्षय तृतीया तक बढ़ाने के प्रत्याख्यान लिए। दोपहर में महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि धार्मिक कार्यक्रम हुए।

जन्म-मरण बढ़ाने वाले कार्य नहीं करें

11 फरवरी 2025, जैन जवाहर भवन, नोखा। 'सुबह और शाम की प्रभुजी के नाम की फेरो एक माला' एवं **'गुरु राम की महिमा गाएँगे'** गीतों के साथ प्रात:कालीन प्रार्थना में अद्भुत आनंदानुभूति हुई। तत्पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा में उपस्थित गुरुभक्तों को धर्म की पावन गंगा से सराबोर करते हुए परम प्रतापी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि ''**दो दृष्टिकोण हैं। एक है धन बढ़ाना, परिवार बढ़ाना, यश:कीर्ति बढ़ाना एवं दूसरा है मन तृप्त होना। एक भी नरक हमने नहीं छोड़ा जहाँ वेदना ना पाई हो, लेकिन हमें अब भी ज्ञान नहीं हुआ। हमारा सही विकास तब होगा जब हमारी संतुष्टि बढ़ेगी। कई बार ज्यादा खाने पर भी तृप्ति नहीं होती। खाना कितना भी खाएँ, तृप्ति बहुत जरूरी है। जो जन्म-मरण को बढ़ाने वाला है, वैसा कोई भी कार्य नहीं करना। भीतर में कैसे प्रवेश करें इस पर चिंतन करें। कोई भी घूमना चाहता है तो वह गाइड साथ में लेकर घूमता है। सिद्ध भगवान सिद्ध क्षेत्र में विराजमान हैं। वे सीधा गाइड नहीं करते। जितने भी अरिहंत हैं वे दीक्षित होने से पहले सिद्ध भगवान की शरण ग्रहण करते हैं। तीर्थंकर भगवान कहते हैं, 'नमो सिद्धाणं'। उनका तो सिद्ध बनना निश्चित है। हमारा नमन जितना गहरा होगा वह उतनी ही ऊर्जा खींचने में समर्थ होगा। तिक्खुतो के पाठ से वंदना करते हैं। भावों से हमारा भाव वहाँ से टकराता है और टकराकर वापस आता है। वो वेग हमारे कर्मों की प्रबल निर्जरा कराता है। हमारे भीतर वेग होगा तो कचरा निकल जाएगा, नहीं तो रुक जाएगा। अतीत का प्रतिक्रमण करें। वर्तमान में संवर करें और भविष्य के लिए पच्चक्खाण करें।**''

श्री अटल मुनि जी म.सा. ने **'वामा देवी के प्यारे, तुम अश्वसेन के दुलारे'** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि महापुरुषों का सान्निध्य पाकर अगर हमारे जीवन में परिवर्तन नहीं आता है तो हमारा यह दुर्लभ मानव जीवन

असफल हो जाता है।

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने **'राम गुरुवर तेरे जीवन को करते हैं शत-शत नमन'** गीत के साथ फरमाया कि गुरु पद की महिमा अपरंपार है। गुरु जीवन की नैया को पार लगाने वाले हैं। साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। शिखर उपासक में पाँच नियम वीर माता **रत्नी बाई सुराणा** (नोखा) ने ग्रहण किए।

संथारा साधिका साध्वी श्री सांत्वना श्री जी म.सा. का पंडितमरण

संयमित, मर्यादित जीवन से शांति एवं समाधि की प्राप्ति संभव

12 फरवरी 2025, जैन जवाहर भवन, नोखा। भोर की मधुर वेला में प्रभु एवं गुरुचरणों में समर्पित प्रार्थना के पश्चात् जैन जवाहर भवन में आयोजित प्रवचन सभा में परमागम रहस्यज्ञाता, उत्क्रांति प्रदाता, परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने उपस्थित सैकड़ों गुरुभक्तों को भगवान महावीर की वाणी का सार बताते हुए अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**साधु हो या श्रावक, जो व्रत धारण करते हैं, वे वीर हैं। जिसने सम्यक् रत्न प्राप्त कर लिया, वह वीर है। शांति समाधि के लिए जीवन को संयमित और मर्यादित करना होगा। हमें वस्त्रों की मर्यादा करनी चाहिए। रोज नई साड़ी खरीदें तो उसकी मनाही नहीं है, पर जब भी नई साड़ी खरीदेंगे तो एक कोई पुरानी साड़ी निकालेंगे।**'' कई बहनों ने 100 से अधिक साड़ियाँ नहीं रखने एवं कई भाइयों ने 50 से अधिक ड्रेस नहीं रखने का संकल्प आचार्य भगवन् के श्रीमुख से ग्रहण किया।

इसी बीच संथारा साधिका साध्वी श्री सांत्वना श्री जी म.सा. का चौविहार संथारे सहित पंडितमरण के समाचार प्राप्त होने पर आचार्य भगवन् ने आगे फरमाया कि ''**मेरा कोई नहीं है। जीव अकेला आया था और अकेला ही जाएगा। महासती श्री सांत्वना श्री जी म.सा. के संथारे के 19वें दिन संथारा-संलेखना सीझने के समाचार प्राप्त हुए। आपने तीनों मनोरथों को पूर्ण किया। वे तपस्याओं में प्रसन्न रहते थे। उन्होंने कई तपस्याएँ कीं और जीवन के अंतकाल को नजदीक जानकर संथारा-संलेखना धारण कर मोक्ष की ओर गमन किया। संथारा यानी शरीर के प्रति आसक्ति कम करना। शरीर की आसक्ति कम नहीं होगी तो खाने की लालसा बनी रहेगी। साधु के लिए भोजन संयम निर्वाह के लिए होता है। जो क्षुधा का भेदन करे, वह भिक्षु कहलाता है। साध्वीश्री जी की दीक्षा की तीव्र भावना थी। दस वर्ष तक संयम का पालन किया, फिर संथारे के 19वें दिन अपना तीसरा मनोरथ पूर्ण किया। काम, क्रोध, ईर्ष्या, डाह, ये असमाधि पैदा करने वाले होते हैं। जिसने अपने आपको जीत लिया, वह सच्चा वीर है। हम भी प्रेरणा लें कि वह दिन मेरा धन्य होगा जिस दिन आरंभ-परिग्रह का त्याग करूँगा। अभी हमारा मन घटाने का नहीं हो रहा है, लेकिन मन को समझा लिया तो कोई समस्या नहीं रहेगी।**''

श्री अटल मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि सुख के लिए कहीं भटकने की जरूरत नहीं है। हमारे अंदर ही सुख है। गुरु की शरण में आकर आत्मतत्त्व की पहचान करें और सच्चा सुख प्राप्त करें।

शासन दीपिका साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री मनोरमा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने **'तेरी साधना को झुकती है मेरी आत्मा'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। अंत ने सभी ने चार-चार लोगस्स का ध्यान कर संथारा साधिका जी को श्रद्धाभाव अर्पित किए।

संथारा साधिका साध्वी श्री सांत्वना श्री जी म.सा. को भावांजलि

13 फरवरी 2025, जैन जवाहर भवन, नोखा। 'वीर जिनेश्वर सोई दुनिया जगाई तूने राम गुरु गुण गाना है' गुरुभक्ति गीत के साथ प्रार्थना से संपूर्ण वातावरण भक्तिमय बन गया। तत्पश्चात् आयोजित धर्मसभा में संथारा साधिका साध्वी श्री सांत्वना श्री जी म.सा. को श्रद्धांजलि देते हुए एवं उपस्थित अपार जनमेदिनी को आगम एवं तत्त्वों के सार रूप प्रशांतमना, व्यसनमुक्ति प्रणेता आचार्य भगवन् ने अपने अमृतवचनों में फरमाया कि ''**श्रावक के तीन मनोरथ होते हैं – (1) श्रुतज्ञान की प्राप्ति – ज्ञान होगा तो चेतना पवित्र पथ पर आगे बढ़ पाएगी और यदि ज्ञान नहीं होगा तो जीवन साधना के पथ पर नहीं बढ़ पाएगा, व्यर्थ चला जाएगा। संथारा साधिका जी का दीक्षा से पहले भी परिवार में कम ही बोलना होता था और दीक्षा के बाद उन्होंने अपने जीवन को मौन में लगाया। (2) एकल विहार – संघ में विचरण करना। गुरु की आज्ञा लेकर एकल विचरण करना। किसी से दोस्ती भी नहीं, तो दुश्मनी भी नहीं। यही भाव रहे कि समुदाय में रहकर अपने चित्त को घनीभूत नहीं करना। इसी प्रकार महासती जी ने आठ प्रकार के गुण विकसित कर लिए थे। (3) अन्न-जल त्यागूँ – वह दिन धन्य होगा जिस दिन इस शरीर का त्याग करूँगा। साध्वी श्री प्रथमा श्री जी म.सा. मुख्य रूप से नियुक्त थीं। साधु के तीन मनोरथ होते हैं, लेकिन संथारा साधिका जी के चार मनोरथ थे। चौथा था बेटे और पोते की दीक्षा। परिवारजन जब भी उनके दर्शन करने आते तो म.सा. बोलते कि पोते का आज्ञा-पत्र कब करवा रहे हो? कीचड़ में फँसना सरल है, किंतु निकलना बहुत कठिन है। तकलीफ होनी जरूरी है। हम प्रेरणा लें संथारा साधिका साध्वी श्री सांत्वना श्री जी म.सा. एवं संथारा साधिका साध्वी श्री रामप्रेम श्री जी म.सा. से। ऐसा भाव बनाएँ कि मुझे भी उस दिशा में कब आगे बढ़ाना है। भावना आती रहेगी तो हम भी एक दिन कीचड़ से निकल सकेंगे।**''

श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि उत्तराध्ययन सूत्र में दो प्रकार के मरण बताए हैं – सकाम मरण और अकाम मरण। अनंतानंत जीव बिना इच्छा के ही मर जाते हैं। ऐसे प्रसंग पर यह भावना भाएँ कि हमें भी संथारा आए। अंतिम समय के क्षणों को हम भी साध पाएँ।

श्री चिन्मय मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जब भी दर्शन देने-जाते थे तो केवल मौन ही रहते थे। चित्त में सदैव समाधि भाव रहा। इतने सजग थे कि कभी असमाधि के भाव नहीं आने दिए। साध्वी श्री ज्योत्सना श्री जी म.सा. ने पूछा कि आपको संथारा करवा दें? तो साध्वी श्री सांत्वना श्री जी म.सा. ने गर्दन हिलाकर स्वीकृति दी और पूर्ण सजगता के साथ संथारे के प्रत्याख्यान ग्रहण किए। जैसे ही ज्ञात हुआ कि उनके सांसारिक पौत्र चाहत जी कोठारी का आज्ञा-पत्र हो गया है तो उन्हें हर्षानुभूति होने लगी।

साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा. ने **'दिन-रात मेरे स्वामी यह भावना मैं भाऊँ, देहांत के समय मैं तुमको न भूल पाऊँ'** संथारा गीत प्रस्तुत किया। साध्वी श्री लक्ष्यप्रभा जी म.सा. ने गीत के साथ फरमाया कि उन्होंने जिस उद्देश्य से संयम ग्रहण किया, उस उद्देश्य को सिद्ध कर लिया।

शासन दीपिका साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री मनोरमा श्री जी म.सा., साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री लक्ष्यप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री गुणसुंदरी जी म.सा., साध्वी श्री प्रभावना श्री जी म.सा., साध्वी श्री मणामगंधा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरभि श्री जी म.सा., साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा., साध्वी श्री रिभिता श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

श्री नि:श्रेयस मुनि जी म.सा. ने **'रोम-रोम से निकले गुरुवर नाम तुम्हारा'** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि संसार में जहाँ सुख समझ रहे हैं, वह क्षणभर का सुख है। संयम में जो सुख है, वह अपार सुख है। शास्त्रकारों ने फरमाया है कि संसार दु:खों का महासागर है।

आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके **20 अप्रैल** के **दीक्षा प्रसंग** हेतु साधुमर्यादा में रखे जाने वाले सभी आगारों सहित **गंगाशहर-भीनासर संघ** के लिए उद्घोषणा की। चारों ओर हर्ष की लहर दौड़ पड़ी। इस अवसर पर गंगाशहर-भीनासर निवासी संघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं संघ अध्यक्ष-मंत्री आदि ने आचार्य भगवन् के प्रति अहोभाव व्यक्त किए।

संथारा साधिका साध्वी श्री सांत्वना श्री जी म.सा. के पंडितमरण पर उनके सांसारिक परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर अनेक त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण किए। सुश्राविका मोहिनी देवी पुगलिया धर्मसहायिका सुगनचंद जी पुगलिया तथा धापू देवी सोनावत के निधन पर उनके परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। प्रतिदिन 15 मिनट स्वाध्याय करने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया। 60 से अधिक नवयुवकों ने संवर किया।

सम्यक् दर्शन से होता है भीतर का बोध

14 फरवरी 2025। प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना में **'अरिहंत सिद्ध प्रभु की जय बोलो, राम गुरु की जय बोलो'** भक्ति भजन के स्वर मुखरित हुए। तत्पश्चात् आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए जिनशासन प्रद्योतक आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि **''चश्मा आँख पर क्यों लगाया जाता है? ताकि साफ दिखे, सही दिखे अथवा जैसा हो वैसा दिखे। चश्मा सही नंबर वाला होना चाहिए। जैसे बाह्य पदार्थों को देखने के लिए चश्मा चाहिए वैसे ही सम्यक् दर्शन हमारे भीतर का बोध कराता है। ज्ञान दो प्रकार का है - व्यावहारिक एवं आत्मिक। ये भेद रेखा उस सम्यक् दर्शन से ज्ञात हो सकती है। बाहर का सारा ज्ञान कोई फायदा नहीं देता। एक आत्मानुभूति कर लें तो सही ज्ञान हो जाता है। आत्मा क्या है? जड़ क्या है? पुण्य-पाप क्या है? धर्म और पुण्य में अंतर है। पुण्य भी जीवन को पवित्र बनाता है। धर्म जीवन को संस्कार प्रदान करता है। आने वाले कर्मों को रोकना संवर है। सर्व संवर 14वें गुणस्थान में होता है। 32 सिद्धांत जिस पर पूरा जिनशासन खड़ा है। शुभ योग में चलेंगे तो पुण्य का अर्जन होगा। सही कर्म करेंगे तो पुण्य होगा। मुफ्त का धन अकर्मण्य बना देता है। तीर्थंकर धर्म की पोशाक में आज भी किसी गाँव में चले जाओ, उसकी साख है। किसी जन्म का पुण्य फल होगा तो हमें संतों का सान्निध्य प्राप्त होता है। संगम ने**

खीर बहराकर इतना पुण्य संचय किया कि देवलोक से 33 पेटियाँ प्रतिदिन उतरती थीं उसके लिए। ये जीवन लाखीणा है। आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. ने फरमाया है कि पैसे को सिर पर मत चढ़ाओ। सिर पर धर्म रहेगा तो धोखा नहीं खाओगे और धन को चढ़ाओगे तो धोखा खाओगे। धर्म का बीज बोओगे तो जीवन सफल होगा।''

श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने **'जिनशासन मिला है मिलेगा कहाँ'** भावगीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि विज्ञान और डॉक्टर की बात मानते हैं, पर भगवान की बात नहीं मानते। हर कार्य यतना और विवेक से करें। 14 नियम चितारने से लाभ ही लाभ होगा। हर दृष्टि से होगा।

श्री समिधा श्री जी म.सा. ने **'गुरुवर थांरै चरणां में वंदन सौ-सौ बार'** गीत के साथ फरमाया कि लोहे का अग्नि से भरा गोला पहाड़ से लुढ़कता हुआ अनंतानंत जीवराशि को भस्मीभूत कर देता है। वैसे ही यह संसार एक लोहे का गोला है। यहाँ जो रहता है वह लोहे के गोले का स्पर्श करके जीवन को खो देता है और जो स्पर्श नहीं करे वो जीव बढ़ जाता है। हमें आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर का सहारा मिला है। आज वेलेंटाइन डे है। हमें सभी प्राणभूत जीवों से प्रेम करना है।

शासन दीपिका साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा. **'देशाणे का हीरा चमका है चारों ओर'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। संघ मंत्री ने त्याग-प्रत्याख्यान की प्रेरणा दी। श्री मधुर मुनि जी म.सा. ने 9 अप्रैल को विश्व नवकार दिवस पर कम से कम 9 माला फेरने की प्रेरणा दी। अनेक भाई-बहनों ने इस हेतु प्रत्याख्यान ग्रहण किए।

समर्पण में तर्क नहीं

15 फरवरी 2025। प्रात: मंगलमय प्रार्थना **'हे प्रभु पंच परमेष्ठी दयाला'** एवं **'मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान'** भक्ति भजन के साथ हुई। तत्पश्चात् आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए दया एवं करुणा के सागर परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''समर्पणा में विरले ही आनंद ले पाते हैं। जहाँ अपना सर्वस्व समर्पण कर दिया जाता है वहाँ हम परिपूर्ण बन जाते हैं। पानी की बूँद समुद्र में मिलने से समुद्र बन जाती है। अनन्य भाव पैदा हो जाता है तो जीवन अनन्य बन जाता है। जो परमात्मा है वो तुम और तुम जो हो वो परमात्मा। दोनों में कोई भेद नहीं है। वो अद्भुत घड़ी हमारे जीवन में कब आएगी, यह पुरुषार्थ होना चाहिए। किस समय हम विलीन हो जाएँ कुछ पता नहीं। उस समय ऐसा घटित होता है जो अद्भुत होता है। इसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। मृगावती भगवान महावीर में एकाकार हो गई और महावीर ही बन गई। चंदनबाला ने उपालंभ दिया तो मृगावती जी ने कहा 'तहत्ति'। हम भी कुछ बचा के रखेंगे तो उपालंभ लगेगा। नहीं बचाएँगे तो उपालंभ नहीं लगेगा। तर्क, तथ्य को उजागर करने के लिए आत्मा को परमात्मा बनाने वाला बनेगा और दूसरा तर्क भटकाने वाला बनेगा। शास्त्रकार कहते हैं, समर्पणा में कोई तर्क नहीं होता। समर्पणा में अपनी मति का कोई उपयोग नहीं करना चाहिए। यह बात समझ आ जाएगी तो अद्भुत घटेगा। विभीषण को रावण ने निकाल दिया कि तुम राम के गुणगान कर**

रहे हो। विभीषण पहुँचे राम के पास। राम के योद्धा उसे पैनी निगाह से देख रहे थे। योद्धाओं ने सोचा यह भेदिया है। भेद लेने आया होगा। इसे हमारे यहाँ नहीं रखना चाहिए। राम ने मिट्टी उठाई और विभीषण के तिलक कर दिया। धर्मनीति में राजनीति काम नहीं आती। राजनीति में दिमाग ज्यादा काम करता है और धर्मनीति में दिल ज्यादा काम करता है। दिल है हमारे जीवन की राजधानी। आचार्य श्री नानेश फरमाते थे कि जो साधु-साध्वी कोसों दूर हैं और यदि वे भगवान महावीर की आज्ञा अनुसार पालना करते हैं तो वे मेरे दिल में हैं। आज्ञा पालन बिना समर्पणा नहीं हो सकती। दिल का मिलान बहुत जरूरी है। शरीर भिन्न भले ही हो। गर्व विकार का एक अंग है। विकार से बचना जरूरी है। उसके बिना कल्याण संभव नहीं है।''

श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि चाहे कैसी भी परिस्थिति आ जाए समभाव में रहना चाहिए। श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि भगवन्! आपका था, आपका हूँ और आपका ही रहूँगा। साध्वी श्री समिधा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर का जीवन और शिक्षा ही हमारे आगम हैं।

शासन दीपिका साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। हेमलता जी बाँठिया ने 51 उपवास के प्रत्याख्यान लिए। अनोखी नगरी नोखा धर्ममय, राममय बन गई। चतुर्विध संघ का अपूर्व ठाट लगा हुआ है।

मुमुक्षु बहन कृतिका जी देशवाल का शानदार अभिनंदन

सिद्धों की आत्मा से मेरा तार मिल गया।
ओ वीतराग भाव, ओ वीतराग भाव,
ओ शुद्ध स्वभाव से मेरा तार मिल गया।।

सेठिया धार्मिक भवन, नोखा। दीक्षा आत्मा की आवाज है। इसी कड़ी में आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के सान्निध्य में जैन भागवती दीक्षा ग्रहण करने हेतु अग्रसर होने वाली वीर बाला, अध्यात्म पथ साधिका 26 वर्षीय **मुमुक्षु सुश्री कृतिका जी देशवाल** सुपुत्री नंदकिशोर जी-ममता देवी देशवाल (बंगईगाँव/देशनोक) का श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ एवं श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मंडल, समता युवा संघ, समता बालिका मंडल, नोखामंडी, अलाय, पूर्वोत्तर के श्री साधुमार्गी जैन संघ, सिलचर, गुवाहाटी, बंगईगाँव आदि संघों द्वारा नयनाभिराम समारोह में शानदार अभिनंदन किया गया।

मुमुक्षु बहन इंजीनियर कृतिका देशवाल बेंगलुरु में लाखों के पैकेज की जॉब छोड़कर वैराग्य जीवन धारण करने जा रही है। मात्र 6 महीने का वैराग्य काल और संयम शतम में 50वीं दीक्षा में अपना नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित करने जा रही है। आपके आदर्श त्याग को जिसने भी जाना वही नतमस्तक हो गया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में मंगलाचरण समता बालिका मंडल एवं स्वागत गीत समता महिला मंडल ने सुमधुर स्वरों में प्रस्तुत किया। स्वागत उद्बोधन देते हुए स्थानीय संघ अध्यक्ष ने कहा कि विराट दीक्षा महोत्सव एवं महत्तम शिखर महोत्सव 7-8-9 फरवरी को संपन्न होने के पश्चात् गुरुकृपा से पुन: दीक्षा महोत्सव का स्वर्णिम प्रसंग प्राप्त हुआ है। मुमुक्षु परिवार ने नोखा संघ को यह अवसर प्रदान कर महान उपकार किया है।

अभिनंदन-पत्र के पठन पश्चात् पूर्वोत्तर अंचल की ओर से गणमान्य महानुभाव ने अपने भावोद्गार में कहा कि आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में दीक्षाओं का ठाट लग रहा है। पूर्वोत्तर अंचल में महापुरुषों की कृपा से चारित्रात्माओं द्वारा निरंतर धर्म प्रभावना की जा रही है। पूर्वोत्तर अंचल के देशवाल परिवार की लाडली इंजी. कृतिका जी रामेश शासन में समर्पित होकर जिनशासन को दैदीप्यमान करेंगी। अन्य अनेक वक्ताओं ने गद्य-पद्य में भावाभिव्यक्ति दी।

महेश नाहटा ने आचार्य भगवन् के अतिशय का जिक्र करते हुए दीक्षार्थी बहन का परिचय दिया। मुमुक्षु बहन ने अपनी भावाभिव्यक्ति में कहा कि अध्यात्म में और संयम में सच्चा सुख है। महापुरुषों एवं चारित्रात्माओं के संपर्क में आने के बाद जीवन का सच्चा स्वरूप समझ में आया। संयम के भाव जगे तो पारिवारिकजनों ने सदैव ही सहयोग दिया। इसके लिए मैं सदैव उनकी ऋणी रहूँगी।

तत्पश्चात् मुमुक्षु बहन, वीर माता-पिता नंदकिशोर जी-ममता जी देशवाल, वीर दादा ताराचंद जी देशवाल, वीर नाना-नानी दुलीचंद जी-अमरा देवी चोरड़िया, वीर भाई निश्चय देशवाल आदि परिजनों का स्वागत-अभिनंदन सभा में उपस्थित विविध संघों के पदाधिकारियों द्वारा शॉल, माला, तिलक एवं अभिनंदन-पत्र भेंट कर किया गया। सभा में **'संयम के भाव आज जगे, मेरे नाम के आगे राम लगे'** के स्वर गुंजामयान होते रहे। नोखामंडी महिला समिति मंत्री ने इस दीक्षा महोत्सव को स्वर्णिम अवसर बताया। संघ मंत्री ने आभार ज्ञापन किया। इस अवसर पर केंद्रीय संघ एवं स्थानीय संघ सहित अनेक स्थानों से पधारे गणमान्यजनों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

इंजीनियर वीर बाला चली संयम पथ की ओर

नोखा में मुमुक्षु कृतिका जी की जैन भागवती दीक्षा संपन्न

धन्य है तेरी वीर जननी, जिसने तुझको जनम दिया।
धन्य है पिता तुम्हारे जिनशासन को एक रत्न दिया।।

16 फरवरी 2025, जैन जवाहर भवन, जैन चौक, नोखा। बेंगलुरु में लाखों रुपए के पैकेज की जॉब छोड़, मोहमाया एवं आधुनिक सुख-सुविधाओं को ठोकर मारकर इंजीनियर वीर बाला संयम पथ पर बढ़कर दुधिया सफेद वस्त्रों के साथ सभी के लिए गौरव एवं आदर्श का विषय बन गई। युगनिर्माता, युगपुरुष आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में 26 वर्षीय मुमुक्षु सुश्री कृतिका जी देशवाल सुपुत्री नंदकिशोर जी-ममता देवी देशवाल (बंगईगाँव/देशनोक) की जैन भागवती दीक्षा अपार जनमेदिनी की उपस्थिति में उल्लासमय वातावरण में संपन्न हुई।

आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर ने संयमी जीवन की महत्ता एवं अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह की हृदयस्पर्शी व्याख्या फरमाई। नवीन नामकरण **नवदीक्षिता साध्वी श्री रामकृति श्री जी म.सा.** की घोषणा के साथ ही सभी ने आचार्य भगवन् एवं दीक्षा के महत्त्व को रेखांकित करते हुए जयघोष किया। केशलुंचन का कार्य शासन दीपिका साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा. के करकमलों से पूर्ण हुआ। इसी के साथ नौ नवदीक्षित चारित्रात्माओं की बड़ी दीक्षा (छेदोपस्थापनीय चारित्र) भी सोल्लास संपन्न हुई। **23 फरवरी** को **कांकरिया चौक, नोखा** में **नवदीक्षिता साध्वी श्री रामकृति श्री जी म.सा.** की **बड़ी दीक्षा** संभावित है।

तपस्या सूची

संत-सती वर्ग

श्री गगन मुनि जी म.सा.	30 उपवास	श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा.	5 उपवास
श्री किशोर मुनि जी म.सा.	11 उपवास	श्री इभ्य मुनि जी म.सा.	8 उपवास (20वीं अठाई पूर्ण)
श्री मुक्तेश्वर मुनि जी म.सा.	7 उपवास	श्री रामवीर मुनि जी म.सा.	9 उपवास
साध्वी श्री लक्ष्यप्रभा जी म.सा.	11 उपवास	साध्वी श्री जीतयशा जी म.सा.	11 उपवास
साध्वी श्री वंदना श्री जी म.सा.	5 उपवास	साध्वी श्री रामकेतु श्री जी म.सा.	9 उपवास
साध्वी श्री रामनिधि जी म.सा.	10 उपवास		

श्रावक-श्राविका वर्ग

आजीवन शीलव्रत	दुलीचंद जी-रुण देवी लूणिया, पारमल जी-प्रमोद जी चोरड़िया-डोंगरगढ़, राजेंद्र कुमार जी-शांति देवी संकलेचा, भागचंद जी-राजश्री जी चोरड़िया-राजनांदगाँव, विनोद जी-सुशीला जी सेठिया-नोखा मंडी, रमेश जी मीणा-पलारिया, मनोज जी चोरड़िया-नोखा, कमल जी-अल्का जी लुणिया-अंजड़, रामलाल जी-सरोज देवी चोरड़िया-नोखा मंडी, विनोद जी सुशीला जी-नोखा/बेल्लारी, अशोक जी-किरण जी सेठिया-झझू/गुवाहाटी, विनोद कुमार जी-राजश्री जी फलोदिया-गंगाशहर, झंवरलाल जी-कंचन देवी आँचलिया-दिल्ली, संतोष जी रेखा जी जैन-जगदलपुर, हितेश जी-जयश्री जी सिपानी-सूरत, पूनमचंद जी-पुष्पा जी बोथरा-नोखा, सागर जी-प्रमिला जी शर्मा-नोखा, कोमल जी-कंचन जी आँचलिया-बेगूँ, प्रकाश जी-रचना जी आँचलिया-बेगूँ, अशोक जी-ममता जी आँचलिया-बेगूँ, अजीत कुमार जी-स्नेहलता जी मेहता-बड़ीसादड़ी, गोपालराम जी मेघवाल-देशनोक, नारायण जी चारण-देशनोक, अशोक जी-किरण जी सेठिया-झझू, झंवरलाल जी-कंचन जी आँचलिया-दिल्ली, बाबूलाल जी बोथरा-उदयरामसर, बाबूलाल जी-कंचन जी डागा-गंगाशहर, भंवरलाल जी-सुमन देवी बुच्चा-नोखा मंडी, राजेंद्र जी-पायल जी-चेन्नई
वर्षीतप	प्रीति जी सुराणा-सूरत, इंदिरा जी मेहता, सरिता जी दलाल-बड़ीसादड़ी, आशा जी मेहता-बड़ीसादड़ी
उपवास	**51 –** हेमलता जी बाँठिया (गतिमान), **36 –** सुश्री वंदना जी भूरा, **15 –** सुंदर बाई संचेती (मासखमण के प्रत्याख्यान), **11 –** राखी जी बैद, **9 –** चांदरतन जी डागा, भारती देवी लूणिया, संतोषा देवी संखलेचा, वीर माता गुलाब देवी कांकरिया, ज्ञानी देवी भूरा, **8 –** कैलाश जी सांखला, तमन्ना जी बोहरा, प्रेरणा जी संचेती
मासखमण	पारस जी पिरोदिया, विमल जी मांडोत
पक्की नवकारसी	**एक वर्ष –** पूनमचंद जी सुराणा-सूरतगढ़
एकासना	**आजीवन –** राजेश जी लूणावत-चेन्नई

आचार्य भगवन् के 50वें दीक्षा दिवस पर गुरुभक्तों द्वारा ग्रहण किए गए प्रत्याख्यान

पौषध का तेला	कंचन जी आँचलिया–दिल्ली
गाथाओं का जाप	**11 लाख –** प्रतिभा बोथरा–रायपुर, प्रभा जी संचेती–अमरावती
	5 लाख – तारा देवी पारख–नयापारा राजिम
	2 लाख – शौकिन जी मुणोत–नीमच
	सवा लाख एवं एक वर्ष में नंदी सूत्र कंठस्थ – नीलम जी बुच्चा, सूरत
	51 हजार – निधि बुच्चा–सूरत
पक्खी पर आजीवन दया	मोहनलाल जी बाफना–रायपुर
तेला	**26 माह में 111 –** सुमन जी छाजेड़–हावड़ा
	51 – विकास जी पींचा–गुवाहाटी
	12 माह में 13 – सुंदर बाई संचेती–नोखा मंडी
	14 – श्वेता जी भूरा–
उपवास	**50 –** विकास जैन, शैलेंद्र जैन, प्रियांशु जैन, हिमांशु जैन
एकासना	**365 एकासना व बियासना –** पुष्पा जी पिरोदिया–रतलाम
	150 – मंजू जी पगारिया–धरणगाँव
	108 – अर्चना जी बरड़िया–गीदम
	100 – कमला जी–धरणगाँव
	50 – डॉ. नेहल जी नाहर–इंदौर, सुषमा जी नाहर–इंदौर, इंदिरा बाई आँचलिया–देशनोक, अशोक जी कोठारी–नरसिंहपुर, किरण जी सिंघवी–राजनांदगाँव (50 बियासना भी), शुभम् जैन
पोरसी	**2 एवं 1700 सामायिक (170 प्रतिमाह) तथा जमीकंद त्याग –** आशा जी रांका–बीकानेर
परदेशी राजा तप	प्रवीण जी डाकलिया–रायपुर
वर्षीतप	इंदिरा जी मेहता–बड़ीसादड़ी, सरिता जी दलाल–बड़ीसादड़ी, हर्षा जी मेहता, प्रीति जी सुराणा–सूरत, ऊषा जी कोठारी–जलगाँव, कल्पना जी बैदमूथा–पाचोरा, मंजू जी पगारिया–धरणगाँव, सीमा जी ओस्तवाल–धरणगाँव, अनिता जी ओस्तवाल–धरणगाँव

-महेश नाहटा

पढ़कर ज्ञान प्राप्त करना है या प्रकट करना है? हम पुस्तकें पढ़ते हैं और कक्षाओं में भी अध्ययन करते हैं। इस प्रकार बहुत–कुछ ज्ञान प्राप्त भी कर लेते हैं। किंतु जब तक राग–द्वेष की गाँठ पड़ी है और जब तक उसका विशोधन नहीं किया जाता, तब तक सही ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकेगा। जब तक राग–द्वेष आत्मा में रहेंगे तब तक संवेग उपस्थित नहीं हो सकता। इस प्रकार जब तक राग–द्वेष की ग्रंथि का भेदन नहीं होगा, तब तक सम्यक् ज्ञान भी प्रकट नहीं हो पाएगा।

– परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

विविध समाचार

राम चमकते भानु समाना

महत्तम सोमनस महोत्सव की शृंखला में हुए अनेक आयोजन

सिलीगुड़ी। बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान-झारखंड-आंशिक ओड़िशा अंचल में महत्तम महोत्सव के अंतर्गत महत्तम सोमनस अंतरराष्ट्रीय आंचलिक कार्यक्रम का शानदार आयोजन 26 जनवरी 2025 को समता भवन, सिलीगुड़ी में किया गया। लगभग 24 क्षेत्रों के सैकड़ों श्रावक-श्राविकाओं एवं पदाधिकारियों की उपस्थिति में आयोजित इस कार्यक्रम में दिनहाटा महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण एवं सिलीगुड़ी महिला मंडल द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। स्थानीय संघ के गणमान्यजन द्वारा स्वागत उद्‌बोधन के पश्चात् महिला समिति की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ने महत्तम सोमनस के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

संघ के राष्ट्रीय महामंत्री जी ने संघ गतिविधियों एवं प्रवृत्तियों का परिचय देते हुए सभी को संघ सेवा में अग्रगण्य होने हेतु प्रोत्साहित किया। प्रमुख वक्ता महिला समिति की निवर्तमान राष्ट्रीय महामंत्री ने पूज्य गुरुदेव के अनेक गुणों का गान करते हुए सभी को भावविभोर कर दिया। महत्तम महोत्सव अंचल सह-संयोजक ने अपनी आंचलिक रिपोर्ट में गत लगभग 31 माह से हो रही गतिविधियों की जानकारी दी। सिलीगुड़ी, इस्लामपुर, किशनगंज, कोलकाता संघ के सदस्यों ने गुरुदेव के विशिष्ट गुणों पर आधारित लघु नाटिकाओं का मंचन किया एवं दिनहाटा, इस्लामपुर, रायगंज, किशनगंज एवं कोलकाता संघ द्वारा नयनाभिराम प्रदर्शनी लगाई गई। अंत में अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ने आभार प्रदर्शन किया।

- आंचलिक राष्ट्रीय मंत्री

सूरत। मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई. अंचल स्तरीय महत्तम सोमनस कार्यक्रम का आयोजन 26 जनवरी 2025 को सूरत के जीवन भारती ऑडिटोरियम में किया गया। कार्यक्रम के शुभारंभ में महिला मंडल एवं युवती शक्ति द्वारा मंगलाचरण पश्चात् अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष द्वारा अतिथियों का भावभीना स्वागत किया गया। महिला मंडल की अंचल राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ने महत्तम सोमनस की विस्तृत जानकारी दी।

मुख्यवक्ता के रूप से संघ के पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री ने आचार्य भगवन् के जीवन और उनके गुणों की ऐसी सटीक व्याख्या प्रस्तुत की कि श्रोता मंत्रमुग्ध हो पलक झपकाना भी भूल गए। समता युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने '**लिफ्टिंग फिफ्टीज**' एवं '**चलो नोखा**' पर अपनी बात रखते हुए महत्तम शिखर महोत्सव कार्यक्रम में नोखा पधारने एवं युवाओं से व्यवस्था सँभालने का आह्वान किया। अहमदाबाद, बड़ौदा, सूरत, मुंबई महिला मंडल द्वारा सारगर्भित नाट्य प्रस्तुति दी गई।

महत्तम महोत्सव के आंचलिक सदस्य ने 31 माह तक चले महत्तम कार्यक्रमों की जानकारी पॉवरपॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से दी। महिला समिति की राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष ने भी गुरु गुणगान किया। स्थानीय युवाओं द्वारा '**चलो नोखा**' पर गीतिका प्रस्तुत की गई। अंचल राष्ट्रीय मंत्री ने आगत अतिथियों एवं श्रेष्ठ आयोजन के लिए सूरत संघ का आभार ज्ञापित किया।

कार्यक्रम में मुंबई, अहमदाबाद, सूरत, पुणे, नवी मुंबई, बड़ौदा, बारडोली, चिखली, वलसाड, नवसारी, अंकलेश्वर, सेलांबा, किम, पलसाना, नेत्रंग, अब्रामा आदि क्षेत्रों सहित विभिन्न क्षेत्रों से पधारे सैकड़ों गणमान्यजनों ने भाग लेकर समारोह की शोभा बढ़ाई।

- आंचलिक राष्ट्रीय मंत्री

चेन्नई। तमिलनाडु अंचल स्तरीय महत्तम सोमनस महोत्सव का आयोजन दादावाड़ी, अयनावरम् में 26 जनवरी 2025 को आयोजित हुआ। श्री साधुमार्गी जैन संघ, चेन्नई द्वारा आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण से हुआ। तत्पश्चात् स्थानीय संघ प्रमुख ने सभी का भावभीना स्वागत किया। अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ने महत्तम सोमनस की जानकारी देते हुए अपने भाव व्यक्त किए।

मोटिवेशनल स्पीकर राजेंद्र जी दुधेरिया एवं सुनीता जी दुधेरिया ने '**आनंद से कैसे जिएँ**', '**जीवन के चार पहलू**', '**हमें भी राम बनना है**' एवं '**गुरु के हृदय में वास करें**' आदि विषयों पर बड़े ही सुंदर तरीके से गुणानुवाद किया। निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष जी एवं महत्तम महोत्सव के संयोजक जी ने गुरुदेव का गुणगान करते हुए महत्तम महोत्सव के 31 माह के सफर की विस्तृत जानकारी दी एवं 7-8-9 फरवरी को नोखा पधारने का आह्वान किया।

महिला समिति की बहनों ने महत्तम महोत्सव के अंतर्गत तमिलनाडु अंचल में चल रही विभिन्न गतिविधियों की जानकारी पीपीटी प्रेजेंटेशन के माध्यम से दी एवं समता बहू मंडल द्वारा नाटिका प्रस्तुत की गई। स्थानीय संघ मंत्री ने सभी का आभार व्यक्त किया। चेन्नई, कोयंबटुर, मदुरांतकम्, चेंगलपेट, रानीपेट, वेल्लोर, तंजावुर आदि स्थानों से पधारे सैकड़ों गुरुभक्तों ने समारोह की शोभा बढ़ाई।

- आंचलिक राष्ट्रीय मंत्री

मैसूर। महत्तम महोत्सव के अंतर्गत समता भवन में महत्तम सोमनस कार्यक्रम का आयोजन 26 जनवरी 2025 को किया गया। आचार्य भगवन् के विशिष्ट आयाम समता शाखा में समता आराधना के पश्चात् आंचलिक कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। मंगलाचरण पश्चात् अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ने महत्तम सोमनस कार्यक्रम की जानकारी एवं आंचलिक प्रगति प्रतिवेदन के साथ अपना उद्बोधन दिया। बच्चों व महिला मंडल द्वारा आचार्यदेव की जीवनी पर नाट्य प्रस्तुति दी गई।

मोटिवेशनल स्पीकर सचिन जी चंडालिया द्वारा '**लिफ्टिंग फिफ्टीज**' पुस्तक पर सेशन लेते हुए गुणवचनों को आत्मसात करने की प्रेरणा दी। समता युवा संघ के पूर्व राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष ने संघ की महिमा का बखान करते हुए नोखा में होने वाले महत्तम शिखर महोत्सव की जानकारी

दी। साधुमार्गी प्रोफेशनल फोरम की ओर से फोरम की विस्तृत जानकारी देकर इससे जुड़ने का आह्वान किया गया। स्थानीय संघ मंत्री ने सभी का आभार व्यक्त किया।

मैसूर, पांडवपुरा, मंडा, के.आर.पेट, चन्नरायपटना, श्रीरंगपटना, हुनसुर, बेंगलुरु, होलेनरसीपुर आदि स्थानों पधारे हुए सैकड़ों गुरुभक्त इस कार्यक्रम के साक्षी बने। **- आंचलिक राष्ट्रीय मंत्री**

बेगूँ। परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के स्वर्णिम दीक्षा महोत्सव के अंतर्गत आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की श्रृंखला में 26 जनवरी 2025 को बेगूँ (चित्तौड़गढ़) में महत्तम सोमनस कार्यक्रम का शानदार आयोजन किया गया। मंगलाचरण के साथ कार्यक्रम के शुभारंभ पश्चात् अनेक वक्ताओं ने अपनी भावाभिव्यक्ति में गुरु गुणगान किया। प्रखरवक्ता नितिन जी तातेड़ (इंदौर) ने महत्तम गुणगान करते हुए आचार्य भगवन् के विभिन्न

गुणों का बखान कर सभी को भावविभोर कर दिया।

इसी के साथ मुमुक्षु बहन सुश्री श्रद्धा जी आंचलिया (बेगूँ) एवं मुमुक्षु बहन सुश्री ज्योति जी काँठेड़ (बाड़ी, निम्बाहेड़ा) का शानदार वरघोड़ा पश्चात् आत्मीय अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सहित वक्ताओं ने मुमुक्षु बहनों के अद्भुत त्याग एवं आचार्य भगवन् के अतिशय के प्रति अहोभाव व्यक्त किए। कार्यक्रम में केंद्रीय एवं स्थानीय संघ पदाधिकारियों सहित वीर परिवार आदि सैकड़ों गुरुभक्तों की गरिमामय उपस्थिति रही।

- आंचलिक राष्ट्रीय मंत्री

दिल्ली। महत्तम महोत्सव के अंतर्गत 2 फरवरी 2025 को दिल्ली-पंजाब-हरियाणा एवं उत्तरी अंचल का महत्तम सोमनस कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य वक्ता डॉ. नितिन जी तातेड़ (इंदौर) ने गुरु गुणगान करते हुए संघ सेवा के क्षेत्र में आगे आने हेतु प्रेरित किया। कार्यक्रम में संघ के राष्ट्रीय महामंत्री, तीन अंचलों के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष-मंत्री सहित दिल्ली, यमुनापार (दिल्ली), फरीदाबाद, गाजियाबाद, गुरुग्राम, मेरठ, लुधियाना आदि संघों व क्षेत्रों के पदाधिकारियों एवं श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। अंत में शानदार व्यवस्था के लिए दिल्ली संघ को धन्यवाद ज्ञापित किया गया। **- रमेश गोलच्छा**

✧✧✧✧✧✧ मेवाड़ अंचल ✧✧✧✧✧✧

आमेट। शासन दीपिका साध्वी श्री समता श्री जी म.सा. आदि ठाणा-5 के पावन सान्निध्य में आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम में साध्वीश्री जी ने जप-तप, ध्यान, स्वाध्याय एवं निर्जरा की विशेष प्रेरणा प्रदान की। साध्वी श्री प्रसिद्धि श्री जी म.सा. ने मंगल उद्बोधन प्रदान किया। स्वाध्यायी सोहनलाल पोखरणा (चित्तौड़गढ़) ने आचार्य श्री रामेश के अनेकानेक अवदानों पर प्रकाश डालते हुए

आचार्य श्री रामेश एवं आचार्य श्री महाश्रमण जी के मिलन पर अविस्मरणीय प्रसंगों को साझा किया। कार्यक्रम में मेवाड़ अंचल के राष्ट्रीय मंत्री सहित सैकड़ों गुरुभक्तों की उपस्थिति रही। **- सोहनलाल पोखरणा**

बांसवाड़ा। आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. का 50वाँ दीक्षा दिवस (महत्तम महोत्सव) का पावन प्रसंग 9 फरवरी को समता भवन में हर्षोल्लास के साथ धर्म-ध्यानपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर समता शाखा, 5-5 सामायिक एवं गुणानुवाद आदि धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। अनेक वक्ताओं ने गुरुकृपा से सराबोर अनेक संस्मरण सुनाए। आज के पावन अवसर पर 190 सामायिक, 3 संवर, एकासना सहित 20 सायंकालीन प्रतिक्रमण हुए। **- ज्ञानचंद जैन**

✧✧✧ बीकानेर-मारवाड़ अंचल ✧✧✧

गंगाशहर-भीनासर। श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संस्थान द्वारा मुमुक्षु भाई चाहत जी कोठारी एवं वीर माता-पिता का शानदार अभिनंदन श्री जैन जवाहर विद्यापीठ में किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में बहू मंडल द्वारा मंगलाचरण पश्चात् महिला मंडल की बहनों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। बालिका मंडल ने सभी का तिलक लगाकर अभिवादन किया।

अपने उद्बोधन में मुमुक्षु भाई ने वैराग्य का श्रेय धार्मिक शिविर को देते हुए संयम मार्ग को वास्तविक सुखों का पथ निरूपित किया। वीर पिता नवरतन जी कोठारी ने भी भावाभिव्यक्ति दी। तत्पश्चात् संघ, महिला समिति, समता युवा संघ, बहू मंडल के पदाधिकारियों एवं गणमान्यजनों ने मुमुक्षु भाई एवं वीर माता-पिता का भावभीना अभिनंदन किया। गुरुभक्तों की शानदार उपस्थिति रही। **- चंचल कुमार बोथरा**

✧✧✧✧ जयपुर-ब्यावर अंचल ✧✧✧✧

ब्यावर। आचार्य श्री रामेश के 50वें दीक्षा वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित महत्तम महोत्सव की शृंखला में 4 फरवरी 2025 को महत्तम नंदन कार्यक्रम समता भवन में पर्याय ज्येष्ठ श्री अनंत मुनि जी म.सा. एवं शासन दीपक श्री नीरज मुनि जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में आयोजित किया गया। समता शाखा के पश्चात् श्री राजन मुनि जी म.सा. एवं श्री हिमांशु मुनि जी म.सा. के प्रवचन हुए तथा अनेक वक्ताओं ने गुणानुवाद करते हुए अपने अनुभव साझा कर आचार्यदेव को कठोर संयमपालक बताया।

आनंद भवन में जयपुर-ब्यावर अंचल स्तरीय '**कौन बनेगा अभिरामम्**' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें जयपुर, अजमेर, सवाई माधोपुर, ब्यावर के 6 वर्ष से 11 वर्ष तक के 40 बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। 15 बच्चे विजयी घोषित किए गए। संघ अध्यक्ष ने सभी का आभार व्यक्त किया।

माघ सुदी 12 वि.सं. 2081, दिनांक 9 फरवरी 2025 को आचार्य श्री रामेश का सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव समता भवन में पर्याय ज्येष्ठ श्री अनंत मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-5 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री रोशन कँवर जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में तप-त्याग के साथ मनाया गया।

शासन दीपक श्री नीरज मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि गुरुदेव के चरण पकड़ लो तो सिद्धशिला दौड़ी चली आएगी। आचार्यश्री का 50 साल का दीर्घ संयम काल अमूल्य है। नाना गुरु ने आचार्य श्री रामेश रूपी अनमोल हीरा हमें सौंपा है, जो हर पल, हर क्षण साधना में लीन रहते हैं। आपश्री जी ने अनेक आयाम प्रदान कर संघ के साथ-साथ प्रत्येक मानव के कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया है। आचार्य भगवन् ने अपने लिए कुछ नहीं चाहा। उनका लक्ष्य रहता है कि संघ का गौरव कैसे बढ़े।

श्री अमित मुनि जी म.सा. ने '**मेरा मन अर्पण, मेरा तन अर्पण, नानेश-रामेश के चरणों में मेरा सर्वस्व समर्पण**' भजन प्रस्तुत किया। साध्वी श्री पराग श्री जी

म.सा. ने फरमाया कि गुरुदेव की 50 वर्ष की संयम यात्रा सागर से भी गहरी है। आपश्री जी की निर्मल बुद्धि के सुपरिणाम हमारे समक्ष हैं। **- नोरतमल बाबेल**

✧ महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल ✧

चोपडा। शासन दीपिका साध्वी श्री आदर्शप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा-6 के पावन सान्निध्य में आचार्य श्री रामेश का 50वाँ स्वर्णिम दीक्षा दिवस 9 फरवरी को अपूर्व धर्मोद्योत के साथ मनाया गया। इस अवसर पर समता शाखा, प्रवचन, सामायिक एवं सामूहिक एकासना का आयोजन किया गया। आयंबिल, उपवास, तेला एवं अन्य अनेक तप व प्रत्याख्यान हुए। आचार्यदेव द्वारा प्रदत्त विविध आयामों की जानकारी बहुत ही सुंदर नाटिका द्वारा प्रस्तुत की गई। अनेक वक्ताओं द्वारा गद्य-पद्य में गुरु गुणानुवाद किया गया। **- चेतन दर्डा**

✧✧✧✧✧✧✧ पूर्वोत्तर अंचल ✧✧✧✧✧✧✧

सिलचर। श्री साधुमार्गी जैन संघ द्वारा आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के 50वें (स्वर्णिम) दीक्षा दिवस पर 9 फरवरी 2025 को जैन भवन में सामायिक, समता शाखा, गुरु गुणानुवाद आदि कार्यक्रम आयोजित किए गए। संघ अध्यक्ष ने गुणानुवाद करते हुए कहा कि यह हमारा सौभाग्य है कि आज हमें यह विशेष अवसर प्राप्त हुआ है। इस शुभ अवसर पर ज्यादा से ज्यादा तप-त्याग करने का लक्ष्य रखना है। इस दौरान 31 माह से चल रहे रक्तदान शिविर के समापन की घोषणा करते हुए सभी रक्तदाताओं को धन्यवाद ज्ञापित किया गया। संघ मंत्री ने 31 माह चलने वाले कार्यक्रमों का विवरण देते हुए कहा कि रक्तदान शिविर के माध्यम से 450 यूनिट रक्त सिलचर कैंसर हॉस्पिटल को दान किया गया। अनेक वक्ताओं ने गद्य-पद्य में अपने भाव रखे। **- विजय कुमार सांड**

साधुमार्गी प्रोफेशनल फोरम :
व्यसनमुक्त हो सारा देश

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के अंतर्गत साधुमार्गी प्रोफेशनल फोरम द्वारा आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के स्वर्ण (50वें) दीक्षा दिवस के पावन अवसर पर आयोजित महत्तम महोत्सव में आचार्य भगवन् के विशिष्ट '**व्यसनमुक्ति आयाम**' के पावन संदेश '**व्यसनमुक्त हो सारा देश**' को अपना ध्येय वाक्य बनाते हुए 50 दिवसीय व्यसनमुक्ति संकल्प अभियान चलाया गया। इस संकल्प के अंतर्गत ऑनलाइन एवं ऑफलाइन माध्यम से विभिन्न सत्रों, चर्चाओं और गतिविधियों द्वारा स्वास्थ्य, अध्यात्म, सकारात्मक जीवनशैली व व्यसनमुक्ति आदि की प्रभावना की गई।

विभिन्न चर्चाओं में व्यसन के मूल कारणों की पहचान करते हुए विशेषज्ञ चिकित्सकों, मनोवैज्ञानिकों, मनोचिकित्सकों एवं काउंसलर आदि द्वारा व्यसनों के मूल कारणों, व्यसन से रिश्तों, स्वास्थ्य व परिवार पर पड़ने वालों दुष्प्रभावों, व्यसनमुक्ति के उपाय आदि के बारे में समझाया गया। इस हेतु आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक तकनीकों को भी साझा किया गया।

इस अभियान की केवल यहीं इतिश्री नहीं की गई। क्योंकि आचार्यदेव के इस अभियान से जन-जन को जोड़कर इसकी और अधिक प्रभावना करने एवं व्यसनयुक्त मनुष्यों के जीवन को सामान्य जीवनशैली में लाना प्रमुखता से निश्चित किया गया था। इस हेतु रोगियों को तनाव का सामना करने हेतु मनोवैज्ञानिक तकनीक के माध्यम से मजबूत आत्मबल की ओर बढ़ाया गया। इसमें **वाकथॉन** - शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिए

कुछ दूरी तक पैदल चलने तथा अन्य हलके शारीरिक व्यायाम करने, **जर्नलिंग** - प्रतिदिन आत्मचिंतन करते हुए रात्रि को सोने से पूर्व आज हुए सकारात्मक बिंदुओं को लिखने, **डिक्लटरिंग** - मन एवं मानसिक वातावरण की शुद्धि के लिए अशुद्ध एवं नकारात्मक विचारों को हमेशा के लिए स्वयं से दूर करने आदि के लिए दृढ़ता के साथ प्रयास किए गए। इसी के साथ स्कूल व कॉलेजों आदि में युवाओं को जागरूक करने हेतु विशेष प्रयास करने के साथ-साथ व्यसनमुक्त होने वालों तथा अन्य सेवाभावी जनों को चैंजमेकर की भूमिका में लाते हुए प्रतिदिन कुछ समय अन्यों को प्रेरणा देने का लक्ष्य निर्धारित किया गया। इसका मुख्य लक्ष्य सामाजिक सुधार को बढ़ावा देना था। सभी कार्यक्रमों में व्यसनमुक्ति के नौ बिंदुओं को समझाकर त्याग ग्रहण करवाया गया। इससे भी संवेदनशील प्रयास यह रहा कि व्यसनों से ग्रस्त व्यक्तियों के मनोबल को दृढ़ करने हेतु आत्महत्या की प्रवृत्ति से बचने, विवाहेतर संबंधों के दुष्प्रभाव आदि विषयों पर भी सार्थक चर्चा की गई एवं आत्मिक रूप से इतना मजबूत बनाया गया कि भविष्य में ऐसे विचार उनके दिमाग में आएँ ही नहीं।

इस अभियान में श्रीसंघ, महिला समिति, समता युवा संघ, बहू मंडल, तरुण शक्ति एवं पाठशाला के बच्चों ने व्यसनमुक्ति टीम के साथ कंधे से कंधा मिलाकर जो सहयोग दिया वह अनुकरणीय है। सभी के सम्मिलित प्रयासों से इस अभियान के अंतर्गत रिकॉर्ड दर्ज कराते हुए 500 ऑनलाइन संकल्प-पत्र भरे गए, 158 प्रेरणादायक स्लोगन प्राप्त हुए, 48 पाठशालाओं द्वारा नाटक प्रस्तुतिकरण एवं व्यसनमुक्ति आलेख आदि के माध्यम से गहन चिंतन साझा किया गया।

इस अभियान की सफलता को देखते हुए इसे अनवरत चलाने का निर्णय लिया गया है। जिसमें डॉक्टर्स एवं काउंसलर्स के पैनल का गठन हुआ है, जो हर समय मार्गदर्शन एवं सहयोग प्रदान करने हेतु तत्पर हैं। ऑनलाइन एवं ऑफलाइन दोनों ही माध्यमों से संकल्प-पत्र भरे जा सकते हैं। ऑनलाइन माध्यम हेतु क्यूआर कोड इसी आलेख के साथ लगाया गया है।

महत्तम महोत्सव के अंतर्गत साधुमार्गी प्रोफेशनल फोरम ने सभी को साथ लेकर गुरुचरणों में व्यसनमुक्ति की भेंट अर्पित की है। इस अभियान की सफलता को देखते हुए ऐसा लग रहा है जैसे यह तो केवल शुरुआत है। प्रत्येक व्यक्ति को व्यसनमुक्ति संकल्प-पत्र भरकर स्वस्थ्य, सकारात्मक एवं व्यसनमुक्त समाज की दिशा व सोच को आगे बढ़ाना होगा और इस हेतु निरंतर प्रयास करने होंगे।

- वर्षा कुदाल

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महत्तम महोत्सव की धूम

दुबई। परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के 50वें दीक्षा दिवस के पावन अवसर महत्तम महोत्सव को '**महतम समता शाखा महोत्सव**' के रूप में श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाया।

इस विशेष अवसर पर दुबई संघ के 31 सदस्यों ने भाग लेकर अपनी गुरुभक्ति समर्पित की। यह शुभ क्षण सभी के लिए प्रेरणा और आध्यात्मिक उत्थान का प्रतीक बन गया।

- स्वाति सांखला, अध्यक्षा, समता महिला मंडल, दुबई

महत्तम शिखर महोत्सव समापन पर

नोखा में 15 पुस्तकों का विमोचन संपन्न

नोखा। आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म.सा. की दीक्षा के 50 वर्ष पूर्णता पर राजस्थान के नोखा में 6 से 9 फरवरी तक आयोजित कार्यक्रम में 15 पुस्तकों का विमोचन संपन्न हुआ। अलग-अलग विषयों की इन किताबों में 13 का प्रकाशन साधुमार्गी पब्लिकेशन द्वारा तथा 2 का प्रकाशन आगम-अहिंसा-समता एवं प्राकृत संस्थान द्वारा किया गया है।

15 पुस्तकों में से 6 पुस्तकों का विमोचन 6 फरवरी को दीक्षार्थी अभिनंदन समारोह में मुमुक्षुओं के करकमलों से हुआ, जबकि 8 और 9 फरवरी को 9 पुस्तकों का विमोचन महत्तम महोत्सव कार्यक्रम में राष्ट्रीय पदाधिकारियों द्वारा किया गया। विमोचित पुस्तकों में '**वैखरी**', '**पश्यंती**', '**झनकार**' व '**अनुगूँज**' आचार्यश्री रामलाल जी म.सा. के चिंतनों की पुस्तकें हैं, तो '**धम्म सद्धा हृदय धरूँ**', '**श्रद्धा एव जयते**', '**महत्तम संधान**' और '**महत्तम विज्ञान**' में आचार्यश्री के प्रवचन हैं। प्रवचन की पहली दो पुस्तकों में नीमच में फरमाए गए प्रवचन हैं तथा अन्य दो में भीलवाड़ा चातुर्मास के प्रवचन संकलित हैं। '**राम-दर्शन**' सीरिज के तहत प्रकाशित चिंतन की पुस्तकों में रेखाचित्रों और प्रतीक चित्रों का प्रयोग करके इन्हें बोधगम्य बनाया गया है। '**शीश दिया जो गुरु मिले**' आचार्यश्री के गुणों पर आधारित पुस्तक है तथा तीन भागों में प्रकाशित '**समता चैत्र एक्टिविटी**' बच्चों के लिए उपयोगी है। '**नव सद्भाव पदार्थ**' में जीव-अजीव आदि नव सद्भाव पदार्थों की जानकारी विस्तार से दी गई है। यह श्रावकों के लिए आवश्यक पुस्तक है क्योंकि भगवान महावीर ने फरमाया है कि श्रावक को नव सद्भाव पदार्थों का जानकार होना चाहिए।

आगम-अहिंसा-समता एवं प्राकृत संस्थान द्वारा प्रकाशित पुस्तक '**नरक कोश**' भाग 1 व 2 शोध ग्रंथ हैं, जिनमें नरक, पृथ्वी आदि का संपूर्ण वर्णन है। साधुमार्गी पब्लिकेशन के संयोजक और आगम-अहिंसा-समता एवं प्राकृत संस्थान की संयोजिका ने पुस्तकों के विषय-वस्तु से लोगों को अवगत कराया। सभी पुस्तकों के प्रकाशन में आर्थिक सहयोग प्रदान करने वाले महानुभावों एवं संघ के वर्तमान और पूर्व राष्ट्रीय पदाधिकारियों की उपस्थिति में विमोचन कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस अवसर पर देश के अनेक हिस्सों से आए लोग उपस्थित रहे।

विश्व पुस्तक मेले में
साधुमार्गी पब्लिकेशन पर विशेष रुझान

दिल्ली। साधुमार्गी पब्लिकेशन ने वर्ष 2025 में भी देश की राजधानी में हजारों प्रकाशकों के बीच अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर अपनी किताबों के द्वारा लोगों का ध्यान खींचा। हजारों लोगों ने पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित पुस्तकों को देखा और समझा। दूसरे धर्म के लोगों ने भी किताबों को पसंद किया। नई दिल्ली के भारत मंडपम में 1 से 9 फरवरी तक आयोजित विश्व पुस्तक मेले में साधुमार्गी पब्लिकेशन का स्टॉल लगाया गया। साधुमार्गी संघ के लिए यह गौरव की बात है कि उसके अंतर्गत आने वाले साधुमार्गी पब्लिकेशन का स्टॉल उस विश्व पुस्तक मेले में कई सालों से लग रहा है। प्रत्येक वर्ष लगने वाले इस मेले में विश्व के चालीस देशों के एक हजार से अधिक प्रकाशकों की विभिन्न भाषाओं की पुस्तकों के साथ उपस्थिति रहती है और बहुत से प्रकाशक चाहते हुए भी अपना स्टॉल नहीं लगा पाते हैं।

- संयोजक, साधुमार्गी पब्लिकेशन

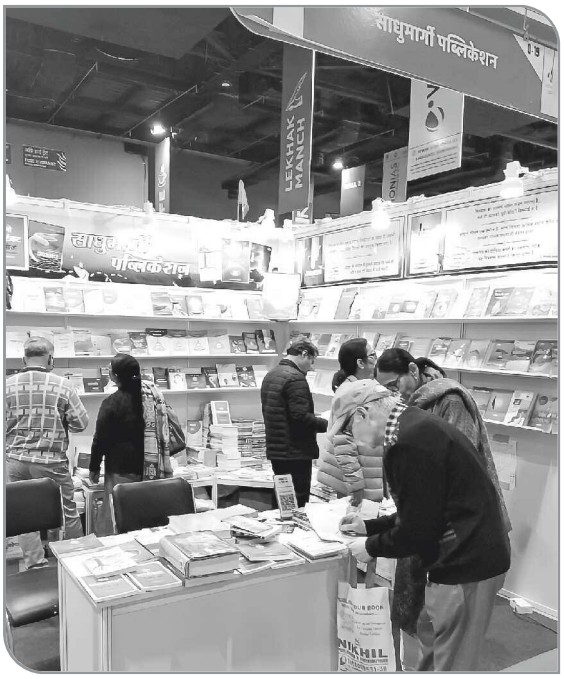

विश्व नवकार मंत्र दिवस 9 अप्रैल को

नवकार महामंत्र दिवस का शानदार आयोजन 9 अप्रैल 2025 को किया जाएगा। यह पावन अवसर जैन समाज के लिए विशेष महत्व का पर्व बनेगा। नवकार महामंत्र सभी तीर्थंकरों और साधुओं को वंदन करने वाला परम पवित्र मंत्र है। यह आयोजन सभी को धार्मिक चेतना से जोड़ने और सामूहिक रूप से महामंत्र के जाप के माध्यम से आत्मिक शांति प्राप्त करने का अनूठा अवसर प्रदान करेगा।

आप सभी से आग्रह है कि इस शुभ दिन पर अधिक से अधिक संख्या में सहभागी बनें और इस आध्यात्मिक पर्व को स्वर से स्वर मिलाते हुए सफलता के शिखर तक पहुँचाएँ। सामूहिक जाप की सकारात्मक ऊर्जा न केवल हमारे भीतर शांति और समर्पण की भावना का संचार करेगी, बल्कि संपूर्ण समाज में सद्भाव और एकता का संदेश फैलाएगी।

जैन समाज की प्रमुख संस्था '**जीतो**' की ओर से इस आयोजित अतिविशिष्ट कार्यक्रम से जुड़कर प्रत्येक जैन को अपना जीवन धन्य बनाना है। महापुरुषों के आशीर्वचनों से प्रकटित इस विशेष कार्यक्रम में 9 अप्रैल को कम से कम 9 माला नवकार महामंत्र की फेरने का लक्ष्य रखें। अधिकतम की कोई सीमा नहीं। हम सभी को इस आह्वान को सफल बनाकर वास्तव में अपने जीवन को सार्थक बनाना है। आइए, हम सब मिलकर नवकार महामंत्र का स्मरण करें और इस पावन दिवस को यादगार बनाएँ।

- राष्ट्रीय महामंत्री

श्रावकत्व की पहचान है दान

महत्तम शिखर महोत्सव के स्वर्णिम सफर के अंतिम 50 महत्त्वपूर्ण दिनों में दानपेटी योजना को ऊँचाइयों पर पहुँचाने हेतु एवं दान को आध्यात्मिकता से जोड़ते हुए तीन प्रतियोगिताओं के आयोजन द्वारा अद्वितीय, अप्रतिम, युगपुरुष परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. को स्वर्णिम बधाइयाँ दी गईं।

इन प्रतियोगिताओं में स्टोरी राइटिंग, पोस्टर मेकिंग एवं मॉडल प्रेजेंटेशन विषय रखा गया, जिसमें 4 साल से लेकर 78 वर्ष तक के देश-विदेश के प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। सभी ने अपना उत्कृष्ट पुरुषार्थ किया। श्रेष्ठ मॉडल्स एवं पोस्टर्स को नोखा में श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा आयोजित प्रवृत्ति प्रदर्शनी में सुसज्जित किया गया एवं मॉडल व गेम के माध्यम से नियमित दान के आगमसम्मत तथ्यों की भव्य प्रभावना की गई।

संघ व दोनों सहयोगी शाखाओं के सदस्यों सहित समस्त पदाधिकारी ने प्रदर्शनी का अवलोकन करके बच्चों की प्रतिभाओं को निहारा। प्रदर्शनी में दान की महत्ता को समझने एवं दान के सर्वोत्तम भाव से किस प्रकार भवभ्रमण को कम करके अनेक आत्माएँ सिद्ध-बुद्ध-मुक्त बनीं अथवा तीर्थंकर गोत्र का बंध कर अपार ऐश्वर्य ऋद्धि पाई आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया।

शास्त्रों के दृष्टांतों पर प्रतिभागियों ने बहुत ही रोचक एवं प्रेरणास्पद उदाहरण के साथ अपने विचार प्रस्तुत कर कलम और कलात्मकता का अद्भुत संगम प्रदर्शित किया। बच्चों में दान के साथ भावों की प्रधानता से कैसे पुण्यवानी अभिवृद्धित होती है एवं सेवा व परोपकार के निर्मल भाव कैसे उपजते हैं आदि विषयों पर सभी को समझाया गया। रोचक प्रदर्शनी के माध्यम से दान के संस्कारों का भरपूर प्रचार-प्रसार किया गया। जिन क्षेत्रों में दानपेटियाँ नहीं पहुँची उन क्षेत्रों के प्रतिनिधियों को दानपेटियाँ प्रदान की गईं तथा वर्ष में दो बार राशि संग्रहित कर केंद्रीय कार्यालय में भिजवाने की व्यवस्था से अवगत कराया गया। प्रदर्शनी का अवलोकन करने वाले सभी जनों ने प्रतिभागियों की मेहनत व कलात्मकता की सराहना की। दानपेटी योजना टीम द्वारा सभी प्रतिभागियों के पुरुषार्थ का सम्मान प्रदान किया एवं विजेताओ को बधाई देते हुए भविष्य में भी प्रवृत्ति के सभी कार्यों में सहर्ष सहयोग प्रदान करने की विनम्र अपील की।

प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार रहे -

स्टोरी राइटिंग – प्रथम : कांता जी बैद, गाजियाबाद; **द्वितीय :** अंजू जी खारीवाल, जावरा; **तृतीय :** सुरेंद्र जी भूरा, अहमदाबाद; **इंटरनेशनल :** सविता जी जैन, नॉर्थ अमेरिका; **सांत्वना पुरस्कार :** (1) मुस्कान जैन, गीदम, (2) सुनीता जी सियाल, अजमेर, (3) रंजीता जी कोठारी, रतलाम।

पोस्टर मेकिंग – प्रथम : समता पाठशाला भायंदर, मुंबई; **द्वितीय :** ईश्वि, श्रुति डूंगरवाल; **तृतीय :** नमन जैन, गुंडरदेही; **सांत्वना पुरस्कार :** (1) सिद्धि जी भंडारी, इचलकरंजी, (2) अवनि जी लोढ़ा, उदयपुर, (3) वंश जी बोकड़िया, नंदुरबार।

मॉडल प्रजेंटेशन – प्रथम : समता बालिका मंडल, भीलवाड़ा, **द्वितीय :** पुलकित जैन, अर्जुनी, **तृतीय :** टीया नागौरी, बड़ोदरा, **सांत्वना पुरस्कार :** (1) समता पाठशाला, नोखा, (2) मंजू जी भूरा, भीलवाड़ा, (3) प्रजवी जैन, मंदसौर, (4) पीहू जैन, खिरकिया, 5. महक कोठारी, नागौर।

- राष्ट्रीय संयोजक

छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल की महत्तम महोत्सव में स्वर्णिम यात्रा

नोखा मंडी (राजस्थान), दिनांक 7-8-9 फरवरी 2025

लगभग 31 माह पूर्व जानकारी मिली कि श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. का 50वाँ सुवर्ण दीक्षा दिवस 9 फरवरी 2025 तक महत्तम महोत्सव के रूप में मनाने जा रहा है, जिसे '**महत्तम महोत्सव - मेरा महोत्सव**' नाम दिया गया है। यह महोत्सव सभी अंचलों के लिए एक बड़ा टास्क था। प्रारंभ में सभी को यह जानकारी नहीं थी कि हमें कैसे, क्या करना है। केंद्रीय पदाधिकारियों एवं महत्तम महोत्सव संयोजक आदि ने इस पर प्रकाश डाला, तब जाकर कुछ समझ में आया। कहते हैं न कि महापुरुषों की वाणी शक्ति-संपन्न होती है। उनके द्वारा बताए गए मार्ग पर चलकर मंजिल प्राप्त की जा सकती है। इसी सोच के साथ सभी आगे बढ़े। फिर '**इंद्रधनुष**' की पहली पुस्तक हाथ में आई, तब तक लगभग 8 माह निकल गए थे। इस पुस्तक में 9 प्रकल्प के तहत विभिन्न गतिविधियों का समावेश था, जिन्हें घर-घर पहुँचाना बड़ा प्रश्न था। इसके लिए केंद्रीय संघ द्वारा महत्तम कोर टीम की कार्ययोजना तैयार की। सारे प्रकल्पों का ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन बड़ा ही पेचिदा लग रहा था और कार्य जिस गति से बढ़ना चाहिए वह नहीं बढ़ पा रहा था। केंद्रीय कोर टीम द्वारा आंचलिक टीम को प्रवास करने का दिशा-निर्देश दिया गया, फिर भी जो सफलता आनी चाहिए वो नहीं आ पाई। हमारी तीनों इकाइयों ने आंचलिक टीम के साथ प्रवास का कार्यक्रम आगे भी जारी रखा, पर रिजल्ट अभी भी कछुए की गति से ही आगे बढ़ रहा था।

कुछ अंतराल पश्चात् संघ प्रमुखों के नेतृत्व में छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल में पुनः प्रवास प्रारंभ किया और इस बार सिर्फ और सिर्फ महत्तम प्रकल्प की जानकारी देते हुए रजिस्ट्रेशन प्रारंभ किया। इससे अच्छी सफलता के साथ आगे बढ़े। समता युवा संघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष ने प्रेरणा देते हुए कहा कि जो छत्तीसगढ़ हर प्रवृत्ति में आगे रहता है वह छठे पायदान पर कैसे है? फिर छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल के संघ प्रमुखों के नेतृत्व में रजिस्ट्रेशन का कार्य द्रुतगति से प्रारंभ हुआ। लगभग 60 संघों में कार्य करने में सफलता प्राप्त की। एक दिन में 600 रजिस्ट्रेशन का लक्ष्य लेकर 10,000 रजिस्ट्रेशन का आँकड़ा प्राप्त किया। प्रवास में छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल के सभी साधुमार्गी संघों का भरपूर योगदान मिला। इस प्रकार हमारा अंचल प्रथम पायदान पर पहुँच गया। इस सफर को जारी रखते हुए 17,000 रजिस्ट्रेशन का लक्ष्य हासिल किया।

रजिस्ट्रेशन होने के पश्चात् एकासना, आयंबिल, उपवास, तेला की लड़ी के साथ साथ स्वाध्याय, ज्ञानार्जन, संस्कार, तप-त्याग, व्रत विवेक, संघ विस्तार व सशक्तिकरण, सामाजिक प्रकल्प, गुदड़ी के लाल, जन-जन में राम तथा कई प्रकार के ओपन बुक एक्जाम आदि की जबरदस्त प्रभावना करते हुए छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल पहले पायदान पर सरपट दौड़ रहा था। महत्तम शिखर समता शाखा में एक बार तो उपस्थिति 4720 तक पहुँच गई, जो गौरवान्वित करने वाली थी।

महत्तम नंदन के तहत लगभग 35 स्थानों पर समता प्रचार संघ के वक्ताओं द्वारा गुरु राम के गुणों पर उद्बोधन कराया गया। कवर्धा में राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक के साथ महत्तम सोमनस एवं आध्यात्मिक महत्तम सम्मेलन विशिष्ट उपस्थिति के साथ संपन्न हुआ।

मोटिवेशनल स्पीकर महेंद्र जी मुकीम (रायपुर) ने आचार्य भगवन् के विशिष्ट गुणों का बखान किया। महत्तम ग्रैंड समर्पणा कार्यक्रम भी विशिष्ट उपस्थिति के साथ संपन्न हुआ। इस दौरान छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल के साथ अन्य स्थानों पर आयोजित विभिन्न शिविरों में अंचल के बच्चों व श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। '**अभिमोक्षम्**' शिविर में छत्तीसगढ़ से लगभग 700 रजिस्ट्रेशन हुए तथा लगभग 443 बच्चों ने शिविरार्थी बनकर अपना जीवन धन्य बनाया। विभिन्न शिविरों एवं ओपन बुक परीक्षाओं में छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल की सेवा आदि दृष्टिकोण से भी विशेष भागीदारी रही। '**अभिरामम्**' ओपन बुक में भी छत्तीसगढ़ ने परचम लहराया। '**अभिरामम् रत्नम्**' में छत्तीसगढ़ अव्वल रहा। '**रियल रामेश रत्नम्**' में पाठशाला के बच्चों ने छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल को प्रथम स्थान दिलाते हुए गौरवान्वित किया। अंचल के आध्यात्मिक स्नेह सम्मेलन रायपुर, कांकेर और कवर्धा में महत्तम महोत्सव के विभिन्न प्रकल्पों पर प्रदर्शनी लगाई एवं नाट्य प्रस्तुति के माध्यम से प्रभावना की गई।

सुखदानुभूति के साथ 7-8-9 फरवरी को महत्तम महोत्सव का स्वर्णिम समापन आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा के सान्निध्य में नोखा में हुआ, जिसमें देशभर के श्रावक-श्राविकाओं के साथ छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल से लगभग 800 लोग साक्षी बने। हमारा परम सौभाग्य है कि इस महत्तम महोत्सव के दौरान सबसे ज्यादा दीक्षाएँ भी छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल से हुई हैं। कई मुमुक्षु आत्माओं ने अपने नाम के आगे राम लगाते हुए अपने आप को गुरु राम के चरणों में सौंपकर जिनशासन की सेवा करने की ओर कदम बढ़ाया तथा और भी कई मुमुक्षु आत्माएँ इस ओर अग्रसर हैं। ऐसी आनंददायक रही महत्तम महोत्सव में छत्तीसगढ़ की स्वर्णिम यात्रा।

- सुनील ललवानी, बालोद

रचनाएँ आमंत्रित

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के प्रत्येक माह के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। विशिष्ट पाठकों, लेखकों व अन्य जनों के लिए श्रमणोपासक गुरु गुणानुवाद का विशेष अवसर उपस्थित कर रहा है। **नोखा में आयोजित महत्तम शिखर महोत्सव के अनुभवों को** श्रमणोपासक टीम के साथ साझा करें। दिए गए विषय के अतिरिक्त आप प्रेरणात्मक सारगर्भित विषयों पर अपने लेख, रचनाएँ स्पष्ट एवं सुंदर शब्दों में आप सभी से सादर आमंत्रित हैं।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। उपर्युक्त विषयों के अतिरिक्त अन्य विषयों पर भी आपकी रचनाओं का सहर्ष स्वागत है। आप अपनी रचनाएँ दिए गए मोबाइल व वॉट्सएप्प नंबर या ईमेल द्वारा भी भेज सकते हैं।

- श्रमणोपासक टीम

विविध भेंट मार्फत

01 जनवरी से 31 जनवरी 2025 तक

संघ सदस्यों द्वारा समय-समय पर संघ की विभिन्न गतिविधियों में आर्थिक सहयोग हेतु भेंट राशि प्रदान की जाती है, ताकि विभिन्न गतिविधियाँ, प्रवृत्तियाँ निर्विघ्न गतिमान रहें। इसी कड़ी में विभिन्न प्रवृत्तियों में उदार महानुभावों के सौजन्य से प्राप्त भेंट का उल्लेख आपके समक्ष है –

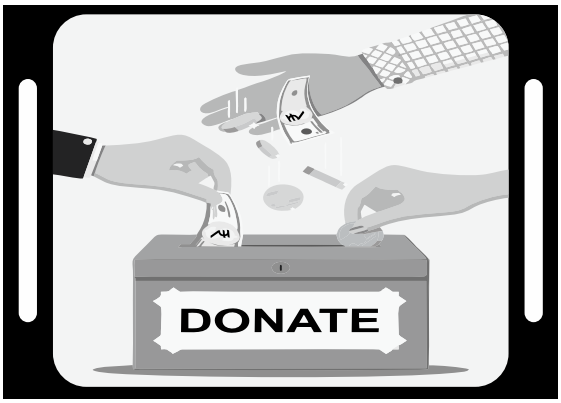

❋❋❋ संघ शिखर सदस्यता (सौजन्य से प्राप्त) ❋❋❋

55,32,000/- कांतिलाल जी कटारिया, रतलाम
34,00,000/- विजय कुमार जी टंच, बदनावर

❋ संघ महाप्रभावक सदस्यता (सौजन्य से प्राप्त) ❋

3,80,000/- सुंदरलाल जी पींचा, गुवाहाटी
2,20,000/- विनोद कुमार जी मिन्नी, कोलकाता
2,20,000/- मधुलता जी लोढ़ा, डोंगरगाँव
2,20,000/- गुप्तदान, भीलवाड़ा
2,20,000/- मंजू देवी धीरजमल जी कटारिया, रतलाम
2,14,200/- राजेश जी बच्छावत, बीरगंज (नेपाल)
1,50,000/- स्व.बापूलाल जी कोठारी परिवार, उदयपुर
1,00,000/- बसंत कुमार जी कटारिया, रायपुर
60,000/- सुंदरलाल जी पींचा, गुवाहाटी
20,000/- अमरचंद जी मथुरा बाई बागरेचा, साजा

❋❋❋ महत्तम महोत्सव (सौजन्य से प्राप्त) ❋❋❋

11,00,001/- श्री साधुमार्गी जैन संघ, हावड़ा
7,00,000/- माणकचंद जी नाहर, उदयपुर
5,00,000/- गुप्तदान, दिल्ली
3,00,000/- उगमराज जी अमृत कुमारी जी मूथा, चेन्नई
2,50,000/- मदनलाल जी कटारिया, रतलाम
2,00,000/- राजेंद्र जी बैद, नागपुर
50,000/- रतनलाल जी जय जी अजय जी संजय जी हीरावत, दिल्ली
21,000/- प्रकाशचंद जी दुग्गड़, दिनहट्टा

❋❋❋ समता भवन प्रवृत्ति (सौजन्य से प्राप्त) ❋❋❋

समता भवन, संगरिया

5,50,000/- सुरेश जी जैन, गुरुग्राम

समता भवन, लूणकरणसर

1,50,000/- सुंदरलाल जी बोथरा, नोखा/मुंबई

❋❋❋❋❋❋❋❋❋ इदं न मम ❋❋❋❋❋❋❋❋❋

5,00,000/- शांतिलाल जी सांड, बेंगलुरु
1,08,000/- अशोक कुमार जी चंडालिया, बोईसर
1,00,008/- प्रेमचंद जी मांगीलाल जी बाफना (कोतहरी), बदनावर
88,000/- कमला बाई कांतिलाल जी सियाल, रतलाम
51,000/- ऋषभचंद जी भंसाली, मैसूर
33,000/- माणकचंद जी सोनावत, मनेंद्रगढ़
21,000/- इंद्रजीत जी नवलखा, गुवाहाटी
21,000/- मनोज कुमार जी डागा, खरियार रोड
21,000/- तोलाराम जी भैरुंदान जी पारख, धर्मनगर
11,111/- मूलचंद जी मुकेश जी गौतम जी रूपेश जी छाजेड़, साजा
11,001/- जितेंद्र जी अरुण जी कोठारी, साजा
11,000/- निर्मल कुमार जी भूरा, करीमगंज
11,000/- ललित कुमार जी कांकरिया, सेलम
11,000/- प्रभा जी बोरड़, फरीदाबाद
11,000/- गंगाराम जी लूणावत, नोखागाँव

7,100/- अरुण जी कन्हैयालाल जी खुरड़िया, अहमदाबाद
6,600/- राज बाई पोरवाल, जलगाँव
5,100/- राजेश कुमार जी भूरा, करीमगंज
3,501/- सुशील कुमार जी शाह, राजनांदगाँव
3,000/- पन्नालाल जी अशोक जी कोटड़िया, मुढ़ीपार
3,000/- नैनेश जी रजनीकांत जी कामदार, अमलनेर
2,200/- गौतमचंद जी हितेश जी कोटड़िया, मुढ़ीपार
2,200/- सुनील जी कितिन जी कोटड़िया, मुढ़ीपार

2,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- ज्ञानचंद जी डूंगरवाल, बांसवाड़ा, आशा जी मेहता, उदयपुर, अमित जी भूरा, करीमगंज, कल्याण सिंह जी नागौरी, उदयपुर, **नोखागाँव से-** पाबूदान जी लूणावत, शंकरलाल जी लूणावत, विजय कुमार जी गुलाबचंद जी लूणावत

1501/- अंकित जी बंब, टोंक
1121/- गुप्तदान

1100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- रमेशचंद जी ज्ञानेंद्र कुमार जी जैन, सवाई माधोपुर, कुशाल सिंह जी पुष्पा जी डांगी, बड़ीसादड़ी, किशनलाल जी मुणोत, बड़ीसादड़ी, किशनलाल जी भंडारी, बोहेड़ा, **नोखागाँव से-** हनुमानमल जी लूणावत, भैरुंदान जी सुराणा, संतोषचंद जी लूणावत, बजरंगलाल जी लूणावत, पंकज कुमार जी लूणावत

555/- कमला बाई पुखराज जी चोपड़ा, सेलंबा
501/- गौतमचंद जी चोरड़िया, रायपुर
500/- मधु जी भाणावत, उदयपुर

******* दानपेटी योजना *******

39,600/- माणकचंद जी धूड़मल जी डागा, बेंगलुरु
21,000/- नंदलाल जी संजय जी नीलेश जी मोगरा, इंदौर
19,520/- कमल जी हंसराज जी पिरोदिया, रतलाम
19,000/- भंवरी देवी एवं पुत्र अशोक जी दुग्गड़, इंदौर
11,000/- हर्ष जी सुजानमल जी भूरा, इंदौर
11,000/- अनुपमा जी डॉ. सुनील एम. जैन, इंदौर
10,201/- संगीता जी धर्मेंद्र जी भंडारी, खिरकिया
9,651/- गुप्तदान, इंदौर
9,100/- कन्हैयालाल जी राजमल जी कस्वा, रतलाम
7,100/- लालचंद जी सुमतिचंद जी सांखला, इंदौर
6,169/- कांतिलाल जी लूणावत, खेतिया
5,800/- आशा जी प्रमोद जी भंडारी, खिरकिया
5,690/- अशोक कुमार जी जैन, दलौदा
5,100/- प्रसनजीत जी कांतिलाल जी बोहरा, रतलाम
5,100/- अनिल कुमार जी डूंगरवाल, इंदौर
5,100/- सुगन बाई कैलाशचंद जी डूंगरवाल, इंदौर
5,004/- शांतिलाल जी फूलचंद जी पितलिया, रतलाम
5,000/- मुकुल जी निर्मलचंद जी देशलहरा, इंदौर
4,910/- अनिल कुमार जी पामेचा, दलौदा
4,721/- मुकेश जी लूणावत, खेतिया
4,000/- कमला देवी बोथरा, इंदौर
4,000/- मधु जी भंडारी, इंदौर
4,000/- अजीत कुमार जी चौपड़ा, इंदौर
3,924/- सुनील कुमार जी खिंवेसरा, खेतिया
3,772/- यतींद्र जी सोनी, खेतिया
3,500/- निर्मला जी कास्टिया, इंदौर
3,430/- नितिन जी लूणावत, खेतिया
3,400/- अनिल कुमार जी भंडारी, दलौदा
3,308/- निर्मल कुमार जी लोढ़ा, खेतिया
3,250/- यशवंत कुमार जी जैन, दलौदा

3,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- प्रेमरतन जी बोहरा, गुड़ी, चंपालाल जी भूरा, गुड़ी, हंसराज जी मांगीलाल जी चोपड़ा, रतलाम, पारसमल जी बसंतीलाल जी पिरोदिया, रतलाम, लोकेंद्र जी अरुणा जी भंडारी, इंदौर, मधु जी प्रबोध जी भंडारी, इंदौर

3,000/- प्रकाशचंद जी रावतमल जी कोचर, पडियाल
2,970/- शांतिलाल जी लूणावत, खेतिया
2,700/- तेज कुमार जी नितिन जी मयंक जी तातेड़, इंदौर
2,600/- वरुण जी अभय जी जैन, इंदौर
2,500/- रोशन देवी माणकलाल जी आंचलिया, इंदौर
2,160/- चंदा जी सुरेश जी विनायक, खिरकिया

2,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– सुशील जी भंडारी, दलौदा, **इंदौर से-** कनकमल जी सुनील जी भलावत, वनिता जी धनवंत जी कटारिया, रेखा जी अशोक जी रूपावत, प्रीति जी मनोज जी संचेती, विजया जी जैन, दिलीप जी आंचलिया, सुभाषचंद जी गोखरू, कमल जी राजकुमारी जी जैन, उत्तमचंद जी चौपड़ा, महेंद्र जी अंकित जी दसोरिया, अभय जी पगारिया, मनीष जी रतनलाल जी बोहरा, सरोज जी अजीत जी नलवाया, रतनलाल जी राहुल जी खिंदावत, योगेंद्र जी रोहित जी भलावत, **रतलाम से-** शांतिलाल जी पूनमचंद जी पिरोदिया, सुदर्शन जी हंसराज जी पिरोदिया, बच्छराज जी सागरमल जी पिरोदिया, **नोखागाँव से-** मूलचंद जी हनुमानमल जी सुराणा, प्रकाशचंद जी अमित जी सुराणा, विजय जी गुलाबचंद जी लूणावत, सोहनलाल जी उत्तमचंद जी लूणावत, **गुड़ी से-** सुभाषचंद जी भूरा, रमेशचंद जी बरड़िया, संजय जी बरड़िया, गुड़ी, **खिरकिया से-** सुनीता जी हरकचंद जी सांड, जयना जी पुत्री प्रेयांश जी भंडारी, पायल जी रूपेश जी भंडारी

2,000/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– भोजराज जी बंब, मूंदी, यशी जी नीवि जी शाह, इंदौर, इंद्रा जी भंडारी, इंदौर, गुंजन जी अशोक जी गांधी, इंदौर

1,982/– कमलेश जी लूणावत, खेतिया
1,900/– सोहनलाल जी सुराणा, खेतिया
1,870/– आनंदीलाल जी सागरमल जी पिरोदिया, रतलाम
1,862/– अभय कुमार जी भंडारी, दलौदा

1,800/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– पन्नालाल जी अशोक जी कोटड़िया, मुढ़ीपार, समता महिला मंडल, चारुवा, पारस जी कुंदनमल जी भंडारी, दलौदा

1,730/– राजेश कुमार जी खींवसरा, खेतिया
1,701/– अनिल जी मूलचंद जी भंडारी, दलौदा
1,700/– स्नेहलता जी अमित जी गांधी, इंदौर
1,700/– अल्पना जी हेमंत जी ललवानी, इंदौर
1,700/– देवेंद्र कुमार जी जैन, दलौदा
1,690/– कमलेश कुमार जी जैन, दलौदा
1,680/– धूलचंद जी जैन, दलौदा
1,666/– शैलेंद्र कुमार जी जैन, दलौदा
1,607/– जीवनलाल जी रातड़िया, दलौदा
1,600/– पुखराज जी यतेश जी भलावत, इंदौर
1,584/– प्रकाशचंद जी बोहरा, खेतिया
1,551/– किरण कुमार जी वया, दलौदा
1,550/– विमल कुमार जी पितलिया, दलौदा

1,500/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– जेठमल जी कोमलचंद जी बोथरा, मुढ़ीपार, कोमलचंद जी भावेश जी कोटड़िया, मुढ़ीपार, मेघराज जी छोरिया, चेन्नई, नरेंद्र जी अल्पेश जी जैन, सवाई माधोपुर, रत्ना जी आशीष जी समदड़िया, खिरकिया, कंचन जी भंडारी, खिरकिया, **इंदौर से-** मुकेश जी राजकुमारी जी जैन, संगीता जी निर्मल जी संघवी, विजय जी चंद्रेश जी चौधरी, प्रमिला जी विनय जी जैन, ज्योति जी ललित जी रूपावत, **दलौदा से-** सुरेंद्र जी मेहता, सुभाषचंद जी भटेवरा, राजेंद्र जी पितलिया, सुनील जी रातड़िया, सज्जनलाल जी भंडारी, विजय जी भंडारी, दिलीप जी कोठीफोड़ा

1,481/– मोहनलाल जी बोहरा, खेतिया
1,350/– पद्मा जी अमृत जी छिपानी, इंदौर
1,200/– धर्मचंद जी रातड़िया, दलौदा
1,151/– अमृतलाल जी चांदमल जी डांगी, रतलाम
1,148/– पारस जी अशोक जी भंडारी, दलौदा
1,111/– महेंद्र जी माणकलाल जी रांका, रतलाम

1,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– समरथमल जी जैन, देवास, अभय सिंह जी बाँठिया, देवास, भरत जी वर्मा, मूंदी, **इंदौर से-** संदीप जी बाबूलाल जी आँचलिया, यशपाल जी कांतिलाल जी कास्टिया, कांता देवी दसोरिया, शकुंतला देवी निरंजन जी सरूपरिया, निर्भय जी सोहनलाल जी सुराणा, मंजू जी पावेचा, गौरव जी नव्या जी सेठिया, सुनीता जी जैन, मनोज जी गांधी, प्रमोद जी चोपड़ा, अजीत जी उगमराज जी चोपड़ा, **खिरकिया से-** रक्षा जी कोटेचा, उज्ज्वला जी सुरेश जी बाफना, प्रफुल्ल जी निर्मल जी विनायक, कुसुमलता जी हेमचंद्र जी भंडारी, कांता बाई पारसमल जी रांका, सरला बाई धनराज जी मुणोत, ज्योति जी संदीप जी

सांड, शिखा जी शिखर जी भंडारी, **नोखागाँव से-** इंद्रचंद जी माणकचंद जी सुराणा, मानमल जी सुंदरलाल जी लूणावत, उदयचंद जी बजरंगलाल जी श्यामसुखा, शंकरलाल जी लूणावत, चंपालाल जी बाबूलाल जी लूणावत, गंगाराम जी लूणावत, **रतलाम से-** अरुण जी कन्हैयालाल जी मुणत, प्रकाशचंद जी धर्मचंद जी मेहता, तेजमल जी वक्तावरमल जी पितलिया, कांतिलाल जी चांदमल जी मेहता, सुरेश जी बाबूलाल जी पटवा, **गुड़ी से-** महेंद्र जी चौरड़िया, पारसमल जी बरड़िया, संतोष जी बरड़िया, रवि जी सेठिया, **दलौदा से-** दिनेश जी परमार, अरविंद जी मेहता, मनोज जी भटेवरा, अभय जी मोगरा

1,000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- विमला जी सुभाष जी रांका, खिरकिया, **इंदौर से-** सुशीला जी अवंतीलाल जी चौधरी, प्रकाशचंद जी शकुंतला जी संचेती, चहक जी चहेती जी खिंदावत, **मुंढ़ीपार से-** गौतमचंद जी हितेश जी कोटड़िया, सुनील जी कितिन जी कोटड़िया

933/- राजेंद्र जी टाटिया, खेतिया
916/- विजय कुमार जी जैन, दलौदा
900/- सोनल जी अमित जी तातेड़, इंदौर
900/- संतोषचंद जी विजय जी लूणावत, नोखागाँव
900/- पूनमचंद जी सुभाषचंद जी लूणावत, नोखागाँव
831/- इंद्रचंद जी बरड़िया, खेतिया
800/- संगीता जी विनायकिया, खिरकिया
800/- संगीता जी अनिल जी संघवी, इंदौर
758/- त्रिलोकचंद जी बोथरा, खेतिया
744/- संतोष जी बरड़िया, खेतिया

700/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- शांतिलाल जी बंब, मूंदी, विजया देवी विमल जी रांका, खिरकिया, अनिल जी मेहता, देवास, **नोखागाँव से-** गुलाबचंद जी आशीष जी लूणावत, पाबूदान जी पारसमल जी सुराणा, कानीराम जी बजरंगलाल जी लूणावत, मानमल जी राजेंद्र जी लूणावत, हनुमानमल जी लूणावत

699/- रामलाल जी ललवानी, खेतिया
660/- राधेश्याम जी मुकेश जी जैन, सवाई माधोपुर
614/- नथमल जी ललवानी, खेतिया
613/- प्रकाशचंद जी चोरड़िया, खेतिया
600/- नगीनचंद जी रैदासनी, मूंदी
600/- वन्नी जी उपाध्याय, इंदौर
600/- अनिता जी अशोक जी जैन, इंदौर
586/- चेतन जी बरड़िया, खेतिया
580/- पुलकित जी बंब, मूंदी
580/- सविता जी मेहता, बीड़
560/- मीनल जी बनवट, बीड़
550/- मंगल जी कर्णावट, बीड़
550/- सुचेता जी मुकेश जी भंडारी, खिरकिया
550/- विमला बाई मेहता, खिरकिया
520/- निर्मला जी डूंगरवाल, बीड़
520/- गोपी जी बनवट, बीड़
515/- रमेश जी चोरड़िया, खेतिया
501/- निर्मल कुमार जी सागरमल जी गोखरू, रतलाम
501/- प्रीति जी राजेश जी बैदमूथा, खिरकिया

500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- मोहनलाल जी बोहरा, गुड़ी, पंकज जी बंब, मूंदी, **खिरकिया से-** अनिता जी हुकमचंद जी बनवट, संगीता जी श्रेणिक जी भंडारी, सरोज जी सुगन जी भंडारी, स्मिता जी महेंद्र जी रांका, प्रमिला जी बसंतलाल जी भंडारी, माया जी नरेंद्र जी विनायक, सरोज जी राजेश जी बनवट, सुनीता जी सुरेश जी रैदासनी, कविता जी सुरेश जी बाफना, सुनीता जी अशोक जी भंडारी, पुष्पा जी चंपालाल जी भंडारी, विजेता जी मनोज जी मेहता, सुनंदा जी अनिल जी कोचर, **नोखागाँव से-** रेवंतमल जी रामलाल जी लूणावत, बिरधीचंद जी सुराणा, भैरुंदान जी सुराणा, धनराज जी सुराणा, पूनमचंद जी सुराणा, जेठमल जी श्यामसुखा, किशनलाल जी कन्हैयालाल जी श्यामसुखा, चुन्नीलाल जी सुरेश जी लूणावत, करणीदान जी मुकेश जी लूणावत, फतेहचंद जी नरेश जी बोथरा, **इंदौर से-** हस्तीमल जी मोतीलाल जी आंचलिया, सज्जन सिंह जी झामड़, मनोज जी प्रकाश जी भलावत, किआरा जी मेहता, राजकुमारी जी जैन, नक्षत्र जी श्रेयांशी जी जैन, शारवी जी विशाल जी मेहता, आनंदीलाल जी कुसुमलता जी

जैन, संजय जी कनकमल जी भलावत, **रतलाम से-** कांतिलाल जी कटारिया, अभय जी मुकेश जी कोठारी, लालचंद जी सागरमल जी गोखरू, प्रकाशचंद जी राजमल जी कोठारी, अभय जी राजमल जी कोठारी, सुभाषचंद जी राजमल जी गोरेचा, **दलौदा से-** अशोक जी मेहता, अशोक जी झेलावत, सुनील जी कोठारी, आनंदीलाल जी मेहता, **बीड से-** आशा जी बनवट, बंटी जी बनवट, शीतल जी खटोड़

जीवदया

11,111/- संतोष जी पवन जी सिद्धार्थ जी ओजस जी एवं सुराणा परिवार, नारायणपुर (श्रीमती विजया देवी सुराणा की पुण्यस्मृति में)

11,000/- गौतमचंद जी महावीरचंद जी धारीवाल, पुणे

7,000/- भोजराज जी सेठिया, दिनहट्टा

5,221/- देवीलाल जी भाणावत, कानोड़

5,100/- विजय सिंह जी प्रवीण कुमार जी वीरेंद्र जी सेठिया, गंगाशहर

5,000/- सोमेश्वर जी सिपानी, अहमदाबाद

4,500/- कुसुम देवी लोढ़ा, बीकानेर

3,100/- उत्तमचंद जी यश जी जीत जी गोलछा, रायपुर (श्री खेमचंद जी गोलछा की पुण्यस्मृति में)

2,100/- विमला देवी जेठमल जी सुराणा, गंगाशहर

2,100/- विजय कुमार जी डागा, कोलकाता

2,100/- मधुबाला जी श्री मिश्रीलाल जी सहलोत, अहमदाबाद (निकुंभ वाले)

2,100/- इंद्रेश जी कोचर, नई दिल्ली

1,100/- केतन जी जैन, संगरिया (श्री परवीन कुमार जी जैन की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में)

500/- गुप्तदान

500/- लहरचंद जी सिपानी, गंगाशहर (नमन जी भूरा के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में)

संघ सहयोग

1,51,000/- इंद्रचंद जी सेठिया परिवार, कोलकाता (ऋषभ जी सेठिया के विवाह के उपलक्ष्य में)

11,100/- गुप्तदान (लोढ़ा परिवार के सौजन्य से), विजयनगर

साधुमार्गी पब्लिकेशन सहयोग

2,00,000/- प्रमोद जी प्रीतेश जी चोपड़ा, संबलपुर

1,18,500/- भोजराज जी सेठिया, दिनहट्टा

1,00,010/- राजेंद्र जी सुशील जी राठौर, नीमच

विहार सेवा संयोजन सदस्यता

1,00,000/- नीलेश जी बाँठिया, भोपाल

श्रमणोपासक भेंट

3,75,000/- शांतिलाल जी सांड, बेंगलुरु

16,000/- कुसुम देवी लोढ़ा, बीकानेर

11,000/- अभय कुमार जी ललित कुमार जी अखिलेश कुमार जी मुर्ड़िया, निम्बाहेड़ा

2,100/- कमला देवी कोचर, कोलकाता/बीकानेर

1,100/- कन्हैयालाल जी कोटड़िया, मुंगेली (पुत्र सुवेश के विवाह के उपलक्ष्य में)

1,100/- लड्डूलाल जी, बजरिया (श्रीमती कमला देवी की पुण्यस्मृति में)

समता साहित्य स्टॉल अनुदान

5,300/- धर्मेंद्र जी आंचलिया, बेगूँ

2,800/- श्री साधुमार्गी जैन संघ, गंगाशहर-भीनासर

समता संस्कार पाठशाला

31,000/- भंवरी बाई व अंजू जी संचेती, अजमेर (श्री हेमचंद जी संचेती की पुण्यस्मृति में)

2,222/- गुलगुलिया परिवार, मुंबई/कोलकाता/हैदराबाद

समता सरिता सेवा (विहार सेवा)

21,000/- भंवरी बाई व अंजू जी संचेती, अजमेर (श्री हेमचंद जी संचेती की पुण्यस्मृति में)

11,000/- नीलेश जी बाँठिया, भोपाल

2,100/- कमलचंद जी चंद्रराज जी पारख, बीकानेर (श्रीमती संतोष देवी पारख की पुण्यस्मृति में)

***** सर्वधर्मी सहयोग (महिला समिति) *****

6,000/- गुप्तदान, बीकानेर

6,000/- गुप्तदान, बीकानेर

1,100/- मोनालिसा जी लोकेश जी जैन, रायपुर

:: विशेष ::

श्रमणोपासक सदस्यता-3, संघ साधारण सदस्यता-5, समता युवा संघ सदस्यता-83

::: 1 अप्रैल 2024 से 31 जनवरी 2025 तक :::

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के बैंक खाते में निम्नलिखित राशियाँ विभिन्न दानदाताओं ने जमा करवाई हैं, लेकिन जमाकर्ता के नाम व किस मद हेतु राशि जमा की गई है इसकी सूचना कार्यालय को प्राप्त नहीं होने से ये राशियाँ संघ के सस्पेंस खाते में संयोजित हैं। अत: जिन दानदाताओं ने राशि के सामने अंकित दिनांक को ये राशियाँ जमा करवाई हैं, वे केंद्रीय कार्यालय, बीकानेर को मोबाइल नं. 7976520588 पर सूचित कर अपनी पक्की रसीद अतिशीघ्र ही प्राप्त करें।

दिनांक	*राशि*	*अन्य विवरण*
एस.बी.आई. बैंक		
02.04.24	1,100/-	UPI सिद्धार्थ
04.04.24	500/-	नकद
06.04.24	1,000/-	UPI आदित्य जैन
12.04.24	501/-	UPI विपुल जैन
19.04.24	1,100/-	UPI विकास
19.04.24	1,000/-	NEFT अशोका रेजीडेंसी
13.05.24	5,100/-	नकद
14.05.24	1,100/-	UPI सिंपल
14.05.24	800/-	UPI सचिन
07.06.24	4,000/-	NEFT अभिषेक किरण स्टूडियो
10.06.24	21,000/-	By Trf.
17.06.24	2,100/-	UPI पारसमल जैन
19.06.24	2,960/-	UPI रचना
19.06.24	1,920/-	UPI सुनीत विनोद
01.07.24	3,133/-	IMPS
01.08.24	3,133/-	UPI विमल कुमार
16.08.24	2,100/-	TRF
04.09.24	1,101/-	UPI ईश्वर जैन
18.09.24	5,000/-	UPI निकुंज शाह
19.09.24	6,000/-	NEFT राजेंद्र क्लॉथ
20.09.24	9,000/-	UPI ऋषभ जैन
01.10.24	1,000/-	UPI आयुर्षी
04.10.24	30,000/-	CH.1218 DCB
04.10.24	2,500/-	नकद
20.10.24	1,500/-	UPI रानी जैन
23.10.24	2,000/-	UPI महावीर
02.11.24	2,000/-	UPI महावीर
02.11.24	2,100/-	UPI मनोज
01.12.24	5,100/-	IMPS शांता बाई प्रेमचंद
02.12.24	1,945/-	UPI प्रतीक शाह
27.12.24	33,150/-	नकद तरुण कुमार
28.12.24	5,000/-	UPI नीलम जैन
31.12.24	45,000/-	नकद तरुण कुमार
31.12.24	36,850/-	नकद तरुण कुमार
01.01.25	45,000/-	नकद
08.01.25	5,500/-	नकद
14.01.25	2,800/-	नकद
23.01.25	1,100/-	UPI राजेश
ए.यू. बैंक		
16.11.24	2,400/-	UPI शशांक जैन

उपरोक्त भेंटदाताओं का श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा आभार व्यक्त किया जाता है। आप इसी तरह संघ के उत्थान में अपना योगदान बनाए रखें। -जय जिनेंद्र!

भावभीनी श्रद्धांजलि

सुश्रावक संजय कुमार जी गुलगुलिया

(देशनोक/त्रिपुर)

सुश्रावक संजय कुमार जी गुलगुलिया सुपुत्र स्व. श्रीमती कमला देवी-भीखमचंद जी गुलगुलिया, देशनोक निवासी, त्रिपुर प्रवासी का **दिनांक 25 जनवरी 2025** को त्रिपुर में देहावसान हो गया। आपका जन्म 10 नवंबर 1965 को देशनोक में स्व. श्री नेमचंद जी गुलगुलिया के पौत्र के रूप में हुआ। शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी रहते हुए आपने त्रिपुर को अपनी कर्मस्थली बनाया। आपका शुभविवाह देशनोक निवासी, उदारबंद प्रवासी स्व. श्रीमती किस्तूरी देवी-रामलाल जी भूरा की सुपुत्री मंजू जी भूरा के साथ हुआ। गुलगुलिया व भूरा, दोनों परिवार स्मृतिशेष समता विभूति आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. एवं वर्तमान शासनेश परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के प्रति अनन्य श्रद्धावान हैं।

श्री संजय जी संघ के प्रत्येक कार्य में अग्रणी रहने के साथ-साथ चारित्रात्माओं की सेवा एवं आचार्य भगवन् के आयामों से स्वयं को पावन करने का लक्ष्य रखते थे। आप स्थानीय श्रावक-श्राविकाओं एवं परिवारजनों को संघ एवं सामाजिक कार्यक्रमों में अग्रणी रहने हेतु प्रेरणा देते थे। अनाथाश्रम एवं गौशाला आदि में भी आपका सहयोग सदैव रहता था। आपने अपने ज्येष्ठ सुपुत्र के शुभविवाह पर आचार्य श्री रामेश के विशिष्ट आयाम उत्क्रांति के नियमों का अक्षरशः पालन किया। आप अपने पीछे संस्कारवान, संघ व शासन समर्पित भरा-पूरा परिवार छोड़कर गए हैं। अरिहंत प्रभु एवं गुरुदेव से यही प्रार्थना है कि श्री संजय जी की आत्मा को शीघ्र ही मोक्ष प्राप्त हो।

:: श्रद्धानवत ::

भीखमचंद जी गुलगुलिया (पिता), **मंजू देवी** (धर्मपत्नी), **हेमंत-सुमन, सुशील-कनक** (भाई-भाभी), **शोभा देवी-निर्मल जी दफ्तरी** (बहन-बहनोई), **विशाल-वैशाली** (पुत्र-पुत्रवधू), **अमम** (पुत्र), **अंकिता-सिद्धार्थ जी समदड़िया** (पुत्री-दामाद), **ध्रुव** (भतीजा), **मल्लिका-अंकुश जी पुगलिया, विदिशा-नीरज जी संचेती** (भतीजी-दामाद), **अंजलि** (भतीजी), **तरुण-पूजा दफ्तरी** (भांजा-भांजावधू), **निशा-बसंत जी गोलछा, निधि-अंकित जी रांका** (भांजी-दामाद), **अयांश, दिशा, धृति, विराज, एकांश** (दोहित्र, दोहित्री) **एवं समस्त गुलगुलिया परिवार।**

विनम्र श्रद्धांजलि

नोखा/जहाजपुर। सुश्रावक वीर पिता श्री कन्हैयालाल जी चोरड़िया सुपुत्र स्व. श्री कंदनमल जी

चोरड़िया, नोखा निवासी जाजपुर प्रवासी का 7 नवंबर 2024 को जाजपुर में देवलोकगमन हो गया। आप अत्यंत ही धर्मशील, मिलनसार, सहज व्यक्तित्व के धनी थे। आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा थी। आपकी संसारपक्षीय सुपुत्रियाँ साध्वी श्री सुमेधा श्री जी म.सा. एवं साध्वी श्री समिधा श्री जी म.सा. आचार्य श्री रामेश शासन में धर्म की प्रभावना कर रही हैं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

लूणकरणसर। सुश्रावक सुरेंद्र कुमार जी सुपुत्र स्व. श्री संपतलाल जी सेठिया का 58 वर्ष की आयु में 18 दिसंबर 2024 को निधन हो गया। आप आचार्य श्री

रामेश के प्रति पूर्ण निष्ठावान थे। विहार सेवा एवं चारित्रात्माओं के दर्शन-वंदन का लक्ष्य रखते थे। आप साध्वी श्री गुणसुंदरी जी म.सा. के संसारपक्षीय भाई थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

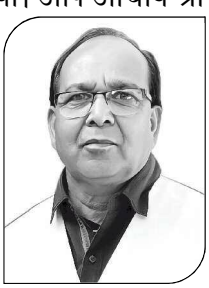

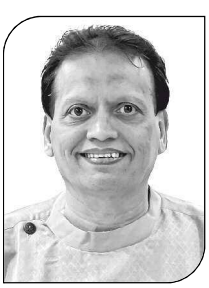

पुणे। सुश्रावक पूनमचंद जी कोटड़िया, शहादा निवासी का 23 दिसंबर 2024 को निधन हो गया। आप आचार्य श्री रामेश के अनन्य भक्त थे। आपका जीवन अध्यात्म से ओत-प्रोत था। आपने अनेक उपवास, एकासना आदि तपस्याएँ कीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

भींडर। सुश्रावक रौनक जी सुपुत्र अनिल कुमार जी वया का 27 वर्ष की आयु में 24 जनवरी

2025 को निधन हो गया। आप देव-गुरु-धर्म के प्रति पूर्ण श्रद्धावान थे। इसी वर्ष साध्वी श्री समता श्री जी म.सा. के चातुर्मास में भी आपने अनुकरणीय सेवाएँ दीं। आप चारित्रात्माओं की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे।

अठाना। सुश्रावक मदनलाल जी लोढ़ा का 91 वर्ष की आयु में 25 जनवरी 2025 को महाप्रयाण

हो गया। आपका जीवन सादगी, सरलता से परिपूरित था। प्रतिदिन प्रार्थना एवं सामायिक के साथ-साथ चारित्रात्माओं की सेवा अग्रणी रहते थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

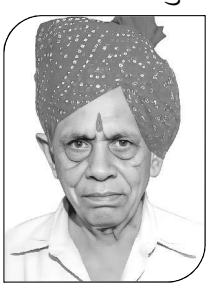

उदयपुर। सुश्रावक नानालाल जी वया मूल निवासी बंबोरा का 6 फरवरी 2025 को देहावसान हो गया। आपकी देव-गुरु-धर्म के प्रति अगाध श्रद्धा व समर्पणा थी। आप धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र

में सदैव तत्पर रहते थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

कोटा। सुश्रावक पंकज जी पुत्र स्व. श्री जवाहरलाल जी सांड का 41 वर्ष की आयु में 11 फरवरी 2025 को निधन हो गया। आप बहुत ही मिलनसार, हँसमुख व्यक्तित्व के धनी थे। आचार्य श्री रामेश पर असीम श्रद्धा के साथ तेले एवं अठाई तपस्या करने का लक्ष्य रखते थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

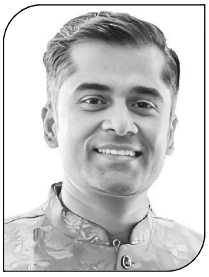

बीकानेर। सुश्राविका संतोष देवी धर्मपत्नी कमलचंद जी पारख का 72 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप प्रतिदिन सामायिक, त्याग, व्रत-नियम करने का लक्ष्य रखती थीं। आपने तीन वर्षीतप, एक से नौ की लड़ी से जीवन सजाया हुआ था। कैंसर जैसी व्याधि में भी समाधि भावों में रमण करती थीं। आपकी आचार्य श्री नानेश-रामेश पर अटूट श्रद्धा थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

सुधी पाठकों से निवेदन!

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के मुखपत्र श्रमणोपासक के 62 वर्ष के सफर में अनेक अवसरों पर विविध विषयों पर विशेषांकों का प्रकाशन किया गया है। इन विशेषांकों में विषय संदर्भित सामग्री को प्रमुखता से प्रकाशित करने के साथ-साथ धर्म-ध्यान, तप-त्याग संबंधी विषय सामग्री को भी प्राथमिकता देते हुए प्रकाशित किया गया है। आप सुधी पाठकों से निवेदन है कि यदि आपके पास इन विशेषांकों की प्रतियाँ सुरक्षित रखी हों तो उन्हें केंद्रीय कार्यालय - **श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, जैन कॉलेज के सामने, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.)** को भिजवाने का कष्ट करें। इस विषय में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए आप **संपर्क सूत्र 9799061990** पर संपर्क कर सकते हैं। आपकी जानकारी के लिए विशेषांकों की सूची इस प्रकार है -

क्र.सं.	विशेषांक का नाम	प्रकाशन वर्ष
1.	आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. शताब्दी विशेषांक	20 सितंबर 1976
2.	समता विशेषांक	25 अगस्त 1978
3.	बाल विशेषांक	25 सितंबर 1979
4.	धर्मपाल विशेषांक	10 मार्च 1984
5.	रजत जयंती विशेषांक	25 सितंबर 1987
6.	संयम साधना विशेषांक	25 मार्च 1990
7.	युवाचार्य विशेषांक	10 दिसंबर 1992
8.	दीक्षा विशेषांक	मार्च 1992
9.	गणपतराज जी बोहरा विशेषांक	अगस्त 1999
10.	आचार्य श्री नानेश स्मृति विशेषांक	10 व 25 अक्टूबर 2000
11.	साध्वी श्री इंदर कँवर जी म.सा. विशेषांक	20 फरवरी 2012
12.	स्वर्ण जयंती विशेषांक	20 नवंबर 2012
13.	युवाचार्य पदारोहण विशेषांक	20 सितंबर 2017

संथारा साधिका साध्वी श्री सांत्वना श्री जी म.सा. का 19 दिवसीय संथारे सहित पंडितमरण

बीकानेर, 12 फरवरी 2025। परम पूज्य आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के सान्निध्य में संयम साधना में रत साध्वी श्री सांत्वना श्री जी म.सा. का संथारे के 19वें दिन 12 फरवरी 2025 को समता साधना भवन (मालू कोटड़ी) में पंडितमरण हो गया। पिछले कुछ समय से आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी हुई थी। स्वास्थ्य में गिरावट को देखते हुए आपको पूर्ण सजगता के साथ 25 जनवरी 2025 को प्रातः 10 बजे तिविहार संथारे के प्रत्याख्यान करवाए गए। संथारे के समाचार प्राप्त होते ही अनेक स्थानों से श्रावक-श्राविकाओं का दर्शनार्थ आवागमन होने लगा। सान्निध्यवर्ती साध्वियों ने अनवरत ज्ञान-ध्यान, सूत्र आदि श्रवण करवाने का क्रम जारी रखा। श्रावक-श्राविकाओं द्वारा नवकार मंत्र जाप किया गया।

देशनोक निवासी श्रीमती शांति देवी कोठारी (साध्वी श्री सांत्वना श्री जी म.सा.) की दीक्षा परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. की विशेष आज्ञा से 26 अप्रैल 2015 को बीकानेर में 67 वर्ष की आयु में संपन्न हुई। आपने लगभग 10 वर्षों तक अपूर्व संयम साधना कर संघ, समाज व शासन को गौरवान्वित किया।

आपश्री जी ने पूर्ण सजगता व आत्मबल के साथ संथारे की साधना कर अपने तृतीय मनोरथ को पूर्ण किया। ज्ञातव्य है कि संथारे के दौरान आपके सांसारिक पौत्र मुमुक्षु चाहत जी कोठारी (देशनोक/ बेंगलुरु) का आज्ञा-पत्र गुरुचरणों में समर्पित हुआ और उनकी दीक्षा महत्तम शिखर महोत्सव के अंतर्गत 7 फरवरी 2025 को नोखा में संपन्न 9 दीक्षाओं के साथ हुई।

संथारा साधिका को जैसे ही आज्ञा-पत्र गुरुचरणों में समर्पित होने एवं 7 फरवरी 2025 को दीक्षा स्वीकृत होने की जानकारी मिली तो आपके चेहरे का तेज अविस्मरणीय बन गया। उस पावन मुखमुद्रा की एक झलक जिसने भी देखी, वे चारित्रात्माओं की संयम भावना की उच्चता को प्रत्यक्ष देख पाया। ऐसा लग रहा था जैसे आप इसी क्षण का इंतजार कर रही थीं कि मेरे बाद भी राम गुरु शासन में मेरे सांसारिक परिवार से कोई न कोई प्रतिनिधित्व करने वाला हो।

संथारा साधिका जी को 12 फरवरी को प्रातः 8:30 बजे चौविहार संथारे का प्रत्याख्यान करवाया गया। इसी दिन प्रातः 9:30 बजे आपका संथारा सीझ गया। संथारा सीझने के समाचार ज्ञात होते ही सैकड़ों श्रावक-श्राविकाएँ अपनी अंतिम श्रद्धांजलि देने हेतु समता साधना भवन की ओर उमड़ पड़े।

दोपहर 12.15 बजे आपकी डोलयात्रा समता साधना भवन से प्रारंभ होकर विभिन्न मार्गों से होते हुए आचार्य प्रवर एवं संथारा साधिका जी सहित अनेकानेक जय-जयकारों के साथ गोगागेट स्थित ओसवाल श्मशान भूमि पहुँची। जहाँ आपके सांसारिक सुपुत्रों कन्हैयालाल जी व नवरतन जी कोठारी सहित अन्य परिजनों सहित राष्ट्रीय महामंत्री, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, बीकानेर संघ अध्यक्ष, मंत्री आदि पदाधिकारियों एवं गणमान्यजनों ने मुखाग्नि दी।

ओसवाल श्मशान भूमि में संघ के राष्ट्रीय महामंत्री, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगणों सहित स्थानीय पदाधिकारियों व श्रावक-श्राविकाओं ने साध्वी जी गुणानुवाद किया।

संक्षिप्त परिचय

साध्वी श्री सांत्वना श्री जी म.सा.

सांसारिक नाम :
श्रीमती शांति देवी कोठारी
जन्मस्थान :
देशनोक (राज.)
परिवार से दीक्षित :
श्री रामचरण मुनि जी म.सा.
पारिवारिक परिचय
पति :
स्व. श्री भंवरलाल जी कोठारी
सास-ससुर :
स्व. श्रीमती बरजी देवी-ताराचंद जी कोठारी

माता-पिता :
स्व. श्रीमती हुलासी देवी-मोतीलाल जी सेठिया
पुत्र-पुत्रवधू :
कन्हैयालाल जी-मंजू देवी,
नवरतन जी-राजमति देवी,
शिवरतन जी-अनिता देवी,
महेंद्र जी-रेखा देवी कोठारी
पुत्री-दामाद :
लीला देवी-गणेशमल जी सांड,
शारदा देवी-मोतीलाल जी संचेती

संथारा 50वें दिन भी अद्भुत आत्मानुभूति के साथ गतिमान

उदयपुर, 24 फरवरी 2025। आचार्य श्री नानेश ध्यान केंद्र में संथारा साधिका साध्वी श्री रामप्रेम श्री जी म.सा. के संथारे में अपूर्वतम धर्म छटा के अद्भुत दर्शन हो रहे हैं। 24 फरवरी को संथारे का 50वाँ दिवस सुखसातापूर्वक गतिमान रहा। ज्ञातव्य है कि आपश्री जी ने 6 जनवरी को पूर्ण सजग अवस्था में स्वैच्छिक सहमति से तिविहार संथारे के प्रत्याख्यान ग्रहण कर अब तक की 50 दिवसीय यात्रा में आत्मसमाधि व आत्मबल का परिचय दिया है। संथारा ग्रहण करने के पश्चात् इस नश्वर संसार की समस्त सावद्य क्रियाओं को त्यागने की भावना बनी, जो आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. की विशेष आज्ञा से 13 जनवरी को सफलीभूत हुई और '**संयम के भाव आज जगे, मेरे नाम के आगे राम लगे**' की पंक्ति को चरितार्थ वरते हुए आपने संसार की नश्वरता का उदाहरण जन-जन के समक्ष प्रस्तुत किया। आपश्री जी निरंतर समभाव से संथारा व संयम साधना में लीन हैं। अत्र विराजित साध्वीवर्याएँ संथारा साधिका जी के मनोरथ की पूर्णता में सहभागी बन अनूठी सेवा का उदाहरण प्रस्तुत कर रही हैं। दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहता है। हम सभी संथारा साधिका जी की समता, सजगता एवं आत्मबल का अनुमोदन करते हुए वंदन करते हैं।

- अल्पेश धाकड़

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

चिंतन की कड़ियाँ समभाव को कैसे साधें

पानी की तरफ मुँह करने से, पानी को देखने से प्यास नहीं बुझती। मिठाई की दुकान के सामने खड़े रहने से मुँह मीठा नहीं होता। बैंक के सामने खड़े हो जाने से या बैंक में चले जाने मात्र से रुपए प्राप्त नहीं हो सकते। इसी तरह धर्मस्थान में, मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, चर्च आदि में चले जाने से धर्ममय जीवन बन जाए, यह जरूरी नहीं है। धर्म की क्रियाएँ करने मात्र से धर्म नहीं होगा, ऐसी बात सुन-पढ़कर व्यक्ति विचार करता है कि फिर धर्म है क्या? धर्म है- समभाव। समभाव जीवन में आ जाए तो समझना चाहिए कि जीवन में धर्म प्रविष्ट हो पाया है। भगवान महावीर के समय उनके संतों की संख्या चौदह हजार थी, पर केवली मात्र सात सौ ही बन पाए। इसका कारण क्या? स्पष्ट है भगवान का सामीप्य पाकर भी वे अपने भीतर रही भगवत्ता को प्रकट करने में समर्थ नहीं हो पाए।

समभाव, एक दिन की साधना का परिणाम नहीं है। उसके लिए कभी-कभी कई जिंदगियाँ भी लग सकती हैं। लग जाती हैं। कहीं-कहीं हमें तत्काल समभाव प्रकट होता दिखता है। जैसे माता मरु देवी, गजसुकुमाल आदि। पर उस समभाव में उनके पूर्वजन्मों की साधना का संबंध भी जुड़ा हुआ है। कभी-कभी किसी जीव का तत्काल क्षयोपशम पकता है तो उसका परिणाम उसी समय नजर आने लगता है। पर ऐसा बिरला ही होता है। सामान्यतया व्यक्ति को समभाव के लिए प्रयत्नशील होना होता है। उसका पुरुषार्थ ही रंग लाता है, जिससे वह शत्रु और मित्र, दोनों को एक दृष्टि से देख पाने में समर्थ होता है। प्रश्न होता है कि समभाव की प्राप्ति के लिए क्या किया जाए? यदि सचमुच में समभाव प्राप्त करने की ललक है तो केवल एक ही प्रयत्न पर्याप्त है। वह यह कि अपने में किसी भी घटना-प्रसंग आदि के संबंध में प्रतिक्रिया पैदा न होने दें। जो जैसा घटा है उसे द्रष्टाभाव से देखें। प्रतिक्रिया नहीं करें। शुरुआत भोजन आदि पदार्थों से की जा सकती है। *(क्रमशः)*

*-परम पूज्य आचार्य प्रवर **1008** श्री रामलाल जी म.सा.*

केसरिया कार्यशाला

इसके अंतर्गत आचार्य की आठ संपदाओं का अध्ययन किया जा रहा है। इस ज्ञानयात्रा में 99 क्षेत्र की लगभग 1800 श्राविकाएँ लाभांवित हो रही हैं। अनुमानतः मार्च 2025 तक यह अध्ययन पूर्ण होगा। वर्तमान में '**संग्रह परिज्ञा संपदा**' का अध्ययन चल रहा है। सभी संपदाओं में रोचक गतिविधियाँ, खेल एवं छोटी-छोटी प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं, जिनसे श्राविकाओं को व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होता है। नए-नए क्षेत्र भी उत्साहपूर्वक इस प्रवृत्ति से जुड़ रहे हैं।

- राष्ट्रीय संयोजिका

साधुमार्गी वुमन्स मोटिवेशनल फोरम

इसके तहत पहली ऑफलाइन गतिविधि **'Who am I?'** का आयोजन जयपुर-ब्यावर अंचल द्वारा किया गया। इस आयोजन में सभी अंचलों ने अत्यंत उत्साह से भाग लिया।

Sadhumargi Women's Motivational Forum

❄ **पहला चरण : Who am I?**

इस चरण में निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार प्रस्तुत करने थे –

● मैं कौन हूँ? (स्वयं का परिचय) ● मेरा आध्यात्मिक जीवन (मैं और क्या सीखना चाहती हूँ?) ● मेरा योगदान (संघ के प्रति मेरी सेवा और योगदान) ● कृतज्ञता की कला (मेरे सहायक या प्रेरणास्रोत के प्रति आभार व्यक्त करना)।

❊ **दूसरा चरण : तोल-मोल के खरीदो**

इस चरण में यह विचार किया गया कि हम कहीं अधिक प्रलोभनों में आकर आवश्यकता से अधिक तो नहीं खरीद रहे हैं? हमें परिग्रह कम करना चाहिए। किस प्रकार, कब, कहाँ और कितना लेना उचित है तथा कैसे अपने परिग्रह को सीमित कर व्यय को नियंत्रित कर बचत को बढ़ाया जा सकता है – इस विषय पर विचार-विमर्श हुआ।

❊ **तीसरा चरण - ध्यान (Meditation)**

महावीर के शासन में हम आचार्य श्री नानेश के समीक्षण ध्यान के अनुयायी हैं। इस व्यस्त जीवन में जहाँ सभी अपने-अपने कार्यों में लगे हुए हैं, हमें ध्यान के माध्यम से स्वयं को शांति प्रदान करनी चाहिए। इस चरण में प्रतिभागियों ने 5 मिनट का ध्यान कर आत्मशुद्धि एवं मानसिक संतुलन का अनुभव किया।

❊ **परिणाम एवं अनुभव**

इस तीन चरणीय गतिविधि में सभी प्रतिभागियों को आत्मचिंतन करने का अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने अपने संघ के प्रति योगदान पर विचार किया तथा अपने सहयोगियों और मार्गदर्शकों के प्रति आभार व्यक्त किया। सभी ने अनुभव किया कि यह गतिविधि अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक और आत्मविश्लेषण को प्रेरित करने वाली रही।

धार्मिक शिविर

देश के अनेक क्षेत्रों में चारित्रात्माओं के पावन सान्निध्य में विविध विषयों पर आयोजित शिविरों का विवरण –

क्र.सं.	विषय	क्षेत्र	चारित्रात्माओं का सान्निध्य
1.	तत्वार्थ सूत्र	राजनांदगाँव	शासन दीपक श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा.
2.	हम विवेकवान कैसे बनें, शुद्ध क्रिया से भव पार, छठे आरे का वर्णन, हिंसा का वर्णन, हिंसा में धर्म नहीं कह गए केवलज्ञानी, मेरी भाषा मेरी पहचान बने, Happiness Life, आत्मचिंतन, कैसी हो हमारी दिनचर्या	अंबागढ़ चौकी	शासन दीपिका साध्वी श्री श्रुतशीला श्री जी म.सा.
3.	सिद्धों के तैतीस बोल का अल्पबहुत्व, अंतक्रिया का थोकड़ा, भगवान महावीर-गुरु राम-मैं, एक कदम शुद्ध सामायिक की ओर	गुंडरदेही	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रियंका श्री जी म.सा.

धार्मिक कार्य

क्र.सं.	क्षेत्र	कार्य
1.	मुंबई	120 सर्वधर्मी परिवारों में ₹57,600/- का अनाज तथा शॉल आदि का वितरण किया गया।
2.	नवी मुंबई	समता महिला मंडल द्वारा ₹11,000/- 'बेलापुर गौशाला' में दिए गए।
3.	अहमदाबाद	2700 से अधिक बच्चों को ममरा एवं तिल के लड्डू वितरित किए गए। गायों के लिए 500 किलो सब्जियाँ, 50 किलो गुड़, रोटी व लापसी तथा श्वानों को दूध, ब्रेड, बिस्किट खिलाए गए। मानव फाउंडेशन में घायल पक्षियों हेतु दवाओं व 90 किलो अनाज का सहयोग किया गया।
4.	बालोद	₹7,000/- की धनराशि 'महावीर गौशाला' में दी गई।
5.	राजनांदगाँव	₹2,100/- की धनराशि 'पांजरापोल गौशाला' में दी गई।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

(अंतर्गत श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ)

राष्ट्रीय अध्यक्षा (सत्र 2025-2027) मनोनयन हेतु सूचना

हमारे गौरवशाली संघ की महिला समिति की वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती पुष्पा जी मेहता का कार्यकाल आसोज सुदी 2, दिनांक 23 सितंबर, 2025 को पूर्ण होने जा रहा है। अतः आगामी सत्र 2025-2027 हेतु इस पद के लिए संघ समर्पित, सेवा भावना से ओत-प्रोत सुश्राविका, जो श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति की सदस्या हों, उनके नामांकन आमंत्रित किए जा रहे हैं। इस पद के लिए आप अपना अथवा अन्य किसी सुज्ञ महिला समिति सदस्या का नाम प्रस्तावित कर सकते हैं। कृपया अपना प्रस्ताव दिनांक 31 मार्च, 2025 से पूर्व निम्न पते पर भिजवाने का कष्ट करें -

नरेन्द्र गांधी

राष्ट्रीय अध्यक्ष - श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ

37, जवाहर मार्ग, कृषि उपज मंडी के सामने, नीमच रोड, पो. जावद, जिला नीमच-458330 (म.प्र.)

Mo.: 9425108224 (WhatsApp), Email : president@sadhumargi.com

- राष्ट्रीय महामंत्री, श्री अ.भा.सा. जैन संघ

अहिंसामूलक आचरण करने वाला ही साधु है, किंतु कोई साधु मकान, धर्मशाला आदि बनवाने का उपदेश देकर पृथ्वीकाय का आरंभ-समारंभ करता है। 'जल के कुए आदि खुदवाओं' ऐसा कहकर अप्काय का आरंभ-समारंभ करता है। विद्युत संचालित पंखा, कूलर, एसी, टेलीविजन आदि का उपयोग कर जो तेजस्काय का आरंभ-समारंभ करता है। पंखे आदि की हवा का उपयोग कर अथवा खुले मुँह बोलकर जो वायुकाय का आरंभ-समारंभ करता है। 'वनस्पति, फल-फूल लाओ' इत्यादि हिंसात्मक वचन बोलकर जो वनस्पतिकाय का आरंभ-समारंभ करता है। वह एक काया का आरंभ-समारंभ करता हुआ भी छहकाय जीवों का आरंभ-समारंभ करता है। ऐसा अणगार वेशधारी व्यक्ति भगवान महावीर एवं अनंत तीर्थंकरों के कथानुसार साधु नहीं है। उसे साधु कहना असाधु में साधु की बुद्धि रखना है।

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

उत्क्रांति कार्यक्रम

हुक्मसंघ के नवम नक्षत्र, सिरीवाल प्रतिबोधक, परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. द्वारा समाज में व्याप्त कुरीतियों, फिजूलखर्ची, दिखावे और बढ़ती आर्थिक विषमता के उन्मूलन के लिए उद्घोषित उत्क्रांति की आभा सर्वत्र फैल रही है। समाजजन उत्क्रांति के नियमों को ग्रहण कर पूरे मनोयोग से पालना कर रहे हैं। आप सभी निश्चित ही धन्यवाद के पात्र हैं। उत्क्रांति के अंतर्गत गत दो माह में संपन्न कार्यक्रमों का विवरण –

1. छोटी सादड़ी निवासी नक्षत्रमल जी मनीष जी सोनू जी वया के नूतन गृह-प्रवेश पर स्वरुचि भोज का आयोजन 16 जनवरी को संपन्न हुआ।
2. उदयपुर निवासी मनोज जी कोठारी का नूतन गृह-प्रवेश 22 जनवरी को संपन्न हुआ।
3. जावरा निवासी सुदेश जी खारीवाल के सुपुत्र सुयश का विवाह जावद निवासी राजेश जी लोढ़ा की सुपुत्री चहेती के साथ 26 जनवरी को संपन्न हुआ।
4. पुर (भीलवाड़ा) निवासी स्व. श्री मोहनलाल जी सेठिया के यहाँ बत्तीसी का कार्यक्रम 26 जनवरी को संपन्न हुआ।
5. देवरिया (भीलवाड़ा) निवासी छीतरमल जी सुरिया के सुपौत्र देव का मुंडन संस्कार 31 जनवरी को संपन्न हुआ।

जीवदया सप्ताह

भगवान महावीर का संदेश - जीओ और जीने दो... 'अहिंसा परमो धर्मः'

5 से 14 जनवरी 2025। परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. की असीम कृपा से एक राष्ट्र-एक संघ-एक कार्य-एक स्वरूप के अनुरूप महत्तम महोत्सव के अंतर्गत सामाजिक सरोकारों की शृंखला के अंतर्गत राष्ट्रीय स्तर पर जीवदया का पावन कार्यक्रम संपन्न हुआ।

इस कार्यक्रम के तहत वृद्धाश्रम में जरूरी खाद्य सामग्री, गौशाला, जरूरतमंदों, बच्चों को कंबल, शॉल, प्रभुत मात्रा में गायों को आहार, कबूतर आदि पक्षियों को दाना-पानी, पशुओं को रोटी, गुड़, लापसी, हरा चारा, आयुर्वेदिक लड्डू, चींटियों को आटा, श्वानों को बिस्किट, रोटी व दूध, मछलियों को दाना, बीमार पशुओं के लिए दवाइयाँ, सर्जिकल उपकरण आदि वितरित करने के साथ-साथ पशुओं की खाद्य सामग्री रखने हेतु ड्रम, तगारियाँ, गौधन में कैल्शियम की कमी दूर करने के लिए साबुत चना व पशुओं के बचाव के लिए ग्रीन नेट आदि की भी व्यवस्था की गई। कुछ स्थानों पर घरों से रोटियाँ संग्रहित कर पशुओं को खिलाई गई तो कहीं पशुओं के लिए ट्रॉली भरकर चारा उपलब्ध करवाया गया। कुछ स्थानों पर नकद राशि भेंट कर भविष्य में पशु रक्षण हेतु फण्ड उपलब्ध करवाने एवं श्वानों व गायों के गले में रेडियम पट्टी बाँधकर उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में विशेष प्रयास हुए।

इन सब में सबसे अनूठा कार्यक्रम रहा पशुओं को अभयदान देने का। अनेक स्थानों पर कत्लखानों व कसाइयों से पशुओं को मुक्त करवाकर उन्हें स्थानीय गौशालाओं में आश्रित करवाया गया तो कहीं पतंग डोर से घायल हुए पशु-

पक्षियों के इलाज के लिए अस्थायी हॉस्पिटल संचालित किया गया। जिनमें पशुओं के ऑपरेशन भी हुए। इसी के साथ बीमार पशुओं (गाय, ऊँट, बंदर, घोड़े, श्वान आदि) के लिए सेवा प्रदान की गई।

स्थानीय समता युवा संघों के सदस्यों के साथ ही साथ शिखर महोत्सव सदस्यों, समता महिला मंडल, समता बहू मंडल, समता बालिका मंडल एवं तरुणा युवाओं का प्रत्यक्ष और परोक्ष सहयोग प्राप्त हुआ। सभी गुरुभक्त, संघनिष्ठ सदस्यों का हृदय से आभार-साधुवाद।

कार्यक्रम के संदर्भ में **मेवाड़ अंचल** के भीलवाड़ा, बंबोरा, बड़ीसादड़ी, उदयपुर, बेगूँ, आसावरा माताजी, बोहेड़ा, चिकारड़ा, भीम, **बीकानेर-मारवाड़ अंचल** के बीकानेर, नोखागाँव, जयपुर-ब्यावर अंचल के सवाई माधोपुर, **मध्य प्रदेश अंचल** के खेतिया, इंदौर, जावद, **छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल** के डौंडीलोहारा, **कर्नाटक-आंध्र प्रदेश अंचल** के मैसूर, हैदराबाद, **तमिलनाडु अंचल** के चेन्नई, **मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई. अंचल** के सूरत, **महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल** के धुलिया, शहादा, **बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान-झारखंड-आंशिक ओड़िशा अंचल** के हावड़ा आदि क्षेत्रों के विवरण प्राप्त हुआ तथा शेष क्षेत्रों से संक्षिप्त विवरण प्राप्त हुआ। सम्पूर्ण विवरण तालिका के माध्यम से आपके अवलोकनार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं -

क्र.	अंचल	क्षेत्र	कार्यक्रम	क्र.	अंचल	क्षेत्र	कार्यक्रम
1.	मेवाड़	90	635	7.	तमिलनाडु	1	1
2.	बीकानेर-मारवाड़	26	67	8.	मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई.	12	38
3.	जयपुर-ब्यावर	13	16	9.	महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश	15	18
4.	मध्य प्रदेश	38	113	10.	बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान	32	64
5.	छत्तीसगढ़-ओड़िशा	40	79	11.	पूर्वोत्तर	38	44
6.	कर्नाटक-आंध्र प्रदेश	10	19	12.	दिल्ली-पंजाब-हरियाणा-उत्तरी	6	10
					कुल	321	1104

'Exam Ki Baat Aapke Sath'

श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ की ओर से **तरुण शक्ति** प्रवृत्ति के अंतर्गत 12 से 18 वर्ष के तरुण युवाओं हेतु आगामी परीक्षाओं को ध्यान में रखते हुए 1 फरवरी 2025 को ऑनलाइन जूम मीटिंग द्वारा **'Exam Ki Baat Aapke Sath'** सेमिनार आयोजित किया गया। कार्यक्रम में बच्चों को मार्गदर्शन के साथ-साथ मेमोरी व मनोबल बढ़ाने, अच्छे स्कोर प्राप्त करने आदि उद्देश्य से उत्साहवर्धन किया गया।

तरुण शक्ति के राष्ट्रीय संयोजक के साथ-साथ मोटिवेशनल स्पीकर चेतन जी सेठिया सहित बच्चों की उपस्थिति रही।

मंगलाचरण के पश्चात् राष्ट्रीय संयोजक ने मोटिवेशनल स्पीकर का आत्मीय स्वागत करते हुए उनका परिचय दिया।

एक घंटे के इस सेशन में मोटिवेशनल स्पीकर ने बच्चों को बताया कि पढ़ाई हमेशा स्मार्ट स्टडी के रूप में होनी चाहिए। इसके लिए आप सभी बच्चों को 2-2 घंटे के स्लॉट में समय को बाँटते हुए पढ़ाई करनी चाहिए। आपका Body Posture हमेशा सही होना चाहिए। हर किसी सब्जेक्ट का एक सेट टाइम हो और

सबसे जरूरी है फोन व टीवी का उपयोग बिलकुल भी न हो। आपने विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से प्रयोगात्मक ज्ञानार्जन करवाया।

कार्यक्रम से पूर्व 60 से अधिक बच्चों ने ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन करवाया एवं कुछ बच्चों ने अपनी जिज्ञासाएँ प्रेषित कीं, जिनका समाधान कार्यक्रम के दौरान मोटिवेशनल स्पीकर द्वारा किया गया। कार्यक्रम में 30 से अधिक तरुण युवाओं ने भाग लिया, जिनको मनोरंजन के साथ स्कूली एवं प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु समयबद्ध रूपरेखा के लिए मार्गदर्शन दिया गया। अंत में राष्ट्रीय संयोजक द्वारा मोटिवेशनल स्पीकर एवं तरुण युवाओं का आभार व धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

रविवारीय समता आराधना – आंचलिक रिपोर्ट (जनवरी 2025)

क्रमांक	अंचल का नाम	आंचलिक गतिविधि	05-01	12-01	19-01	26-01
1	मेवाड़	आंचलिक उपस्थिति	1368	1521	1394	1170
		आंचलिक क्षेत्र	87	90	88	89
2	बीकानेर-मारवाड़	आंचलिक उपस्थिति	545	572	534	635
		आंचलिक क्षेत्र	32	34	37	42
3	जयपुर-ब्यावर	आंचलिक उपस्थिति	515	401	407	381
		आंचलिक क्षेत्र	25	25	24	24
4	मध्य प्रदेश	आंचलिक उपस्थिति	848	797	779	702
		आंचलिक क्षेत्र	72	73	72	73
5	छत्तीसगढ़-ओड़िशा	आंचलिक उपस्थिति	2191	2034	1942	1520
		आंचलिक क्षेत्र	145	149	144	146
6	कर्नाटक-तेलंगाना-आंध्र प्रदेश	आंचलिक उपस्थिति	303	672	420	294
		आंचलिक क्षेत्र	29	27	21	28
7	तमिलनाडु	आंचलिक उपस्थिति	232	214	137	144
		आंचलिक क्षेत्र	13	16	11	11
8	मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई.	आंचलिक उपस्थिति	475	524	497	389
		आंचलिक क्षेत्र	19	16	16	20
9	महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश	आंचलिक उपस्थिति	614	623	722	560
		आंचलिक क्षेत्र	54	43	45	62
10	बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान-झारखंड-आंशिक ओड़िशा	आंचलिक उपस्थिति	525	452	409	510
		आंचलिक क्षेत्र	42	43	40	38
11	पूर्वोत्तर	आंचलिक उपस्थिति	300	293	218	295
		आंचलिक क्षेत्र	30	34	36	36
12	दिल्ली-पंजाब-हरियाणा-उत्तरी	आंचलिक उपस्थिति	81	76	43	80
		आंचलिक क्षेत्र	9	8	6	8
13	अंतरराष्ट्रीय शाखा	आंचलिक उपस्थिति	16	14	44	9
		आंचलिक क्षेत्र	7	6	9	6
	संयुक्त रिपोर्ट					
	कुल उपस्थिति		8013	8193	7546	6689
	कुल क्षेत्र		564	564	549	583

जनवरी 2025 में समता शाखा आराधना में विभिन्न अंचलों में निम्न नवीन क्षेत्र शामिल क्षेत्र हुए हैं – ● **बीकानेर-मारवाड़ अंचल –** (1) रायसर, ● **तमिलनाडु अंचल –** (1) कोचीन (2) वेल्लूर, ● **मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई. अंचल –** (1) धर्मपुर (2) नडियाद, ● **महाराष्ट्र-खानदेश-विदर्भ अंचल –** (1) वरोरा (2) परतवाड़ा (3) बुढाना (4) बोदवड़ (5) भडगाँव, ● **बंगाल-बिहार-नेपाल अंचल –** (1) गेलंफू (2) राँची (3) सुनौली (4) बसीरहाट (5) मल्लारपुर (6) मुरारी (7) अररिया, ● **पूर्वोत्तर अंचल –** (1) जाखलाबांधा (2) नूतन बाजार (3) पैलापुल (4) काटीगोराह (5) फकीराग्राम (6) जोरहाट (7) दीमापुर, ● **अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र –** (1) बैंकॉक (दक्षिण-पूर्वी एशियाई देश थाईलैंड) (2) अलेक्जेंड्रिया (यू.एस.ए.)

इन क्षेत्रों में समता शाखा के लिए प्रयास करने हेतु सभी पदाधिकरियों एवं स्थानीय संघ सदस्यों को बहुत-बहुत साधुवाद। आशा करते हैं कि इन क्षेत्रों में समता शाखा का आयाम निरंतरता के साथ गतिमान रहे तथा संख्या में अभिवृद्धि होती रहे। जिन ग्राम/शहरों में अब तक समता शाखा नहीं हो रही है वहाँ भी आचार्य भगवन् के इस अनुपम आयाम को शीघ्रातिशीघ्र अवश्य प्रारंभ करने का लक्ष्य रखें।

मुंबई–गुजरात–यू.ए.ई अंचल प्रवास

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ के राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने अहमदाबाद से प्रवास प्रारंभ करते हुए वडोदरा, बारडोली व सूरत होते हुए नवसारी क्षेत्र में प्रवास किया।

सभी स्थलों पर सभा का शुभारंभ नवकार मंत्र आराधना व युवा साथियों के व्यक्तिगत परिचय से हुआ। प्रवासी दल ने संगठन की मजबूती की प्रभावना करते हुए बारडोली एवं नवसारी संघ/क्षेत्रों में समता युवा संघ के सत्र 2024-26 के लिए सर्वसम्मति से नवीन मनोनयन किया गया। सभी संघों में समता शाखा, उत्क्रांति, व्यसनमुक्ति, तरुण शक्ति, All Is Well (प्रतिक्रमण कंठस्थ), अन्य धार्मिक गतिविधियाँ, अभिमोक्षम् 2.0, महत्तम ग्रैंड फिनाले, सामाजिक कार्यक्रम व संगठन सहित विविध प्रवृत्तियों की भव्य प्रभावना की गई।

सभी प्रवास स्थलों पर प्रवासी दल का आत्मीय स्वागत व अभिनंदन किया गया। युवा साथियों ने प्रत्येक सभा में उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाई तथा संघ विकास हेतु सकारात्मक सुझावों का आदान-प्रदान किया। इस दौरान प्रवास नियमावली का पूर्ण रूप से पालन किया गया।

प्रवास के दौरान विभिन्न स्थानों पर विराजित शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (मोड़ी वाले) आदि ठाणा, शासन दीपिका साध्वी श्री सुमनप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा, शासन दीपिका साध्वी श्री सुसमृद्धि श्री जी म.सा. आदि ठाणा, शासन दीपिका साध्वी श्री शर्मिला श्री जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वंदन का लाभ प्राप्त हुआ।

– अंचल राष्ट्रीय मंत्री

श्रमणोपासक सदस्यों हेतु विशेष सूचना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ की दिनांक 4 जनवरी 2025 को कवर्धा (छ.ग.) में संपन्न कार्यसमिति बैठक में यह प्रस्ताव पारित किया गया है कि श्रमणोपासक के ऐसे सदस्य, जिनके संपर्क सूत्र (मो.नं.) अभी तक संकलित नहीं हो पाए हैं, उन सदस्यों को श्रमणोपासक पत्रिका का प्रेषण बंद कर दिया जाए। अत: जिन सदस्यों ने अपने संपर्क सूत्र अभी तक अपडेट नहीं करवाए हैं, उन सभी सदस्यों से निवेदन है कि आप अपने संपर्क सूत्र यथाशीघ्र ही श्रमणोपासक हेल्पलाइन नं. 9799061990 पर वॉट्सऐप के माध्यम से भिजवाने का कष्ट करें, ताकि आपकी प्रति का प्रेषण जारी रह सके।

– सह-संपादिका

मुमुक्षु सुश्री कृतिका जी देशवाल

संक्षिप्त परिचय

जन्म स्थान	:	नोखा मंडी (राज.)
मूल निवासी	:	देशनोक (राज.) **प्रवासी** - बंगईगाँव (असम)
जन्म तिथि	:	15 सितंबर 1998
व्यावहारिक शिक्षा	:	बी.टेक. (कंप्यूटर साइंस - इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी)
धार्मिक अध्ययन	:	श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र के 2 अध्ययन अर्थ सहित, कर्म प्रज्ञप्ति सूत्र अध्ययन 2 से 4, लघुदंडक, तैतीस बोल, जैन सिद्धांत बत्तीसी, श्रमण प्रतिक्रमण व अन्य थोकड़े
धार्मिक शिक्षा	:	आरुग्गबोहिलाभं
तपाराधना	:	पंचोला, तेला
पदयात्रा	:	200 किमी. (लगभग)
दीक्षा प्रसंग	:	16 फरवरी 2025, नोखा मंडी (राज.)

पारिवारिक परिचय

पड़ दादाजी-दादीजी	:	स्व. श्री बस्तीमल जी-स्व. श्रीमती रामी देवी देशवाल
बड़े दादाजी-दादीजी	:	स्व. श्री चंपालाल जी-स्व. श्रीमती मगनी देवी, स्व. श्री सोहनलाल जी-स्व. श्रीमती झमकू देवी देशवाल
दादाजी-दादीजी	:	स्व. श्री मोहनलाल जी-स्व. श्रीमती बिमला देवी देशवाल
छोटे दादाजी-दादीजी	:	ताराचंद जी-मैना देवी देशवाल
पिताजी-माताजी	:	नंदकिशोर जी-ममता जी देशवाल
बड़े पिताजी-माताजी	:	स्व. श्री गुलाबचंद जी-राजश्री जी, ओमप्रकाश जी-संतोष देवी देशवाल
भाई	:	निश्चय जी देशवाल
भुआजी-फूफाजी	:	चंद्रकला जी-जेठमल जी बोथरा, बिंदु जी-स्व. श्री प्रकाशचंद जी बैद
नानाजी-नानीजी	:	दुलीचंद जी-अमरा देवी चोरड़िया (नोखा मंडी)
मामाजी-मामीजी	:	मनोज जी, महेंद्र जी-अनिता जी चोरड़िया
मौसीजी-मौसाजी	:	मधु जी-राजेंद्र जी डागा

॥ जय गुरु नाना ॥ ॥ जय महावीर ॥ ॥ जय गुरु राम ॥

भव्य दीक्षा प्रसंग एवं अक्षय तृतीया पारणा महोत्सव 2025

राम चमकते भानु समाना

हुक्मसंघ के नवम् नक्षत्र, संयम के सजग प्रहरी, व्यसनमुक्ति प्रणेता, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील संप्रेरक, परमागम रहस्यज्ञाता, परम पूज्य **आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.** एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर, **श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा.** की असीम अनुकंपा से 30 अप्रैल 2025 को पावन जैन भागवती दीक्षा एवं अक्षय तृतीया पारणा महोत्सव का पावन प्रसंग सौभाग्योदय से गंगाशहर-भीनासर संघ को प्राप्त हुआ है।

सभी स्थानीय संघों एवं वर्षीतप आराधक श्रावक-श्राविकाओं से करबद्ध निवेदन है कि इस पावन अवसर पर पधारकर वर्षीतप पारणा व दीक्षा महोत्सव में सहभागी बनने का लाभ लेवें। इस शुभ अवसर पर पधारने से आपको आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर सहित अत्र विराजित चारित्रात्माओं के दर्शन, वंदन एवं प्रवचन श्रवण का लाभ सहज ही प्राप्त होना संभावित है। आपके आगमन एवं प्रस्थान की पूर्व सूचना नीचे दिए गए संपर्क सूत्र पर प्रदान कर व्यवस्था में सहयोग प्रदान करें।

:: संपर्क सूत्र ::

अध्यक्ष
(कौशल दुग्गड़)
9001037121

मंत्री
(चंचल कुमार बोथरा)
8118824833

आवास-निवास व्यवस्था
पारस डागा : 9636370200

लूणकरण सुराणा (संयोजक)
अक्षय तृतीया पारणा व्यवस्था
9414968833

दिलीप कातेला (संयोजक)
दीक्षा व्यवस्था
9829797638

निवेदक

श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ
श्री समता युवा संघ संघ
श्री समता महिला मंडल
श्री समता बहू मंडल
बालिका मंडल
गंगाशहर-भीनासर (राज.)

।। जय गुरु नाना ।।

।। जय महावीर ।।

।। जय गुरु राम ।।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

(अंतर्गत – श्री अ.भा.सा. जैन संघ)

राम चमकते भानु समाना

RELAUNCHING SOON

भावभीनी श्रद्धांजलि

सुश्राविका श्रीमती मोहिनी देवी पुगलिया

बीकानेर/कोयंबटूर/गंगाशहर। **सुश्राविका मोहिनी देवी पुगलिया** धर्मसहायिका **सुगनचंद जी पुगलिया** का 60 वर्ष की आयु में दिनांक **9 फरवरी 2025** देहावसान हो गया। देव-गुरु-धर्म के प्रति विशेष समर्पित श्रीमती मोहिनी देवी आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति पूर्ण श्रद्धा व आस्था थीं। दानशील, सौम्य व्यवहार एवं उदारता से ओत-प्रोत आपका व्यक्तित्व सहज ही आपके संस्कारों का परिचय प्रस्तुत करता था।

आप द्वारा प्रदत्त संस्कारों की झलक आपकी संतति में प्रत्यक्ष ही परिलक्षित हो रही है। आपने संस्कार, सेवा, दया, करुणा के भावों के साथ अपने परिवार को पल्लवित व पुष्पित कर इनका विशेष महत्त्व समझाया है। चारित्रात्माओं की सेवा को सदैव सर्वोपरि रखते हुए आपने आरुग्गबोहिलाभं में प्रारंभ के कई वर्षों तक निःस्वार्थ भाव से सेवाएँ प्रदान कर वैराग्य भावों की पूर्ण अनुमोदना की। आपने गंगाशहर में समता आध्यात्मिक आरोग्यम् ज्ञानशाला का शुभारंभ धार्मिक उद्देश्य से किया। सौभाग्य से शेखेकाल में यहाँ चारित्रात्माएँ विराजती हैं, जिससे ज्ञान-ध्यान, तप-त्याग का लाभ स्थानीय गुरुभक्तों को सहज ही मिल जाता है।

देहावसान के कुछ दिनों पश्चात् पुगलिया जी के घर एवं समता आध्यात्मिक आरोग्यम् ज्ञानशाला भवन की छत व गाड़ी, जिसमें अंतिम समय में अस्पताल के लिए ले जाया गया, उन पर केसर व चंदन की सुगंध से भरपूर छींटें यत्र-तत्र दिखाई दीं। श्राविका जी की धर्म के प्रति अहोभावना इस घटना का प्रमाण है। परिवारजनों के साथ आस-पड़ोस के लोग तथा ज्ञानशाला के बच्चे व शिक्षक आदि इस घटना के साक्षी बने।

बच्चों को घर-घर जाकर प्रेरणा देना एवं उनको ज्ञान-ध्यान कराना, प्रतिदिन 550 गाथाओं का स्वाध्याय करने का नियम, आगमों के निरंतर अध्ययन के साथ तप-त्याग करना आपके दैनिक क्रियाकलाप में शामिल था। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान, संघ व शासन समर्पित परिवार छोड़कर गई हैं।

:: श्रद्धानवत ::

सुगनचंद पुगलिया (पति), **प्रसन्नचंद, प्रदीपचंद** (देवर), **सुशील, बादल** (जेठूते), **सपना-प्रवीण चोरड़िया, शिल्पा-अखिल गोलछा** (पुत्री-दामाद), **जीया, लहर** (दोहितियाँ), **भाविक, क्यान्न** (दोहिते) एवं **समस्त पुगलिया परिवार, समता आध्यात्मिक आरोग्यम् ज्ञानशाला के बच्चे एवं शिक्षकगण।**

जय गुरु नाना

जय महावीर

राम चमकते भानु समाना

जय गुरु राम

आरोग्यम्

स्वास्थ्य को दो पहला स्थान।
तभी होगा बीमारियों का निदान।।

दिनांक

13 अप्रैल से 20 अप्रैल 2025

आयोजक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

अंतर्गत श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

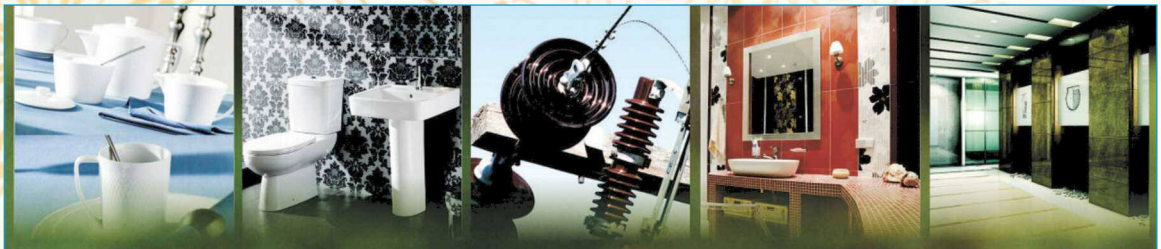

Serving Ceramic Industries Since 1965

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना, राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में कोटिशः वंदन

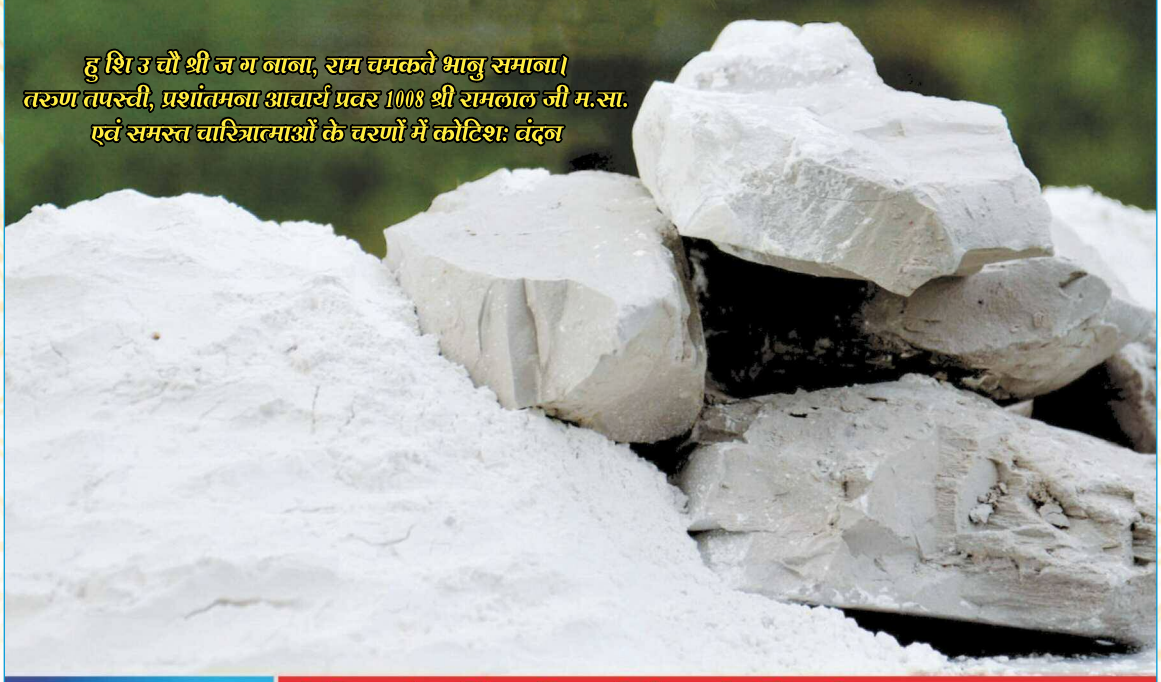

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

SIPANI
RITZY. POETIC. URBANE

YOUR DREAM HOME, A NEW LIFE FOR MANY.

90% OF PROFIT GOES TO CHARITY.

PRESENTING
SIPANI CITY

A 70 ACRE TOWNSHIP - MADAPPANAHALLI VILLAGE, ANEKAL TALUK, BENGALURU.

70 ACRES OF EVERYTHING YOU NEED - HOMES, HEALTHCARE, EDUCATION & MORE!

1 **CLUSTER - 1 HIGH RISE APARTMENT**
Land area
-10 acres 31 guntas

2 **CLUSTER - 2 HIGH RISE APARTMENT**
Land area
14 acres 30 guntas

3 **CLUSTER - 3 HIGH RISE APARTMENT**
Land area
5 acres 10 guntas

4 **CLUSTER - 4 HIGH RISE APARTMENT**
Land area
10 acres 12.2 guntas

5 **CLUSTER - 5 HIGH RISE APARTMENT**
Land area
16 acres 14.37 guntas

6 **06 - EWS HOUSING**
Land area
2 acres 4.77 guntas

7 **COMMERCIAL / OFFICE**
Land area
6 acres 17.63 guntas

8 **SCHOOL - IN CA SITE OF CLUSTERS 4, 5 & 6**
Land area
1 acres 21.20 guntas

9 **PLAYSCHOOL - IN CA SITE OF CLUSTERS 1**
Land area
0.54 acres 21.55 guntas

10 **HOSPITAL - IN CA SITE OF LAND CLUSTERS 2 & 3**
Land area
1 acres

Sipani City - A Township Promoted by Sipani Properties

"An Ode of Humanity..."

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना,
राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में
कोटिशः वंदन!

SIPANI MARBLES

STRONG - STYLISH - SOPHISTICATED

Royal Italian Marbles

AS PER ISI STANDARDS

WWW.SIPANIMARBLES.COM

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401
(राज.) फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

नरेन्द्र गांधी, जावद

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में	1,000/- (15 वर्ष के लिए)
विदेश हेतु	15,000/- (10 वर्ष के लिए)

वाचनालय हेतु (केवल भारत में)

वार्षिक	50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष	(केवल भारत में)	3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No. : 31264126681
IFSC Code : SBIN0003401
Branch : G.S. ROAD, Bikaner
Mob. : 7073311108
E-mail : **accounts@sadhumargi.com**

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक	: 9799061990	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक समाचार	: 8955682153	
साहित्य	: 8209090748	: sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	: 6375633109	: ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	: 7073238777	: yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	: 7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धांत	: 7976519363	
परिवारांजलि	: 7231033008	: anjali@sadhumargi.com
विहार	: 8505053113	: vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	: 9982990507	: pathshala@sadhumargi.com
शिविर	: 7231833008	: udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	: 6265311663	: globalcard@sadhumargi.com
सामाजिक, संघ सदस्यता, सहयोग, समृद्धि, जन सेवा, जीव दया आदि अन्य प्रवृत्तियाँ	: 9602026899	
शैक्षणिक, आध्यात्मिक, धार्मिक, साहित्य संबंधी प्रवृत्तियाँ	: 7231933008	
संघ हेल्पलाइन (WhatsApp only)	: 8535858853	

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए संबंधित विभाग से ही संपर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।
कार्यालय समय – प्रात: 10:00 से सायं 6:30 बजे तक
लंच – दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर देवें। इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप करें।

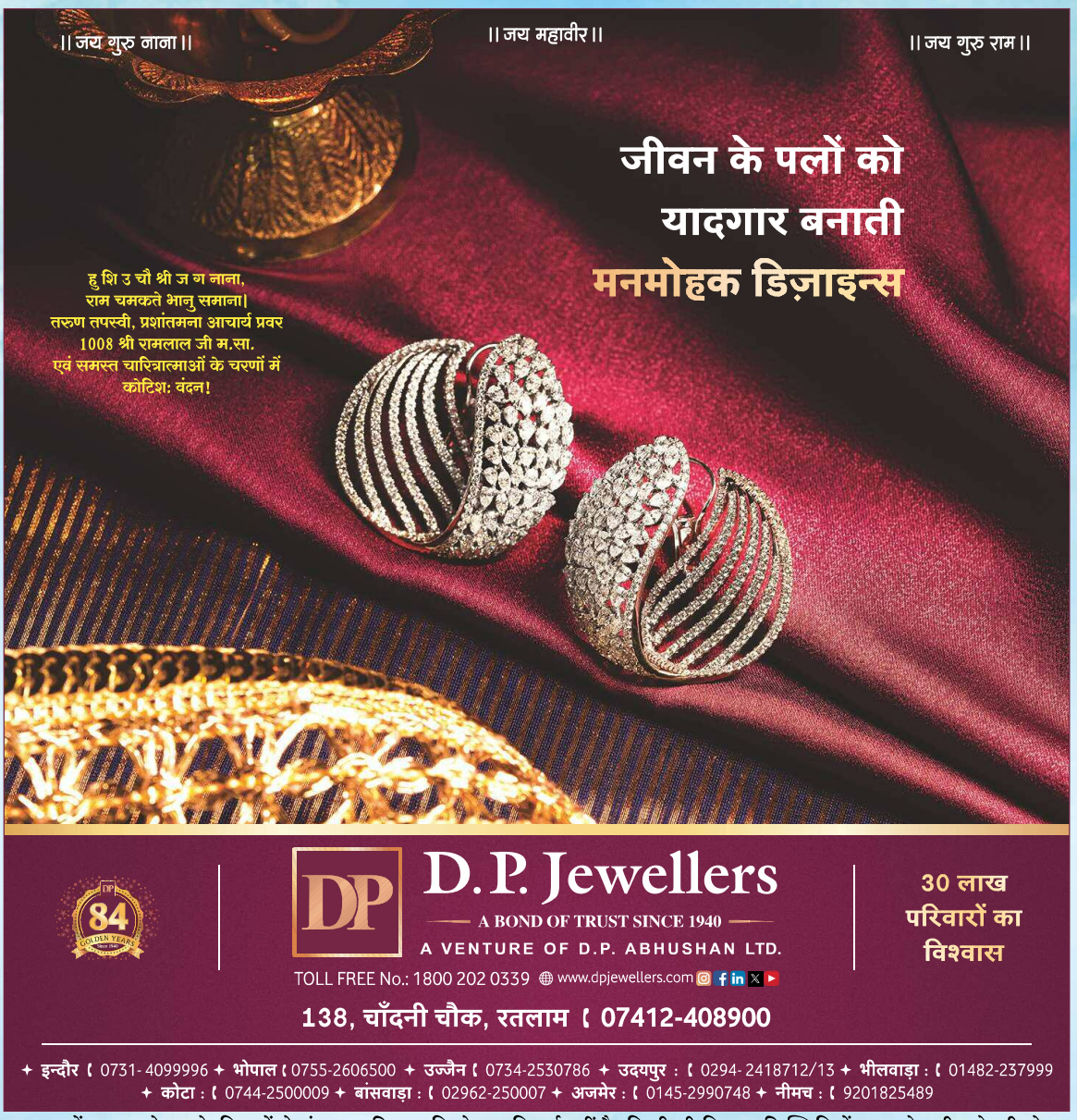

www.facebook.com/HOSadhumargi @absjainsangh

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।
प्रधान संपादक, प्रकाशक, मुद्रक नरेन्द्र गांधी के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 24650
प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.), फोन नं.: 0151-2270261